राम:

॥ श्रीमते रामचरणाय नमः ॥

सत्पुरुषोंके अनुभव वचनामृत

# श्रीपंचरत्नस्तोत्र

प्रकाशित दोन्नूं } साधु नैनूराम रामद्वारा, मु० समदडी मारवाड
साधु नैनूराम रामद्वारा, मु० गुलालवाडी मुंबई



सं० १९९२का मिति
फाल्गुन सु. ५

धी जैन विजयानंद प्री. प्रेस,
सुरत



श्री सद्गुरु चरण कमलेभ्यो नमः

श्रीमते रामचरणाय नमः

# राम राम

श्रीमते दुल्हरामाय नमः श्रीमते मुरलीरामाय नमः






श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नम

## ग्रंथ माहात्म्यम्

सतपुरुषोंका शब्द यह, लीजो हिरदै धार।
पढहि सुनहि जो प्रेमसे, मिलै पदारथ च्यार ॥१॥

योग यज्ञ व्रतदान तप, जो साधन उत्कृष्ट।
सब कर फल सहजै मिलै, सुण याकी इक प्रष्ठ ॥२॥

अज्ञ जीव ज्ञानी बनै, निधन होत धनवंत।
होय अपूत्र सपूत अति, मूढ होत मतिवंत ॥३॥

गोपद इम भवनिधि तरै, लहै भक्तिका थाट।
तातै सज्जन कीजीये, नित नेमसे पाठ ॥४॥

पाठक केरे भवनमें, मंगल होइ अनेक।
दृढ भक्ति कर राखिये, राम नामकी टेक ॥५॥

श्री रामो जयति।

# ✻ भूमिका ✻

विदत हो कि रामस्नेही संप्रदायके मूलाचार्य्य स्वामीजी श्री १०८ श्री रामचरणजी महाराज पूर्ण ब्रह्मरूप वीतराग निर्विकल्प रामभजन परायण जगत जाहर थे।

उन महाप्रभूकी अनुभववाणी सवाछतीस हजार वर्तमान आचार्य्य स्वामीजी श्री १०८ श्री निर्भयरामजी महाराजकी आज्ञानुसार संवत् १९८१ मे छापकै प्रकाशित कीया, किन्तु वै विस्तार रूपमें होनेसें प्रेमी लोगोका वहोत दिनोसे यह आग्रह था की नित नेमके लिये छोटीसी पुस्तक रत्नरूप पठनके लायक हो तो वहोत श्रेष्ठ है, अेसा सबका हार्दिक आग्रह देखकर वर्तमान् आचार्य्य तपोमूर्ति ब्रह्मनिष्ठ सकल शिरोमणी शीलादिगुण संपन्न स्वामीजीश्री निर्भयरामजी महाराजकी आज्ञासें सबके अनुकूल यह (पंचरत्न स्तोत्र) साध नेंनूराम दोनूंने छपाकर प्रकाशित कीया।

पुनः रामस्नेही संप्रदायके नोमे आचार्य्य स्वामीजीश्री हिम्मतरामजी महाराज वेद सास्त्र ज्ञाता पूर्ण विद्वान ओर जीवन मुक्त थे उन महाप्रभुके स्वमुखनिर्मित प्रश्नोत्तरप्रकाश नाम ग्रंथ संवत् १९४६मे प्रकाशित हुवा।

उस प्रश्नोत्तर प्रकाशमे ज्ञानपचीसी जिसमे २५ मनोहर छंद बडेही मनोहर अपूर्व बडे गूढ थे उसकी टीका परोपकार्थ साध केशवरामजी सलाणावालो ने संवत् १९७३मे बनाई वो संवत् १९९०मे दासोंको प्रदानकी सो इस पुस्तकमे सम्मिलित है.

श्रीमान् वीतराग महाप्रभूके शिष्योंकी बाणी दिग्दर्शन मात्र इस ग्रंथमे स्थित है जिसके पठनावलोकनसे मुमुक्षु पुरुषोंको ज्ञात होगा.

सज्जनगण पठन करके अपनी आत्माका कल्याण करे।

प्रकाशित } साधु नैनूराम
दोन्नू }



# श्री पंचरत्न स्तोत्रकी अनुक्रमणिका


| | | पृष्ठांक |
|---|---|---|
| स्वामीजी श्री संतदासजी महाराजकी वाणी | | १ |
| स्वामीजी श्री रामचरणजी महाराजकी वाणी | | ... |
| स्तुतिका कवित | | ६ |
| छंद भुजंगी | | ९ |
| ग्रंथ गुरु महिमा | | १४ |
| ग्रंथ नाम प्रताप | | २१ |
| ग्रंथ शब्द प्रकाश | | ३९ |
| ग्रंथ चिंतावणी | | ४७ |
| ग्रंथ मनखंडन | | ७९ |
| छांटमाशब्द | | ८७ |
| आरती | | ९२ |
| * स्वामीजीश्री | रामजनजी महाराज० | ९४ |
| ,, | दुल्हरामजी महाराज० | १०३ |
| ,, | चत्रदासजी महाराज० | ११० |
| ,, | नराणदासजी महाराज० | ११३ |
| ,, | हरिदासजी महाराज० | ११३ |
| ,, | हीम्मतरामजी महाराज० | ११५ |
| ,, | दिलसुधरामजी महाराज० | १६१ |
| ,, | धर्मदासजी महाराज० | १६१ |
| ,, | दयारामजी महाराज० | १६१ |
| ,, | जगरामदासजी महाराज० | १६१ |
| ,, | निर्भयरामजी महाराजकी जय जय० | |


* रामस्नेही सम्प्रदायके गादीपती वीतराग पुरुषोकी वाणी

| | | |
|---|---|---|
| *स्वामीजीश्री | बलभरामजी महाराज० | १६३ |
| ,, | रामसेवगजी महाराज० | १६३ |
| ,, | रामप्रतापजी महाराज० | १६४ |
| ,, | चेतनदासजी महाराज० | १६७ |
| ,, | कान्हड़दासजी महाराज० | १७० |
| ,, | द्वारकादासजी महाराज० | १७३ |
| ,, | भगवानदासजी महाराज० | १७६ |
| ,, | देवादासजी महाराज० | १७९ |
| ,, | मुरलीरामजी महाराज० | १८३ |
| ,, | तुलछीदासजी महाराज० | १८५ |
| ,, | रामसुखजी महाराज० | १९२ |
| ,, | कान्हड़दासजी महाराज० | १९२ |
| ,, | सुरतरामजी महाराज० | १९५ |
| ,, | नहचलरामजी महाराज० | १९८ |
| ,, | रामनिवासजी महाराज० | १९८ |
| ,, | रामसेवगजी महाराज० | २०१ |
| ,, | विदेहीनरायणदासजी महाराज | २०२ |
| ,, | भाउदासजी महाराज० | २०५ |
| नवलरामजी० | | २०६ |
| श्री निर्भयरामाष्टकम् | | २०७ |
| पद | | २१० |
| ग्रंथ प्रकाशितकी प्रार्थना | | २३३ |

* स्वामीजीश्री १०८ श्री रामचरणजी महाराजके शिष्योंकी वाणी

श्री

रामो

जयंति

श्री रामस्नेही संप्रदायके मूलाचार्य्य
स्वामीजी श्री १०८ श्री रामचरणजी महाराज



ठिः—श्रीरामनिवास शाहापूरा—मेवाड.

Shri V. S. Press, Bombay

राम:

# श्री पंचरत्न स्तोत्र

अथ स्वामीजी श्री संतदासजी महा-
राजकी अनुभव वाणी लिख्यते

॥ साखी ॥ स्तुति ॥

अणभै पद परकासके,
दायक सतगुरु राम ।
अनंत कोटि जन साहिकी,
ताहि करूं परणाम ॥१॥
सतगुरु बड परमारथी,
ऐसी देह बनाय ।
धरीया मुलक छुडाय कर,
अधर मुलक ले जाय ॥२॥

सतगुरु मिलीया संतदास,
कटी भरमकी पास।
जम डर भागा जीवका,
बस्या रामके वास ॥३॥
राम नाम शिभूं शब्द,
ध्यावत है शिव शेश।
संतदास हमकूं दीया,
सतगुरु एह उपदेश ॥४॥
संतदास सतगुरु कहै,
सुणो हमारी सीख।
राम छांडि कर मति भरो,
अगल बगलकूं भीख ॥५॥
संतदास इक शब्द बिच,
जो मन रहे समाय।
तो चौरासी आवै नहीं,
जमका धका न खाय ॥६॥

सास सास बिच संतदास,
राम नाम कर याद ।
अगल बगलकी बारता,
कहण सुणन सब बाद ॥७॥
संतां बताया संतदास,
एक शब्दका जोग ।
अब तो निरभय होइ रह्या,
तोड़ भरमका तोग ॥८॥
राम भजनका संतदास,
जाइरे मोसर जाय ।
मरदा मरदी कहत है,
संत बजाय बजाय ॥९॥
सतपुरुषांकी एकदम,
जेती नाहीं आब ।
नर क्यूं चूके संतदास,
राम भजनका दाव ॥१०॥

राम कह्या नहीं संतदास,
मिनषा देही पाय ।
सो नर चोटा कालकी,
चौरासी बिच खाय ॥११॥
राम राम कहो संतदास.
होय होय हुंशियार ।
काल गजब शिरपर खड़ा,
पड़तां केतिक वार ॥१२॥
मैंहूं मैंहूं होय रह्या.
संतदास जगमांहि ।
मूवां पीछे रोय दे,
और जोर कछु नांहि ॥१३॥
राम कहे तो ऊबरे,
झपट कालकी मांहि ।
संतदास संसारमें,
दूजा दिसै नांहि ॥१४॥

राम शब्द अकाल है,
निसदिन जपिये येह ।
कोई दिन लग संतदास,
जो राखी चाहे देह ॥१५॥

संतदास सतसंगतें
सहजै पलट्या बंस ।
हीर चुगत हरि नामका
भया काग ते हंस ॥१६॥

थोड़ाही जीया खूब है,
जो रु कहे मुख राम ।
राम कहे नही संतदास,
तो बहु जीया किस काम ॥१७॥

इति स्वामीजी श्रीसंतदासजी महाराजकी
वाणी संपूर्ण ॥

राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम

राम:

# अथ स्वामीजी श्री १०८ श्री रामचरणजी महाराजकी अनुभव वाणी लिख्यते ॥

॥ प्रथम स्तुतिका कवित ॥

नमो राम रमतीत नमो गुरुदेव स्वामी। नमो नमो सब सन्त नाम रटि भये जुनामी ॥ जिनके चरणों हेठि रहो नित शीश हमारा। तन मन धन अरु प्राण करूं नवछावर सारा ॥ राम संत गुरुदेव विन नहीं और आधार। रामचरण करजोरिकै वन्दे वारंवार ॥१॥
नमो राम रमतीत सकलव्यापक घणनामी। सब पोखे प्रतिपाल सबनका सेवक स्वामी ॥ करुणामय करतार करम सब दूर निवारे।

भक्त विछलता विरद् भक्त ततकाल उधारै ॥ रामचरण वन्दन करे सब ईशनके ईश । जगपालक तुम जगतगुरु जगजीवन जगदीश ॥२॥ आनंद घनसुख राशि चिदानंद कहिये स्वामी । निरालम्ब निरलेप अकल हरि अन्तर्य्यामी ॥ वारपार मधि नाहिं कूंण बिधि करिये सेवा । नहिं निराकार आकार अजन्मा अविगत देवा । रामचरण वन्दन करै अलह अखण्डित नूर । सूक्ष्म स्थूल खाली नहीं रह्या सकल भरपूर ॥३॥ नमो नमो परब्रह्म नमो नहकेवल राया । नमो अभंग असंग नहीं कहुं गया न आया ॥ नमो अलेप अछेप नहीं कोई कर्म न काया नमो अमाप अथाप नहीं कोइ पार न पाया । शिव सनकादिक शेषलूं रटत न

पावै अन्त। रामचरण वन्दन करे नमो निरंजण कन्त ॥४॥ कृपाराम कलि अवतरे जीवन प्रम दर्शन लहे। जनकराय सम जानलिप्त होवे कहुं नाहीं ॥ ध्रुव राजत वैकुण्ठ यूहीं सब सन्तन माहीं। परमारथ परवीण सम पीपा परमानूं ॥ हरिगाथा अंबरीष रामके प्रीये जानूं। रामचरण वन्दन करै मायामझि अलिप्त रहे ॥ कृपाराम कलि अवतरे जीवन प्रम दर्शन लहे ॥५॥

॥ इति स्तुतिका कवित संपूर्ण ॥

श्री राम गुरुदेवजी महाराजकी जय

राम राम राम राम राम राम राम

राम राम राम राम

* छंद भुजंगी ॥ *

नमो गुरुदेवं कृपा पूर कीन्ही ।
नमो आप स्वामी अभै गति दीन्ही ॥
नमो बीतरागा सुधानाम पागी ।
नमो योगध्यानी समाधिसु लागी ॥
नमो ब्रह्मरूपं अरूपं अलेखम् ॥
नमो आप पारं उतारे अनेकम् ।
कहै रामचरणं नमोजी दयालम् ॥ ॥१॥
कृपा पूर मोपैं करीहै कृपालम्
कृपा पूर मोपैं कृपालं करीहै ।
महा झीन होती दुराशा हरीहै ॥
कियो दिल्लपाकं बिपाकं निवारे ।
दियो राम नामं सबै काम सारे ॥
दिये ज्ञान भक्तीसानिर्वेद साजम् ।
तिहूं लोक भोगं बताये निकाजम् ॥

दियो तोख पोखं बिलोकं दयालम्।
कहै रामचरणं नमामी कृपालम् ॥२॥
बडे दानपत्ती सबै रीती पोखै।
सदा सम्मदृष्टी कहींन बिदोखै॥
कहा रंक रावं गिणै एक भावं।
देवैं चीज रीझं उदारं स्वभावं॥
मानो मेघ धारा नही भूमि देखै।
करै ज्ञान छोलं सदा यूं बिसेखै॥
दयावान दाता बडेही दयालम्।
कहै रामचरणं नमामी कृपालम् ॥३॥
महा कान्ति भारी तपै ज्यूं दिनेशम्।
सदा ज्ञानरूपी बिदेही नरेशम्॥
मानूं शान्ति धीरं बसिष्टं बखानम्।
नही मोह माया न कायाभिमानम्॥
लिया जोग वैराग भक्ती पराहै।

सदा मिष्ट वाचा उचारै गिराहै ॥
कोऊ शरण आवै करै प्रतिपालम् ।
कहै रामचरणं नमामी कृपालम् ॥४॥
महा तेज पुंजं शरीरं बखानम् ।
सवानूर सानंद शोभायमानम् ॥
गुणातीत स्वामी अकामी अलेखम् ।
जनां मध्य आपै गुरुजी बिसेखम् ॥
देवै आप धीरं हरै क्रोध ज्वालम् ।
द्रवै सोम दृष्टी करंते निहालम् ॥
मुखां मधुर हासी बिलासीक ब्रह्मम् ।
दिपै संत गादी अनादी सुधर्मम् ॥
सदा पक्ष साची अजाची अकालम् ।
कहै रामचरणं नमामी कृपालम् ॥५॥
मैंहूं तोर चरणां पर्‍यो नित्य स्वामी ।
तुम्हे सानकूलं भये अंत्रजामी ॥

दई मोहि धीरं अभीरं किये है ।
दोऊ हस्त शीशं दयासैं दिये है ॥
रखै आप शरणा सकरूणा सुणी है ।
उदै भाग्य मेरो भली ये बणी है ॥
किये मुक्त रूपा हनी जग्ग जालम् ।
कहै रामचरणं नमामी कृपालम् ॥६॥
नमो रामरूपं गुरूजी अगाधे ।
तुम्हैं सेव सानन्दसूँ सर्व साधे ॥
ब्रह्मा ईश विष्णादि अवतार धारै ।
सदा एक महिमा गुरूकी उचारै ॥
कहै वेद वेदान्त सिद्धान्त जेता ।
तिपु लोक मध्ये धरे तन्न तेता ॥
निजानन्द ध्यानं गुरुको बखानै ।
कहै रामचरणं यह मन्नमानै ॥७॥
लिपै नांहि काहू फणीं ज्यूं मणीहै ।

इसी रीति तोलं अनंता गिणीहै ॥
सवै घट्ट पूरं मानो ब्योम रूपा ।
निराकार स्वामी अनामी अनूपा ॥
इसे गुरू आपं अमापं अतोलम् ।
नहीं वार पारं अगाधं अडोलम् ॥
गुरू राम धामं महा सुक्खदानी ।
कहै रामचरणं स्तुती बखानी ॥८॥

राम राम राम राम राम राम राम राम






॥ अथ ग्रन्थ गुरुमहिमा लिख्यते ॥

स्तुति ॥ रमतीत राम गुरुदेवजी,
पुनि तिहूं कालके सन्त ।
जिनकुं रामचरणकी,
बन्दन बार अनन्त ॥१॥

दोहा ॥ शीश धरूं गुरु चरणतल,
जिन दिया नाम तत्सार ।
रामचरण अब रैणदिन,
सुमरै बारंबार ॥२॥

चौपाई ॥ प्रथम कीजै गुरुकी सेव ।
तासंग लहै निरंजन देव ॥
गुरुकिरपाबुधि निश्चल भई ।
तृष्णाताप सकल बुझि गई ॥१॥

मैं अज्ञान मतिका अति हीन ।
सतगुरु शब्द भया परवीन ॥
सतगुरु दया भई भरपूर ।
भर्म कर्म सांशो गयो दूर ॥२॥
गुरुकी पूजा तन मन कीजे।
सतगुरु शब्द हृदय धरि लीजे ॥
सतगुरु सम दूजा नहिं कोई।
जासूं तन मन निर्मल होई ॥३॥
सतगुरु बिन सीझया नाहिं कोई।
तीन लोक फिरि देखो जोई ॥
नारद पाया गुरु उपदेश ।
चौरासीका मिट्या कलेश ॥४॥
गुरुविन ज्ञान कहो किन पाया।
वैनसेन कर गुरु समझाया ॥
सतगुरु भक्ति मुक्तिका दाता।

गुरु बिन नुगरा दोजग जाता ॥५॥
गुरु मुख ज्ञान सदा सुख पावै ।
नुगरा नरके सांच न आवै ॥
नुगराका कीजे नहिं संग ।
ज्ञान ध्यानमें पाड़े भंग ॥६॥
सतगुरु साच शील पिछनाया ।
काम क्रोध मद लोभ गुमाया ॥
गुरु किरपा संतोषहि आया ।
तृष्णाताप मिट्या सुख पाया ॥७॥
गुरु गोविंद सूं अधिका होई ।
या सुनि रीस करो मति कोई ॥
प्रथम गुरु सूं भाव बधावै ।
गुरु मिलियां गोविंद कूं पावै ॥८॥
दत्त दिगम्बर गुरु चौबीश ।
सबहीका मत धार्‍या शीश ॥

अपनी अकल आप समझाया ।
मति फुरण कुं गुरु ठहराया ॥९॥
गुणवंता गुण कदे न भूलै।
कृत्यघ्नी दोजगमें झूलै ॥
सुगरा गुरुकी सेन पिछानै ।
नुगरा नर वायक नाहिं मानै ॥१०॥
शुकदेव व्यास गर्भजोगेश ।
गुरु किया जिन जनक नरेश ॥
जन्मत मोह जीति बन गयो ।
तोभी गुरु विन काज न भयो ॥११॥
द्वादश वर्ष गर्भ तप कीन्हो ।
मायासूं मन रतीं न दीन्हो ॥
पिता व्यास जन्मतही त्यागयो ।
नरपति गुरुसूं सांशो भाग्यो ॥१२॥
त्याग विराग मत्तको पूरो ।
इन्द्रिय जीत काछ हढ शूरो ॥

एती लछ अरु गुरुसूं द्रोही ।
तो वाको दर्श करो, मति कोही ॥१३॥
वाकै दर्श बुद्धि सब नाशै ।
ज्ञान हीन अज्ञान प्रकाशै ॥
वासंग गुरुकी अवज्ञा आवै ।
भक्तिहीन होइ नरकां जावै ॥१४॥
गुरु भक्ता गुरु शिरपर राखै ।
गुरुको शब्द कभू नहिं नाखै ॥
वाको संग सदाही कीजे ।
तनमन अर्प राम रस पीजे ॥१५॥
सतगुरु मिल्यां मोक्ष पद पावै ।
अनंत कोटि जन महिमा गावै ॥
भया निरोग जिनां गुरु गाया ।
रोग न गया वैद्य बिसराया ॥१६॥
सब संतांकी साख सुनीजे ।
तो गुरुसूं कपट कदे नहीं कीजे ॥

गुरुको ब्रह्मरूप करि जानै ।
ताकी भक्ति चढै परमानै ॥१७॥
गुरु किरपा नरकी बुधि पाई ।
पशू वृति सब दूर गमाई ॥
आप नमै गुरु दीरघ देखै ।
ता शिखको कृत लागै लेखै ॥१८॥
जो नर गुरुका अवगुण धारै ।
होय मनमुखी गुरु बिसारै ॥
सो नर जन्म जन्म दुख पासी ।
गुरुद्रोही जमद्वारे जासी ॥१९॥
गुरु मनुष्य बुधि जानो मत कोई ।
सतगुरु ब्रह्म बुद्धि सम जोई ॥
सतगुरु सकल कालको काल ।
सिखाँ निवाजन दीन दयाल ॥२०॥

दोहा ॥ सतगुरुकुं मस्तक धरे,
रामभजनसूं प्रीति ।

रामचरण वै प्राणिया,
गया जमारो जीति ॥१॥
साचा सतगुरु सेइये,
तजिये कुड़ा मत्त।
रामचरण साचा मिल्यां,
दर्शेगा निज तत्त ॥२॥
गुरु महिमा सीखै सुनै,
हिर्दै करै विचार।
रामचरण तन शोधले,
सोहि उतरे पार ॥३॥

॥ इति ग्रन्थ गुरुमहिमा सम्पूर्ण ॥

दोहा ॥४॥ चौपाई ॥२०॥ सर्व ॥२४॥
ग्रन्थ ॥१॥ राम राम राम राम
* राम राम राम राम राम *
* राम राम राम *

॥ अथ ग्रन्थ नामप्रताप लिख्यते ॥

स्तुति ॥ रमतीत राम गुरुदेवजी,
पुनि तिहूं कालके सन्त।
जिनकूं रामचरणकी,
बन्दन बार अनन्त ॥१॥

दोहा ॥ महिमा नाम प्रतापकी,
सुनो श्रवण चितलाय।
रामचरण रसना रटो,
तो कर्म सकल झडि जाय ॥१॥
जिन जिन सुमर्‍या नामकूं,
सो सब उतर्‍या पार।
रामचरण जो बीसर्‍या,
सोही जमके द्वार ॥२॥

चौपाई ॥ राम नामकूं जिन जिन ध्यायो।
भवकूं छेद परम पद पायो॥
शिवजी निसदिन राम उचारे।

राम बिना दूजो नही धारे ॥१॥
पार्वतीकुं राम सुनायो ।
राम बिना सब झूठबतायो ॥
सोही राम सुन्यो शुकदेवा ।
गर्भवासमें लाग्यो सेवा ॥२॥
राम सुमर सब मोह निवार्यो ।
मातपिता तज वनहि सिधार्यो॥
रामप्रताप रम्भा गई हारी ।
सुमरत राम कामना मारी ॥३॥
ब्रह्मा पुत्र च्यार सनकादिक ।
राम नामके भये सवादिक ॥
रामप्रताप गर्भ नहिं आवै ।
सुमरत राम परम सुख पावै ॥४॥
राम नाम नारद मुनि गावै ।
हृदय प्रेम अति प्रेह वधावै ॥
शेष रसातल राम पुकारे ।

रसना लिव कबहूँ नहि टारे ॥५॥
उभय सहँस रसना है जाकै ।
राम राम रटना नहि थाकै ॥
नरनारी सुमरै नहि रामा ।
एकही जीभ भई बेकामा ॥६॥
राम नाम ध्रुव ध्यान लगावै ।
बसि वैकुंठ बहुर नहि आवै ॥
राम भजन छूटा सब कर्मा ।
चन्दरु सूर देय परिकर्मा ॥७॥
राम राम प्रह्लाद पुकार्‌यो ।
ताको पिता बहुत पचहार्‌यो ॥
संकट सह्यो पण राम न छांड्यो ।
राम भरोसे मरणोहि मांड्यो ॥८॥
अग्निधार पर्वत सूं राख्यो ।
सिंह सर्प गज परिहरि नाख्यो ॥
अन्धकूपमें राम बचायो ।

जनको जश हरि जग दिखलायो ॥९॥
कोप्यो असुर खड्ग लियो करमें ।
जनके हित प्रगट्यो हरि खंभमें ॥
मार्यो असुर भक्ति विस्तारी ।
जन प्रह्लादकी मीच निवारी ॥१०॥
राम कहै तिनकूं भय नाहीं ।
तीन लोक में कीरति गाही ॥
राम रटत जम जोर न लागै ।
राम रटत सांशो सब भागै ॥११॥
द्विज अजामेल मद मांस अहारी ।
गणिका रति विषया अति भारी ॥
कर्म करत तृप्ति नहीं भयो ।
विषय संग आयु क्षीण है गयो ॥१२॥
अन्त समय जमदूत न घेर्यो ।
राम नारायण सुतके हित टेर्यो ॥
जमदूतन सूं लियो छुडाई ।

अपणो जांण रु करी सहाई ॥१३॥
ऐसो पतित और नहीं कोई ।
राम कह्यां वाकी गति होई ॥
अजाण भज्यौंका एह सहनाँणा ।
तो जान भज्यांका कहा बखाणा ॥१४॥
गणिका एक गरक कर्मनमें ।
हरिकी शंक नहीं कछु मनमें ॥
जाकूं सन्तां सैंन बतायो ।
राम राम कहि कीर पढायो ॥१५॥
सुवा पढावत विषया भूली ।
रामप्रताप सुखसागर झूली ॥
रामप्रताप जुगजुगमें गावै ।
मुरख नर कोई भेद न पावै ॥१६॥
हनूमान अंजनिको पूता ।
रामचन्द्रको कहिये दूता ॥
सो भी रसना राम उचार्यो ।

रामप्रताप कारज सब सार्‌यो ॥१७॥
रामचन्द्र जब लंक सिधाया।
सिन्धु तरणकी करै उपाया॥
विश्वामित्र कहै समझाई।
राम नाम लिख पत्थर तराई ॥१८॥
ए देखो नहकेवल कर्ता।
अवतारांका कारज सर्ता॥
भक्त हेतु अवतारहि धरही।
राम रट्या सब कारज सरही ॥१९॥
वाल्मीकि बहु जीव सताया।
जीव शीवका भेद न पाया॥
संता शब्द मरा कहि भाख्यो।
गहि विश्वास हृदय धरि राख्यो ॥२०॥
तीजे शब्द उलटि भये रामा।
वाल्मीकिका सरिया कामा॥
शतकोटी रामायण गाई।

रामप्रताप असो है भाई ॥२१॥
बहुरि कहूं पँडवांका जिगकी ।
महिमा करी कृष्ण हरिजनकी ॥
रामप्रताप पंचाइण बाज्यो ।
जोग जिज्ञ जप तप सब लाज्यो ॥२२॥
रामप्रताप नीच भयो ऊंचो ।
राम विना ऊंचो कुळ नीचो ॥
रामजनाकी भ्रान्ति न कीजे ।
भ्रान्ति कियां नर नरक पड़ीजे ॥२३॥
गहि गज ग्राह समँदमैं घेर्‍यो ।
राम राम उंचे स्वर टेर्‍यो ॥
रटत राम छुट्या सब फंदा ।
मुक्त भयो तत्काल गयंदा ॥२४॥
फंदमें पड्याँ पशुभी ध्यावे ।
नरगृह बंध्यो सुखी नही पावे ॥
जाकूं कैसैं राम उबारे ।

जन्म जन्म भवसागर डारे ॥२५॥
राजा जनक जज्ञ अति कीन्हो ।
नव जोगेश्वर दर्शन दीन्हो ॥
राजा मनको सांशो बूझै ।
तुमकूं भक्ति भेद सब सूझै ॥२६॥
प्रभू हमकूं देहु बताई ।
तुम बिन मनको भर्म न जाई ॥
और सकल साधन भ्रम नाख्यो ।
सत्य शब्द एक रामहि भाख्यो ॥२७॥
नरप परीक्षित भयो परायण ।
शुकदेवसूं शब्द पिछायण ॥
राम राम दिन सात पढायो ।
तजि नरलोक परमपद पायो ॥२८॥
केता कहूँ कहत नहिं आवै ।
हरि हरिजनको पार न पावै ॥
च्यारि जुगनकी कौन चलावै ।

असंख्य जुगाँ बिच रामहि गावै ॥२९॥
रांका बांका नामदेव दासा ।
जिनकै एक राम विश्वासा ॥
राम बिना दूजो नहिं जाणै ।
जगमें रहै रु उलटी ताणै ॥३०॥
तुलसीपत्र लिख्यो रकारा ।
ता सम ओर नहीं कोई भारा ॥
सबही द्रव्य धर्म भयो हलको ।
राम बिना भोडलको भलको ॥३१॥
भक्ति भानु प्रकटे रामानंद ।
ताकै रहै सदा उर आनंद ॥
द्वादश शिष्य भये बडभागी ।
जिनकी प्रीति रामसूं लागी ॥३२॥
दास कबीरा भये उजागर ।
रामप्रताप भक्तिका आगर ॥
राम राम रट राम समाया ।

बहु जीवनकूं भेद बताया ॥३३॥
कृष्णदास पयहारी कहिये ।
राम बिना दूजो नहिं गहिये ॥
अग्रश्याम जंगी अरु तुरसी ।
देवमुरारि भया बंध कुरसी ॥३४॥
कीता घाटम कूबा केवल ।
राम राम रट भया निकेवल ॥
राम राम रटियो हरिदासा ।
जगत जालसूं भयो उदासा ॥३५॥
ज्ञानी गर्क भया अरु परसा ।
राम सुमर जग जाण्यों निरसा ॥
दादू दास जन्म कुळ नीचै ।
राम रटत पहुंच्यो पद ऊंचै ॥३६॥
नीच ऊंच कुळ भेद विचारै ।
सो तो जन्म आपणों हारै ॥
संतांके कुळ दीसै नाहीं ।

राम राम कह राम समाहीं ॥३७॥
परशुराम खोजी बाजींदा ।
हरीदास जन हरिका बंदा ॥
पहली नीचा कर्म कमाया ।
राम सुमर उज्वल पद पाया ॥३८॥
संतदास कालि भया कबीरा ।
रामभजन रत संत सुधीरा ॥
पर उपकार धरी जिन देहा ।
छके ब्रह्मरस रहै विदेहा ॥३९॥
कृपाराम संतका बाला ।
ज्यूं कबीर घर भया कमाला ॥
दया देश परमारथ पूरा ।
निर्मल चित्त भजनकूं सूरा ॥४०॥
जिनकी किरपा हम निधि पाई ।
राम नामकी कीरति गाई ॥
ऐसो कुंण जो कीरति गावै ।

हरि हरिजनको पार न पावै ॥४१॥
सायर कहो एसो कुंण थागे ।
जितो पियो अपनी तृष भागे ॥
राम संतांका अंत न आवै ।
आप आपकी बुधि सम गावै ॥४२॥
रामप्रताप सुनो अब ऐसो ।
भजतां भयो कहूं सो तैसो ॥
राम रटत गुप्त रस चाखै ।
संत शब्दांमें प्रगट भाखै ॥४३॥
प्रथम रामरसनासूं गावै ।
मनकूं पकड़ एक घर लावै ॥
राखै सुरति शब्दही माहीं ।
शब्द छांड कहुं अन्त न जाहीं ॥४४॥
तब रसना शिर छूटै धारा ।
चलै अखंड नहिं खंडै लगारा ॥
जल पीवनकी श्रद्धा नांही ।

मति यो अमृत दूर होइ जांही ॥४५॥
रस पीवंत क्षुधा सब भागी।
कंठाँ शब्द टगटगी लागी॥
नाड़िनाड़िमें चलै गिलगिली।
सुखधारा अति बहै सिलसिली॥४६॥
मुखसूं कछू न उचरै बैना।
लग्या कपाट खुलै नहीं नैना॥
श्रवणाँ चर्चा सुणैं न कोई।
कंठ ध्यान यह लक्षण होई ॥४७॥
कंठके ध्यान कमकमी जागै।
रोम रोम सीतंग सो लागै॥
हियो गदगदै श्वास न आवै।
नैंणा नीर प्रवाह चलावै ॥४८॥
एक दिवस इक भया तमासा।
कण्ठ हृदा बिच उठ्यो हुलासा॥
ज्यूं पाळाकी दोरण छूटी।

हिरदय सीर सुखम रस ऊठी ॥४९॥
शब्द ब्रह्म हिरदय किया वासा।
ज्यूं रैंण अंधेरी चंद्र प्रकाशा ॥
भर्म कर्म सांशो गयो भागी।
हिरदय ध्वनी अखंड लिव लागी ॥५०॥
कहा कहूं या सुखकी महिमा।
ओर सुख सब दीशे पलमा ॥
हिरदय ध्यान ध्वनी जब होई।
दूजो साधन रहै न कोई ॥५१॥
हिरदासूं लय धरणी गई।
नाभिकमलमें चेतन भई ॥
शब्दगुंजार नाड़ि सब जागै।
रोमरोममें होइ रही रागै ॥५२॥
नैागै नारी मंगल गावै।
तहां मन भँवरा अतिसुख पावै ॥
शीतल भई सबै ही काया।

शब्द ब्रह्मरस अमृत पाया ॥५३॥
अब तो शब्द गगनकूं चढ़िया।
पछिम घाटि होइकै अनुसरिया॥
घाटी बीस मेरुकी छेकी।
इकबीसै गढ गया विशेखी ॥५४॥
पहिली बैठा त्रिकुटी छाजै।
जाकै ऊपर अनहद बाजै॥
त्रिवेणी तट ब्रह्म न्हवाया।
निर्मल होय आगेकूं ध्याया ॥५५॥

दोहा॥ इंगला पिंगला सुषमणा,
मिले त्रिवेणी घाट।
जहां झाझे जल झूलके,
निर्मल होय निराट ॥१॥
अब त्रिवेणी न्हायकै,
कीया गगन प्रवेश।
तीन लोकसूं अलध सुख,

यो कोइ चौथा देश ॥२॥

चौपाई ॥ अब चौथे घर पहुँता जाई ।
जहाँका चहन मैं कहूं सुणाई ॥
घरर घरर अनहद घररावै ।
परमज्योति दामणि झलकावै ॥१॥
सुषमण नीर लूंब झड़िलाई ।
भीजत सुरति गर्क होइ जाई ॥
अर्ध उर्ध जहां कमल प्रकासा ।
सुरति भवँर होइ करत बिलासा ॥२॥
घुरै अखण्ड अनाहद बाजा ।
प्राण पुरुष जहां तख्त बिराजा ॥
झिलिझिलि झिलिझिलि नूर प्रकासै ।
अनंत कोटि रवि प्रकट्या भासै ॥३॥
या तो बात अतोल है भाई ।
मुखसूं कह्या तोल न्है जाई ॥
पवन कहो कैसे गह हाथा ।

ते भरै गगनकी बाथा ॥४॥
पवर्ण कैसो तड़काको।
तो कहा बखानों जाको ॥
क वाक रहे कहत न आवै।
ुच्या होइ सोही भल पावै ॥५॥
॥ अनहद गरजै नभ झरै,
दामिनि ज्योति उजास।
रामचरण सुनि सायराँ,
हंसा करत निवास ॥१॥
ई ॥ सायर तट हंस बैठा जाई।
ायर हंसमें रह्या समाई ॥
ोत पोत भया द्वैत न दर्शै।
त गरक ब्रह्मसुखकूं पर्शै ॥१॥
ह्म पश्यांकी दशा बताऊं।
ाहिरके लक्षण पिछनाऊं ॥
ाके रंक एकही राऊ।

माया सेती करे न भाऊ ॥२॥
जाकै अन्दर ब्रह्मरस बूठा।
सकल विहार होइ गया झूठा ॥
कनक कामनि करै न नेहा।
छक्या ब्रह्मरस रहै विदेहा ॥३॥
जैसे बूंद मिली सायरमें।
कैसे पकड़ सकै कोई करमें ॥
जीव ब्रह्म मिलि भया समाना।
ब्रह्म मिल्यां कर्म करै न आना ॥४॥
दोहा ॥ एहचहन दरश्या विनां.
मति कोई छोडो ध्यान।
रामचरण इक राम बिन.
सबही फोकट ज्ञान ॥१॥
रामचरण भज रामकूं.
ब्रह्मदेशकूं जाय।
जहां जम जराका भय नहीं,

सुखमें रहै समाय ॥२॥
रामचरण कहै रामको,
बडो प्रताप जगमांहि।
अनंत कोटि जिन उधस्या.
भजै सो भर्मै नांहि ॥३॥

॥ इति ग्रन्थ नामप्रताप सम्पूर्ण ॥

दोहा ॥८॥ चौपाई ॥६४॥ सर्व ॥७२॥
ग्रन्थ ॥२॥ * राम राम राम *

अथ ग्रन्थ शब्दप्रकाश लिख्यते ॥

स्तुति॥ रमतीत राम गुरुदेवजी,
पुनि तिहूं कालके सन्त।
जिनकूं रामचरणकी.
वन्दन बार अनन्त ॥१॥

दोहा॥ राम नाम तारक मन्त्र.
सुमरै शंकर शेष॥
रामचरण साचा गुरु.

देवै यो उपदेश ॥१॥
सतगुरु बक्से राम नाम,
शिख धारै विश्वास॥
रामचरण निशदिन रटै,
तो नहचै होय प्रकाश ॥२॥

चौपाई॥ अब सुणियो सब साधु सुजाना।
राम भजनका करूं बखाना॥
प्रथम नाम सतगुरुसूं पाया।
श्रवणां सुनके प्रेह उपजाया ॥१॥
पुन रसनाकी श्रद्धा जागी।
राम रटन निशिवासर लागी॥
दूजी आशा सकल बुहारी।
तब राम नाममें सुरति ठहारी ॥२॥
पद्मासन निश्चल मन कीया।
नासा निरत धारि घर लीया॥
श्वासाउश्वासा धवण लगाई।

आरत करकै विरह जगाई ॥३॥
रसना अग्र खुली इक सीरा।
प्रथम वाको पयसो नीरा ॥
रटतां रटतां भयो मिठास।
हर्ष भयो आयो विश्वास ॥ ॥४॥
केई दिवस रसना रस गटक्यो।
पीछे शब्द कंठमें अटक्यो ॥
कण्ठ स्थान बहुत कठिणाई।
मुखसूं बचन न बोल्यो जाई ॥५॥
खानपान पैं रुचि रहे थोरी।
मारग रुक्यो जाय कह्र वोरी ॥
क्षीण शरीर त्वचा सकुचानी।
नीली नस दीसे झलकानी ॥६॥
पीरो बदन नेतरा लाली।
मुकुर ज्योति ज्यूं दिपै कपाली ॥
चलै कँमकँमी रूं थररावै।

छाती रुँधै श्वास न आवै ॥७॥
एसी विधि विरहनिकी होई ।
विरहि जाणै कै सतगुरु सोई ॥
एक दिवस ऐसी बनि आही।
शब्द सरक गयो हिर्दा माही ॥८॥
परम सुक्ख हिर्दै परकाशा ।
ज्यूं रवि कीनो तमको नाशा ॥
सहजै सुमरण हिरदै होई ।
बाहिर भेद न जानै कोई ॥९॥
सोवत जागत डोरी लागी ।
वन वस्तीकी शंका भागी ॥
रसना जप्या अजप्पा पाया ।
बाहिर साधन सकल बिलाया ॥१०॥
जाग्यो प्रेम नेम रह्यो नांही ।
पांई राम धाम घट मांही ॥
उर अस्थान पाय विश्रामा ।

शब्द किया जाय नाभि मुकामा ॥११॥
नाभिकमलमें शब्द गुंजारै ।
नौसे नारी मंगल उचारै ॥
नाभि होद काया वन पीवै ।
ता रस साधू जुग जुग जीवै ॥१२॥
रोम रोम झणकार झुणंकै ।
जैसे जंतर तांत ठुणंकै ॥
माया अक्षर यहां विलाया ।
ररंकार इक गगन सिधाया ॥१३॥
पश्चिम दिशा मेरुकी घाटी ।
बीसूं गांठि घोरसें फाटी ॥
त्रिकुटी संगम कीया स्नाना ।
जाइ चढ्या चौथे अस्थाना ॥१४॥
जहां निरंजन तख्त विराजै ।
ज्योति प्रकाश अनंत रवि राजै ॥
अनहद नाद गिणत नहिं आवै ।

भांति भांतिकी राग उपावैं ॥१५॥
स्रवे सुषम्णा नीर फुंहारा।
शून्य शिखरका यह विहारा॥
झरै पणंग मोतीसा ढलकै।
जाकी ज्योति अरुणसी भलकै ॥१६॥
सागर जहां विना धर भरिया।
हंसै बास तास मधि करिया॥
सुखमण मोती करै आहारा।
निज हंसाका एही चारा ॥१७॥
शुन सायर हंसांका बासा।
भवसागर सुख भया उदासा॥
दरिया सुखको अंत न आवै।
छीलर काल बाज झपटावै ॥१८॥
सुखसागर मिल सुखपद पाया।
सो शब्दां मैं कह समझाया॥
विन देख्यां परतीत न आवै।

तासूं कैसे भेद बतावै ॥१९॥
अर्ध उर्ध कमला जहां फूल्या ।
भवँररूप होइ हंसा झूल्या ॥
भवँर गुंजार गगन गिरणाया ।
होय मस्त अलि तहाँ लुभाया ॥२०॥
ऐसो पद विरला जन पावै ।
सो भवसागर नाहीं आवै ॥
राम रट्यांका यह प्रकाशा ॥
मिल्या ब्रह्मपद भव भया नाशा ॥२१॥
रामचरण कोई राम रटैगा ।
सो जन एही धाम लहैगा ॥
राम नाम निशिबासर गासी ।
सो नर भवसागर तिरजासी ॥२२॥
राम नाम बिन आन उपाई ।
ज्यूं ढूल्यांका खेल कराई ॥
बालक बेलू मंदिर बणाया ।

तामें बस कूंणै सच पाया ॥२३॥
रामभंजन बिन खाली करणी।
ज्यूं विन बीज सुधारी धरणी ॥
राम बीज साधन हळ हाकै।
तो रामचरण खेती फळ पाकै ॥२४॥

दोहा ॥ वरणि कह्यो संक्षेपसो,
दरिया कैसो पार।
जिन परशी या धामकूं,
सो लीज्यो संत बिचार ॥१॥
रामचरण रट रामनाम,
पाया ब्रह्म बिलास।
ई साधन कोइ लागसी,
जाकै होसी शब्द प्रकास ॥२॥

॥ इति ग्रन्थ शब्दप्रकाश सम्पूर्ण ॥

दोहा ॥४॥ चौपाई ॥२४॥ सर्व ॥२८॥
ग्रन्थ ॥३॥ * राम राम राम राम *

॥ अथ ग्रन्थ चिन्तावणी लिख्यते ॥

स्तुति ॥ रामतीत राम गुरुदेवजी,
पुनि तिहूं कालके संत ।
जिनकूं रामचरणकी,
बंदन बार अनंत ॥१॥

ग्रंथ ॥ दोहा ॥ प्रथम बंदन गुरुदेवकूं,
पुनि अनंत कोटि निज साध ।
कहूं एक चिन्तावणी,
द्यो वाणी विमल अगाध ॥१॥
बंधे स्वाद रस भोगसैं,
इंद्रयां तणै अरत्थ ।
उन जीवनकै चेतबे,
करूं चिन्तावणि ग्रंथ ॥२॥
रामचरण उपदेश हित,
कहूं ग्रंथ विस्तार ।
पस्यो प्राणि भवकूपमें,

सो निकसै अर्थ विचार ॥३॥

चामर छंद ॥ दिवाना चेतर भाई,
तुजि सिर गजब चलि आई।
जराकी फोज अति भारी,
करै तन लूटिकै ख्वारी ॥१॥
सांई बेग अपना ध्याय,
पीछै जरा दाबै आय।
तज संसारका सब धन्ध,
ये तो सही जमका फंद ॥२॥
अब तूं राम रसना गाय,
बीतो जन्म अहळो जाय।
तेरा जन्मकी सुण आदि,
मूरख खोईये नहि बादि ॥३॥
पाई दुलभ मिनखा देह,
अब हरि सुमर लाहा लेह।
गाफिल होय मति भाई,

अवसर बहुरि नहि पाई ॥४॥

दोहा॥ बहुत कष्ट करि पाईयो,
मिनख जन्म अवतार।
ताहि सुफल करि लीजिये,
भजकै सिरजनहार ॥१॥
नरतनकूं सब सुर चहै,
ब्रह्मा करत हुलास।
रामचरण यासूं लहै,
ब्रह्म ज्ञान परकास ॥२॥

चामरछंद॥ परथम पिता कै घट जाय,
द्वितिये मातकै ग्रभ आय
धरियो नीतकै संग तोय,
तामैं बहुत भृष्टा होय ॥१॥
अैसा गर्भका कहुं दुख,
तामैं रती नाही सुख।
आंतां रह्यो तूं लिपटाय,

नांही श्वास लीयो जाय ॥२॥
ऊंधो शीश उर्धै पाव,
जठरा अग्निको वहु ताव।
तामै कृमि चूंट्यां खाय,
जहां तूं रह्यो हरिकूं ध्याय ॥३॥
अब तूं काढि सांई मोहि,
निशिदिन बीसरूं नहि तोहि।
यो दुख बहुत है भारी,
अबमैं शरण हूं थारी ॥४॥
तादिन पिता नांही मांय,
कासूं कहै दुख समझाय।
जादिन नही भाई बंध,
तादिन सगा नहि सनमंध ॥५॥
जादिन एक दीनानाथ,
ता बिन और नाही साथ।
अबकै काढि मोकूं देव,

निशदिन करूंगो हूं सेव ॥६॥
तुजि बिन आंन जाचूं नांहि,
राखूं सुरति तुजही मांहि।
मैंतो बचनको साचो,
मुजपर महर करि बाचो ॥७॥

दोहा॥ गर्भ कोल काठा किया,
जीव दान दे मुज्झ।
आठ पहर चोसठ घड़ी,
सांई सुमरू तुज्झ ॥१॥
आठ पहर सुमरत रहूं,
सांई श्वासै श्वास।
अरज करूं कर जोड़कै,
मेटो राम तरास ॥२॥
रामचरण संकट पड्यां,
जीव करै सब फाद।
रँचेक कबहू सुख लहै,

तो वचन जाय सब बाद ॥३॥

चामर छंद॥ अब तैं जन्म लीयो आय,
तांदिन कष्ट अधिको पाय।
जैसै जंति काढ्यो तार,
तादिन लही पीड़ अपार ॥१॥
माता गई आपो भूल,
निकस्यो रुधिर कै संग झूल।
झेल्यो एक कपड़ा माहि,
अब हरि चित्त आवै नांहि ॥१॥
वधावा बापकै गावै,
कुटुंबी बहुत सुख पावै।
नांन्हो पालकै झूल्यो,
अन्तरगत धणीकूं भूल्यो ॥३॥
वारण वेग आई चाल,
घर घर वंधै बांदर वाल।
वधाई नेवगी पावै,

भलो दिन आजको भावै ॥४॥
भूवा ढुंढले आई,
स्वारथ आपके ध्याई ।
भतीजो गोदिमैं लीन्हो,
हिरदो प्रेम सूंभीनो ॥५॥
फळीहै साख अब म्हारी,
करै छी आश हूंथारी ।
लेस्यूं दूझती झोटी,
शरीरां सबलसी मोटी ॥६॥
ये सब स्वारथी है मित,
अब तैं दियो इनसैं चित्त ।
इनकी गोदिमैं खेलै,
हाथूंहाथ मैं झेलै ॥७॥
पीवै मायको अब क्षीर,
जासूँ पुष्ट होय शरीर ।
जननी देखके जीवै,

नही मन ओर सूं पीवै ॥८॥
चरणां चालबा लागो,
फिरै घर आंगणै भागो।
रमै जाइ बालकां कै साथ,
लकड़ी गेडियो गह हाथ ॥९॥
अब उठ बाप संग चाल्यो,
आपणा किसब मैं घाल्यो।
किया है ब्याहका साजा,
बाजै आंगणै बाजा ॥१०॥
सबमिल कियो असो सूल,
बांध्यो गृह दुखको मूल।
दुलहनि भावती आई,
निशदिन चित्तमैं भाई ॥११॥
दोहा ॥ वर्ष चतुर्दशको भयो,
अब तरुणापाकी बेस।
तरुणी सेती मन बँध्यो,

नही भक्ति परवेस ॥१॥
बालपणो खोयो ख्यालमैं,
तरुण अधेरी बेस।
रामचरण गुरु ज्ञानको,
लगै नही उपदेस ॥२॥
बालक बुधि उपजी नही,
मातापितासूं हेत।
खान पान रुचि पायकै,
हरिसूं भयो अचेत ॥३॥
चामर छंद॥ कीयो नारिसूं अब हेत,
मातापिताकूं दुख देत।
चालै आपणै जोरै,
तरूणी चित्तकूं चोरै ॥१॥
काठो झूलणो भावै,
ढीलो दाय नही आवै।
बांई पागड़ी बांधै,

पला दोइ लटकता कांधै ॥२॥
दुपटो केसस्या कीयो,
पटको कमर कस लीयो।
बनाती मोचड़ी पहरै,
सादी औरकी चहरै ॥३॥
मेल्है धमकि धरणी पाव,
बागां बावड्यां अति चाव।
कसूंबा घोटकै पीवै,
अमल बिन पलक नही जीवै ॥४॥
नारी पारकी ताकै,
नैणां कसरकी झांकै।
ऐसो अंध बेईमान,
कीयो कामना हैरान ॥५॥
छाया निरखतो चालै,
बाचा गर्भकी पालै।
नागरपानसूं अति जोरव,

बीड़ी लियां पावै पोरव ॥६॥
मूंछां अधिक अणियाली,
जुलप्यां सोहती काली।
सूंधा अतरसूं भीनी,
बींदी भाल पर दीनी ॥७॥
हलावै कांनमैं मोती,
गिणै नहि दूबला गोती।
करकी आंगल्यां बींटी, ॥८॥
गळामैं मादळ्या कंठी
न्यारो बापसूं होई,
तिरिया पुरूष रह दोई।
माया सर्व है मेरी, ॥९॥
हवेली खोसल्यूं तेरी
सनेही सासस्या भावै,
कुटुंबी देख दुख पावै।
मातापिताकूं दे गार,

बोलै नही शब्द विचार ॥१०॥
तृष्णा लोभकी अति लाय,
धनकूं फिरै चहु दिश ध्याय।
कामी कुटल मतिको हीण,
मूरख विषयमैं परवीण ॥११॥
हरिको नाम सुमरै नांहि,
इस विध जन्म अहलो जांहि।
बाचा गर्भकी भूल्यो,
सुख संसारकै झूल्यो ॥१२॥
करै नहि नारिकूं न्यारी,
हिरदै वस रही प्यारी।
कोई भक्तिकी भाखै,
तासूं वैर करि राखै ॥१३॥
दोहा॥ राम भक्ति जाणै नही,
कर्मासूं हुसियार।
यह तरुण तन अवस्था,

घन कुदंड नभ भान ॥ ११ ॥ पानी पावक पवन पय गिरि गज नाग नरिन्द ॥ ये हरि इनके मुकट मणि हरि ईश्वर गोविन्द ॥ १२ ॥ ध्रुवनाम-ध्रुव निश्चल ध्रुव जोग पुनि ध्रुवजु ध्रुपद ध्रुवताल ॥ ध्रुव तारे जिम नभ अटल गुनहि जुगुन गोपाल ॥ सुमन नाम-सुमनस सुर सुमनस पहुप सुमनस बहुरि वसन्त ॥ सुमनस ते जिन मन बसे कोमल कमला कन्त ॥१४॥ विटप नाम-विटप अंग पल्लव विटप विटप कहत विस्तार ॥ विटप वृक्ष की डार गहि ठाडे नन्द कुमार ॥ १५ ॥ दान नाम-दान द्विजन को दीजिये गज मद कहिये दान ॥ दान सांवरे लेत बन गोपी प्रेम निदान ॥ १६ ॥ रसनाम-रस नव रस घृत रस अमृत रस षट औरस नीर ॥ सब रसको रस प्रेम रस बस जाकै बलवीर ॥ १७ ॥ स्नेहनाम-तेल सनेह सनेह घृत बहुरि सनेह सनेहु ॥ सो निज चरनन गिरधरन नन्द दास को देहु ॥ १८ ॥

❋ इति अनेकार्थ मंजरी ❋

[illegible]

बोवै काली धार ॥१॥
वर्ष पचीशां पर भयो,
अब ज्वानीका जोर।
सुत कन्यासूं हित कियो,
निजर न आवै ओर ॥२॥

चामर छंद ॥ पचीशां ऊपरै हूवो,
कर्मां हेत पच मूवो।
अपणा गृहको शांसो,
न जांणे भक्तिको आसो ॥१॥
धनकी चातुरी जांणै,
निंदा नामकी ठांणै।
राखै जगतको नातो,
तोड़्यो नामको तांतो ॥२॥
जवांनी जमकी दासी,
लियां कर विषैकी पासी।
किया बसि जीव घेरै घाल,

नहि कोइ सकै जवांनी पाल ॥३॥
मूरख विषयसूं रातो,
फिरै घर धन्धमें तातो।
हरिकी बात नहि भावै,
साधू देख जल जावै ॥४॥
अपणा स्वारथां रूडो,
हरिकी भक्तिसूं कूडो।
करै नहि साधको संगा,
अंतरगत जगतको रंगा ॥५॥
मेरै कबीलो भारी,
मो बिन होय सब ख्वारी।
मैं तो सबनको प्रतिपाल,
भासै नही शिरपर काल ॥६॥
करतां कर्म सब दिन जाय,
सुपनै सुक्ख नांहि पाय।
लियो सब आपणै शिर भार,

॥७॥

कबीलो चलै नांही लार।
झूठो मोह बांधै काहि.
तैरे देखतां सब जाहि।
तेरो बाप कहां भाई, ॥८॥
इस बिध छोड तूं जाई
साचो सारहै इक राम,
ताबिन जगत सब बेकाम।
जोबन पांहणो भाई, ॥९॥
दिन दश देखतां जाई
काचा कलीकासा रंग,
जोबन भक्ति पाड़ै भंग।
बुढापो शीश पर आयो, ॥१०॥
जोबन देख थरायो
सबही लूट लेसी माल,
करसी बुढापो बेहाल।
कुटुंबी कार नहि मानै,

तिरिया शंक नहि आंने ॥११॥

दोहा॥ चालीसांकै ऊपरै,
वृद्ध अवस्था होय।
चिंता चितकूं ग्रास है,
निशदिन बाढै सोय ॥१॥
अमरवेलि ज्यूं वृक्षको,
चूंस लियो सब तंत।
रामचरण यूं जगतको,
लियो कवीलै अंत ॥२॥

चामर छंद॥ अब तो चेतरे अन्धा.
धरकां फेरिया कन्धा।
नारी करै नांही नेह,
सुतका वारणा नित लेह ॥१॥
तनको घट गयो जोरो,
दुनियां सब कहै भोरो।
बेटा बोल मांनै नांहि,

उठै कल्पना मन मांहि ॥२॥
तनकी त्वचा सल पड़िया,
नैंणा नीर अति झरिया।
पलट्या श्यांम सबही केस,
सोतो शुक्ल हूवा भेस ॥३॥
माथो हालणै लागो,
करांको जोर सब भागो।
पगांमैं पड़त है आंटी,
होई गई देहली घाटी, ॥४॥
श्रवणा सुणै नांही बैंण,
सूझै झांतलो सो नैंण।
बाचा ठीक नही बोलै,
मनसा पड़ गई झोलै ॥५॥
मुखमैं दांत नांही डाढ,
देही खड़खड़ सब हाड।
जठरा अग्निभी भागी,

बुढाकी क्षुधा नहि जागी ॥६॥
भोजन स्वाद नहि लागै,
मूरख रोय रोइ त्यागै ।
घरमैं हुकम चालै नाहि,
चुगली खाय पंचां माहि ॥७॥
बेटां कटकड़ी कीन्ही,
खटोली पोळमैं लीन्ही ।
मरभी जाय नहि डाकी,
न जांणा किता दिन बाकी ॥८॥
प्यासां जळ नहीं पावै,
बैठण ढँग नहीं आवै ।
कर है कल्पना भारी,
सबकूं देत है गारी ॥९॥
छोरा हांसि कर भागै,
जिनको डोकरो लागै ।
नहीं कोई साहिको करंता,

इस विध आपदा भरता ॥१०॥
फाटो गुदड़ो दीयो,
भुगते आपणो कीयो ।
धणीकी चूक है भारी,
जासूं भई है ख्वारी ॥११॥
बाचा चूकियो अज्ञान,
कीयो नांहि हरिको ध्यान।
बोल्यो गर्भमांही बोल,
नीसर भूलियो सब कोल ॥१२॥
कुटुंबी आपणा कीया,
बुढापै दूर करि दीया।
झाड़े खाटमैं जावै,
इसा दुख भजन बिन पावै ॥१३॥
अब तो भई पूरण आव.
जमकै दूत घाल्यो घाव ।
आयो सांवठो साथा,

नही दोइ च्यारकी बाता ॥१४॥
आवत देख बिललायो,
भयो जमदूतको भायो ।
बुलावै आपणी नारी,
खरी तूं भावती म्हारी ॥१५॥
बुलावै सैंनसूं पूता,
लियो मोहि पकड़ जमदूता ।
करो कोइ साहि अब म्हांकी,
करी छी बैठमैं थांकी ॥१६॥
दुखमैं निकट नहि आवै,
टल टल दूर होइ जावै ।
उलटी करै सब हांसी,
खड़ो रहो वहुत दुख पासी ॥१७॥
जोबन किया कर्म रु खोट,
ताते सहै जमकी चोट ।
पासी पड़ी गळकै मांहि,

तोभी मोह छाडै नांहि ॥१८॥
जमका दूत ले गया मार,
पहुंच्यो धर्मकै दरबार।
कुटुंबा पाळ्यो आयो,
जिन हरि नाम बिसरायो ॥१९॥
दोहा ॥ पकड़ि दूत जम ले गया,
राख सक्यो नहीं कोय।
रामचरण झूठो जगत,
अंत रह्या सब रोय ॥१॥
चामर छंद ॥ अब तो मर गयो पापी,
राख्यो रैंण मैं छापी।
गामैं डर भयो भारी,
लागै रैंण या खारी ॥१॥
कुटुम्बी कपटसूं रोवै,
हिरदय अधिक सुख होवै।
मिट्यो है आज दुख भारी,

निशदिन काढतो गारी। ॥२॥
राखी रोकि आधी पोळ,
उज्वल करो लीप रु धोळ।
हमारै आज अतिही सुक्ख,
बूढो ले गयो सब दु:ख ॥३॥
याकूं बाळ आवो बीर,
लागी छोत अधिक शरीर।
पीछै नीरमैं न्हाया,
दिवालय होय कर आया ॥४॥

दोहा॥ जीवत एता दुख लख्या,
बिना भज्यां भगवंत।
अब चौरासी जूंणिमैं,
भुगते कष्ट अनंत ॥१॥
कहा कहूं या जगतसूं,
मांनै नही लगार।
सबही देखत जात है,

भजै न सिरजनहार ॥२॥
मुख फेरै हरि भक्तिसूं,
सनमुख रह संसार।
रामचरण वै मानई,
झूलै नरक मझार ॥३॥
चामर छंद ॥ कहूं अब नरकका बहु भेद,
तामैं जीव पावै खेद।
अष्टाबीश कुण्ड भारी,
झूलै अधम नरनारी ॥१॥
थंभा सारका ताता,
तिनसूं भरावै बाथा।
रह्यो तूं नारिसूं लिपटाय,
सो अब थंभ भेटो आय ॥२॥
सरिता रुधिरकी बहु धार,
तामैं बहै जीव अपार।
कांटा सारका शूला,

तापर चालरे भूला ॥३॥
हरिकी राह नहि चाल्यो,
गुरुका शब्दकूं पाल्यो।
तासूं चलो कांटां मांहि,
यो दुख मिटै कबहू नांहि ॥४॥
स्वारथ हेत कीया पाप,
तासूं नरककी बहु ताप।
हिंसा बहुत कीन्ही बीर,
बदळै सहै दुख शरीर ॥५॥
हरिकी सुणी कीरति नांहि,
सीसो ढुळै श्रवणां मांहि।
रसना राम नांहि गायो,
विषहर जीभ लटकायो ॥६॥
हिरदय ध्यान नहि धार्यो,
अन्तर रोग विस्तार्यो।
करसूं कियो सुकृत नांहि,

गोळा दिया हाथां मांहि ॥७॥
कियो नहि साधको दीदार,
निजर्‍यां मेख मारै सार।
दर्शण जात असलाक्यो,
बेलु तप्तिमैं न्हांख्यो ॥८॥
दुख तो बहुत है भाई,
कहां लग कहूं समझाई।
कहतां ओड़ नहि आवै,
दुखको पार नहि पावै ॥९॥
दोहा॥ लख चौरासी भुगततां,
बीत जाय जुग च्यार।
पीछै नरतन पायगा,
तातै राम सँभार ॥१॥
राम राम रसना रटो,
पाळो शील संतोष।
दया भाव क्षम्या गहो,

रह्यो सकल निर्दोष ॥२॥
यो झूठो संसार है,
झूठ कुटुंब को हेत।
झूठे मृग जळ ध्यायकै,
भूल्यो मूढ अचेत ॥३॥

चामर छंद ॥ अबमै देहुं झूठ बताय,
सुणियो प्रीतिसूं चित लाय।
दीसै दृष्टिमै जेता,
ते सब जांहिगे तेता ॥१॥
रहै नहि विष्णु ब्रह्मा महेश,
नही रहै शेष भूनरेश।
रहै नहि धरणि अरु आकास,
जासी मेरु मंड कैलास ॥२॥
नही रह सरित सागर सात,
नही घर सूर शशि कुशलात।
नही रह पवन पांणी बीर,

ये सब अथिर नांही थीर ॥३॥
नही रहै मेघ माला इंद,
खासी काळ कर कर छंद।
नही रहै धर्म धर्मका दूत,
जासी माय माका पूत ॥४॥
उपज्या जाय सबही बीत,
केता कहूं कर कर चीत।
समझै सैंनमैं स्यांणा,
न जांणै अन्ध निज ज्ञाना ॥५॥
कहां शंखासि ब्रह्मा छलन,
कीधो मच्छ होय निर्दलन।
कहां गिरि मेरु कूरम जुथ्यो,
धार्‍यो पीठ सायर मथ्यो ॥६॥
कहां हिरणाक्ष धरणी हरी,
जा हित देह बराह धरी।
मार्‍यो असुर कीन्हो नास,

मेटी धरित्रीकी त्रास ॥७॥
कहां हिरणाक्ष हरिसूं द्रोह,
कीयो पुत्रसूं अति द्रोह।
जब हरि धर्‍यो नरहरि रूप,
राख्यो भक्त मार्‍यो भूप ॥८॥
बलिकै धर्‍यो बावन रूप,
जिगमैं आय जाच्यो भूप।
सो पाताल मेल्ह्यो जाहि,
भूपर निजर आवै नाहि ॥९॥
जोधा एक सहँसर बांह,
नितही चलै छत्तर छांह।
जाको अधिक कहिये जोर,
वा सम दूसरो नहि ओर ॥१०॥
धरियो विप्रको अवतार,
ताकूं मार कीयो ख्वार।
कहारै लंकको राजा,

जाके कनकका छाजा ॥११॥
खाई समंद कंचन कोट.
मार्यो काळ एकै चोट।
लीयो मारकै रघुनाथ,
लंका चली नांही साथ ॥१२॥
रह्यो नहि कंस मथुरा मह्ल.
महलां बैठ करतो ह्ल।
जाकूं कृष्ण लीन्हो मार,
अब मैं कहतहूं पुकार ॥१३॥
सबही गया मारणहार,
धरिया देह सब अवतार।
जासी देव अरु दांणा,
न रहसी रंक अरु रांणा ॥१४॥
हुवा सो कलि गया सबही.
जासी होयगा अबही।
बहता पुरुषसूं कछु नांहि,

रहता धार हिरदामांहि ॥१५॥
रहता राम है रमतीत,
भजिये देहका गुण जीत।
तेरी देहभी थिर नांहि,
विनशै देखता पलमांहि ॥१६॥
यामैं पांच अपरबल जोध,
जाकूं ज्ञान दे परमोध।
नातो तीनसूं मत जोड़,
अब तूं पचीसांसूं तोड़ ॥१७॥
गुरुका ज्ञानकी समसेर,
कीजे सबल बैरी जेर।
इनकूं मारदे भाई,
सुमरो राम सुखदाई ॥१८॥
नही कोइ राम बिन तेरा,
झूठा जगत उर झेरा।
नवांसूं नेह मत राखै,

ये तोहि गर्भमैं नांखै ॥१९॥
बंध्यो वासना के हेत,
तातैं जन्म फिर फिर लेत।
निशिदिन रामकूं गावो,
जामण मरण नहि आवो ॥२०॥
भजनसूं बासना जल जाय,
दूजी नही और उपाय।
अबमैं कहीहै सुणतोहि,
हिरदय धार चेतन होय ॥२१॥
रसना रामकूं रटिये,
सतगुरु शरणही गहिये।
शांसा जीवका सब जाय,
रहसी ब्रह्मपद समाय ॥२२॥
दोहा ॥ यह चिन्तावणि ग्रंथ सुण,
हरिसूं करै सनेह।
रामचरण साची कहै,

फिर धरै न दूजी देह ॥१॥
रामचरण भज रामकूं,
छडि देहादिक परिवार।
झूठा तज रच साचसूं,
तो छूटै जम मार ॥२॥
रामचरण भज रामकूं,
संत कहै समझाय।
सुखसागरकूं छांडकै,
मत छीलर दुख जाय ॥३॥
सोरठा ॥ धरियादिक कळि जाय,
शब्द ब्रह्म नांही कळै।
रामचरण रटताहि,
चौरासीका भय टळै ॥१॥
चौरासीकी मार,
भजन विना छूटै नहीं।
तातैं होई हुंसियार,

यह शीख सतगुरु कही ॥२॥
॥ इति ग्रंथ चिंतावणी संपूर्ण ॥दोहा २५॥
चामर छंद १०० सोरठा २ सर्व १२७॥
ग्रंथ ॥ ४ ॥ * राम राम राम राम *

॥ अथ ग्रंथ मनखंडन लिख्यते ॥

स्तुति ॥ रमतीत राम गुरुदेवजी,
पुनि तिहूं कालके संत।
जिनकूं रामचरणकी,
बंदन बार अनंत ॥१॥

ग्रंथ दोहा ॥ अलख निरंजन बीनऊं,
लागं सतगुरु पाय।
मन खण्डनकी जुक्ति होइ
सो मोहि द्योह बताय ॥१॥
मन तनपर असवार है,
गुंण इन्द्री सब साथ।
फिरै सवादां बस भयो,

क्यूं करि आवै हाथ ॥२॥

चौपाई ॥ सप्त धातु काया अस्थान,
चेतन राजा मन परधान ॥
मनकै तीन अपर्बल जोध ।
तामैं दोय न मांनै बोध ॥१॥
पांच पयादा मनकी लार ।
पुनि पांचां पंचपंच आगार ॥
अपणा अपणा चाहै भोग ।
ज्यूं ज्यूं नगरी बांधै रोग ॥२॥
तब नरपति इक मतो बिचार्‌यो ।
मन खण्डण निज मन विस्तार्‌यो ॥
मनकी चोरी निजमन पावै ।
नरपति आगै सब गुदरावै ॥३॥
नरपतिको निज सदा हजूरी ।
परकृति मन मुख बांधै धूरी ॥
मैं तो हुकम रायको करिहूं ।

तेरी चोरी कागद धरहूं ॥४॥
तेरै भोग राय दुख पावै।
बार बार ग्रभ मांही आवै॥
चाकर चोर धणी नहि सुक्ख।
जन्म मरण संग भुगते दुख ॥५॥
निजमन लागो मनकी लार।
संग न छाडै एक लगार॥
मेरै धणी बिदा कियो मोहि।
चोरी करतां पकडूं तोहि ॥६॥
तेरा पांच पयादा मारूं।
रज तम दोय टूक करि डारूं॥
सात्विककूं मैं लेहूं फेर।
काढूं नगर पचीशूं हेर ॥७॥
जब प्रकृति मन बाग उठावै।
ज्ञान खड़गले निजमन ध्यावै॥
मनवो जाय आकासां भँवै।

निजमन ले करि नीचो दवै ॥८॥
मनवो नीची दिशा बिचारै ।
निजमन पकड़ गगनकी धारै ॥
मनवो करै उठणका दाव।
निजमन काठा रोपै पाव ॥९॥
मनवो सुख भोगांमैं करै।
निजमन उलट अफूठो धरै ॥
विषय बासना मनका भोग।
निजमन इनकूं जांणै रोग ॥१०॥
दोहा॥ सुण परकृति मन निज कहै,
मुज शिर नरपति हाथ ॥
तोहि चरण तल चूर हूं,
पकडूं तेरो साथ ॥१॥
चौपाई ॥ तब मन खाटा मीठा चाहै।
जब निज फीका भोजन खावै ॥
मनवो ऊंचा नेतर न्हाळै।

तब निज चखका पड़दा ढाळै ॥१॥
मनवो नासा चाहै गंध।
निजमन सब देखै दुरगंध ॥
राग रंग श्रवणां कर भावै।
तब निज हरिका गुण सम्भलावै ॥२॥
स्पर्श इन्द्री चाहै भोग।
निजमन गैहै शीळका जोग ॥
करसूं मन सब सवांरै।
निजमन आरंभ सकल निवारै ॥३॥
चंचल होइ चरणांसूं चालै।
निज पँगो होइ कभू न हालै ॥
छादन त्वचा सुहाया मांगै।
निजमन सबही बस्तर त्यागै ॥४॥
तब मन पिलंग पथरणाहेरै।
निज भूपर आसण कर फेरै॥
मनवो बास महलमैं करै।

निजमन आसण चोड़े धरै ॥५॥
मनवो बस्तीसूं मन लावै ।
निजमन लै वनखंडमैं जावै ॥
मनवो शत्रु मित्र दोई भाखै ।
निजमन दोऊ सम कर राखै ॥६॥
मनवो करै मित्रसूं मोह ।
जबही निजमन ठांणै द्रोह ॥
मनवो बैर शत्रुसूं करै ।
तासूं निजमन हित बिस्तरै ॥७॥
मनवो मायाकूं उपजावै ।
निजमन दृढ बैराग उपावै ॥
मनवो सतसंगतिसूं भागै ।
निजमन उलट चौगणो लागै ॥८॥
मनवो रामभजनसूं हारै ।
शिरमैं निजमन मुद्गर मारै ॥
मनकूं आडो आसण भावै ।

निजमन उलट खड़ो ठहरावै ॥९॥
ज्यूं ज्यूं मनवो ओल्हाहैरे।
जहां जहां निजमन जाइ घेरै ॥
कहूं न मनको लागै दाव।
निजम्मनको छाती पर पाव ॥१०॥
निजमन है नरपतिको दास।
परकृति मनको नहीं बिश्वास ॥
जो परकृति मनकै चलै सुभाय।
तो अनंत जूंणिमैं गोता खाय ॥११॥
जीव ब्रह्म निज एको करै।
चंचल मन नहचलमैं धरै ॥
ऐसैं मनकूं खण्डो भाई।
यह शीख सतगुरुसूं पाई ॥१२॥
मन खण्डनका यह उपाव ।
और न कोई दूजा दाव ॥
मनकै मतै कभू नहि चालै।

मनकूं उलट अफूटो पालै ॥१३॥
सब जीवांकूं मन भरमावै।
मनकै संग दुख सुखकूं पावै॥
सतगुरु शब्दां पकड़ै मनकूं।
रामचरण प्रम सुख है जिनकूं ॥१४॥
मनका मास्या जो नर मरै।
लख चौरासी घटवै धरै॥
मनकूं मार मरैगा कोई।
परम धाममैं बासा होई ॥१५॥

दोहा॥ मन खण्डै रामै भजै,
तजै जगत गृह कूप।
रामचरण तव परसिये,
आतम शुद्ध स्वरूप ॥१॥

सोरठा॥ आतमकूं नहि व्याधि,
व्याधि रोग मन मांनिये।

जिन ये तजी उपाधि,
शुद्ध स्वरूप ते जांणिये ॥१॥

॥ इति ग्रंथ मनखंडन संपूर्ण ॥

दोहा ॥४॥ चौपाई ॥२५॥ सोरठा ॥१॥
सर्व ॥३०॥ ग्रंथ ॥५॥ *राम राम राम*

छंद बैताल ॥ आपहो गुरुदेव दिनपति,
अगम ज्ञान प्रकाश हे।
उर नयनके तुम देव बायक,
अज्ञता तम नास हे ॥
जथा निजपद पाईयो.
हम आप किरपा पूरि हे।
नमोजी रिछपाल सतगुरु,
काल कंटक दूरि हे ॥१॥
संग सतगुरु देवजूको,
महा भागी पाय है।
भर्म कर्म जो भ्रम्म संशय,

शोग सारो जाय है ॥
शुद्ध आतम अमल पेखे,
पाय नहचो नामको ।
अहंकृत अज्ञान भागो,
रंग लागो रामको ॥
गुरु निति गुणकार परगट,
दीनकै दयाल ही ।
रामचरण चित चरण लीनो,
कीयो मोह निहालही ॥२॥
सवैया ॥ बिनती राम निरंजन नाथसूं,
हाथ गहो हम तोर रनी है ।
ओर नही तिहूं लोकमे दीसत,
श्याम सदा सुखदानधनी है ॥
तेरै तो प्रभु बडै बड दास है,
मो सै गरीबकी कोन गनी है ।
रामजी बिड़द विचार हो रावलो,

मोसे कछू नही भक्ति बनी है ॥३॥
रामको नाम मुकट मेरै,
सिर ता उपमा बरणी नही जावै।
याहीमें जोग जिगाद तुलावृत,
संजम नेम तपै सब आवै॥
याहीमें तीरथ भेख स्वरूप,
सनातन धर्म यूंही संत गावै।
होय कृपाल दीयो गुरुदेवजी,
रामचरंण सोही मन भावै ॥४॥
ाखी॥ विपत निवारण सुख करण,
उदय ज्ञान परकास।
रामचरण भज रामकूं,
शरण हरण जम त्रास ॥५॥

॥ कुंडल्या ॥

ाम गरीबनवाजका बिड़द गरीबनवाज।
ोन होय सुमरण करै जाकासरहै काज

जाकासरहै काज काळका झगड़ा छूटै
रामनाम लयलाग भरमका भांडा फूटै ॥
रामचरण यह रामनाम जगमें बडी जहाज
राम गरीबनवाजका बिड़द० ॥६॥
रामचरण भजरामकूं बेगा होय सुचेत
झूठो पुद्गल पायकै कर साचांसूं हेत ॥
कर साचांसूं हेत हेत जहां जाय समावै
साचै पद मिल जाय बहुरि झूठो नहि आवै
ढोल वजायां कहत है सतगुरु हेला देत
रामचरण भज रामकूं बेगा होय सुचेत॥७॥
अपणी अपणी वारमें बारी गये बजाय
फिर पाछा आया नही रह्या कुजस जस छाय
रह्या कुजस जस छाय चलै दोन्यूं छिटकाई
काया भोगै जार छार काया मिल जाई
तातै नरतन पायकै कीजै सुजस उपाय
अपणी अपणी वारमें बारी गये बजाय ॥८॥

ाळसा झगडा छू
मरमका भांडा फूटे।
ाम जगमें बडी जह
निड्ड०     ॥१
वेगा होय सुचेत
कर साचांसूं हेत।
उ जहां जाय समा
हुणि झूठो नहि अं
सतगुरु हेला देत
ा होय सुचेता॥
री गये बजाय
वा कुजस जस छा
दोन्यूं छिटकाई
ा मिल जाई
सुजस उपाय



रामचरण ईं देहको ना करीये अ
शीत उष्ण नित भूख तिस दूजा रोग
दूजा रोग अपार तासकी खबर न
भर्‌या खजांने पूर भयां उत्पन
अज्ञानीकूं आवरे ज्ञानी रहे करा
रामचरण ईं देहको ना करीये अहं
दगाबाज संसारको ना करीये इ
मूवा पीछै कहां गयो कोई न पूछै
कोई न पूछै सार आपणा सुखकूं
बिधिबिधि करै बखांण दरध मन जैसे
रामचरण भज रामकूं परखि तर्क ब
दगाबाज संसारको ना करीये इतबार
दोहा ॥ दगाबाज जग जान यह,
सब गाफिलता खोय।
यातै कोई जन उबर्‌या,

तन काचो साचो धर्म,
लीजै लाभ कमाय।
रामभजनसें रामचरण.
सबै धर्म सध जाय ॥१२॥

आरती ॥ ऐसी आरती करो मेरे मन्ना ।
राम न विसरू ऐके छिन्ना ॥टेक॥
देही देवल मुख दरवाजा ।
वणिया अगम त्रिकुटी छाजा ॥१॥
सतगुरु जीकी में बलि जाई ।
निशदिन जिभ्या अखंड लिवलाई ॥२॥
द्वितीय ध्यान हृदै भया बासा ।
परम सुक्ख जहां होय परकासा ॥३॥
तृतीय ध्यान नाभि मध जाई ।
सनमुख भये सेवक जहां सांई ॥४॥
अब जाय पहुंता चोथी धांमा ।
सब साधनका सरीया कांमा ॥५॥

अनहद नाद झालर झणकारा।
परम जोति जहां होय उजियारा ॥६॥
कोई कोई संत जुगति यह जांणी।
जन संतदास मुक्ति भये प्रांणी ॥७॥

आरती ॥ आरती रमता राम तुमारी।
तुमसूं लागी सुरति हमारी ॥टेक॥
रमता राम सकल भरपूरा।
सुक्ष्म थूल तुम्हारा नूरा ॥१॥
आरती सुमरण सेवा कीजै।
सब निर्दोष ज्ञान गह लीजै ॥२॥
येही आरती येही पूजा।
राम विना दर्शों नही दूजा ॥३॥
शिव सनकादिक शेष पुकारै।
यह आरती भवसागर तारै ॥४॥
रामचरण ऐसी आरती ताकै ॥
अष्टसिधि नवनिधि चेरी जाकै ॥५॥




अथ स्वामीजीश्री रामजनजी महाराजकी
वाणी लिख्यते ॥

स्तुतिका कवित ॥ नमो राम सुखधाम,
नमो निर्लेप निरंजन।
नमो गुरु गुणजीति,
नाम दायक दुखभंजन ॥
नमो सन्त मन अन्त,
महापदके अधिकारी ।
त्रिद्धा भेद बषांन जांन,
विपु एक विचारी ॥
रामजन तन मन्नसूं,
करै वंदना सोय ।

आदि अन्त मधि साहकी,
तुम बिन नाही कोय ॥१॥
नमो नमो राम रमतीत हो अजीत आप,
सत्य चिदानंद रूप नित्य निराधार जू।
नमो निज नूर भरपूर प्रमात्महो,
आत्म प्रकास वत्त मन बाणी पार जू॥
अखल अमल अति गतिहु न लखै कोई,
ब्रह्मादिक वेद साध नामही उचारजू।
रामजन वंदन करत कर मेट मोर,
तोर पद तेज पुंज नमो निराकारजू ॥२॥
नमो निराकार निर्लेप सो अछेप आप,
ताप तीन हरन करण मुक्तिको स्वरूपजू।
नमो आदि अन्त मध्य सिद्धि शुभ धाम राम,
अष्टजाम एकरस आतम अनूपजू॥
नमो सुखदाई सो बडाई तुज कून भून,

करूणानिधान मेट महा जग धूपजू ॥
करत प्रणाम सो प्रणाम उर माह धार,
रामजन वंदत सुरेस राम भूपजू ॥३॥

नमो नमो गुरुदेव,
परम पदके परकासी ।
नाम निधि दातार,
हरन त्रयगुनकी पासी ॥
नित्य मुक्ति निआस,
विलासीक ब्रह्म स्वरूपा ।
तन छबि शोभा सरस,
दर्शते सुक्ख अनूपा ॥
अम्मर ध्यान मनमें रहो,
रामचरण महाराजको ।
रामजन वंदन करै,
धन्य दिहाड़ो आजको ॥४॥

॥ इति स्तुतिका कवित संपूर्ण ॥

साखी ॥ सतगुरु राम दयाल जन,
घन आनंद सुखकार।
तिनकूं वंदन रामजन।
करिहूं नित निरधार ॥१॥

॥ मनहर छंद ॥

दिलावर देश मानू नगर भीलैड़ो जानू,
वहां भये रामानुज यहां रामचरणजू।
कह्यो जिन शब्द भेद ऊंचे चल निर्वेद,
जेतै इक धारै कान आये निज शरणजू॥
केतै अबधूत भये केतै धार कंथा रहै,
बहोत जिज्ञासी मँन शुद्धके करणजू।
भक्त भूप भये आप रामसो करावै जाप,
रामजन बंदे ताहि मेटै भ्रम मरणजू॥२॥
रामनाम धन दीयो गुरु उपकार कीयो,
पीयो तव रस पूर ज्ञानको उजासजू।
जोग जिज्ञ तप भ्रम तीरथ वरत कर्म,

इनकी मिटाय खेद बेद जाल नासजू ॥
आपहै हमाय रूप छांह्या तर मिटै धूप,
सान्ति शील सुख अति समता प्रकासजू ।
रामजन शर्ण पस्यो अनंत कलेस हस्यो,
सतगुरु शीश गाजै मेहूं निजदासजू ॥३॥
सतगुरु दाता ज्ञान मेटत अज्ञान आन,
ध्यानकी जुगति सारी रीतिसूं बतायहै ।
आसण संजम देत करै शब्द पोख हेत,
कृपावंत होय सब कामना मिटायहै ॥
न्हकामी अंग करै कषायसो परहरै,
धरै ध्यान रामनाम अष्टजाम गायहै ।
तातै करै प्रीतिगुरु नित शुद्ध धार उर,
रामजन मनमाह मनगति पायहै ॥४॥
सवैया ॥ राम निरंजन हो दुखभंजन,
वीनती एक सुनोजू हमारी ।
आप अनाथ अनाथकै नाथहो,

राखहो रामजी साथ तुम्हारी ॥
ये भवसागर भार घणु दुख,
नाहि रती सुख जांन सहारी।
रामहीजन फराद करै,
यह जीव अधँमको राम उधारी ॥५॥
मैं अधमाधम धर्म न जानत,
मानत मोह मनी मन भारी ।
काम कुबुधि कळा घट खोटकी,
चोट सदा चित रत बिकारी ॥
लोभ कळा घटमे पर पूरन,
नीचहूं ओपमा लायक सारी ।
अेसीही लछ कह रामजन सो,
पार उतारहो आप मुरारी ॥६॥
घोर भयानक काळ महा यह,
जासमें पुण्यको लेसहू नाही ।
धर्म जितै विपरीति विचारत,

लोक सबै मिल क्रम समाही ॥
यह बीनति करुणानिधिसूं निति,
गति हमार किसी बिधि आही ।
रामहीजन भजो अब रामकूं,
रामकृपा कर साह कराही ॥७॥

साखी ॥ सतगुरु मूरत ब्रह्मकी,
जगमे प्रगटे आय ।
रामचरण महाराजकै,
रामजन लग पाय ॥८॥
मुलक जहां मेवाड़ है,
पुर भीलैड़ो जान ।
रामचरण परगट भये,
पूरण ब्रह्म परमान ॥९॥
भयो सनातन देश सब,
आप कियो परवेस ।
रामचरण गुरुदेवजी,

दीयो नाम उपदेश ॥१०॥
रामचरणजी प्रगटे,
राम नाम दातार।
तापद लगिये रामजन,
गुरु उतारै पार ॥११॥
सतगुरु पार उतारहै,
रामचरण परमान।
रामजन मन दोमिलैं,
चलै न जमको पाण ॥१२॥
जपै रामजन रामकूं,
सतगुरुकूं शिरनाय
वह बचावै बिघनसूं,
सघन सुख उपजाय ॥१३॥
मेरी बहु बिधि बीनती,
सुणजो सतगुरु राम।

रामजन निरधारको.

आप सुधारो काम ॥१४॥

आरती ॥ आरती तेरी अंतरजामी,

पूरण ब्रह्म राम घणनामी ॥टेक॥

कारण सबको करुणा सागर।

ध्यावै ताहि मिटै दुख आगर ॥१॥

होय सुख्यारी थारी शरणा।

करुणा कर मेटो मम मरणा ॥२॥

कीर्ति रसना राम उचारूं।

एक पतिव्रत उरमे धारूं ॥३॥

अनंत लोक ब्रह्मांड अनंता।

तुमरो वार पार नही अंता ॥४॥

असे स्वामी राम हमारे।

राम जनकूं पार उतारे ॥५॥

* राम राम राम राम राम *




अथ स्वामीजीश्री दुल्हैरामजी महाराजकी
वाणी लिख्यते ॥

॥ स्तुतिका मनहर छंद ॥

राम रमै सर्वमाहि वंदनमे करुं ताहि,
द्वितीय गुरु राम रूप नहचै यह जानहै।
भूत भवष्य ब्रतमान संत सबेहै प्रमान,
नामकै लिहारी जन रामही समानहै ॥
तनमन वार फेर वंदन कर बेर बेर,
जनांकी कृपासूं मिट जाय च्यारूं खानहै ।
राम गुरु संत विना कहू सुख नाहि छिना,
तातै दुल्हैराम तूं तो शीश तेरै आनहै ॥१॥
नमो अरूपी राम नमो आतमपति स्वामी।

नमो आप अलिपत्त अजनमा बहुघणनामी॥
नमो पराकै पार निगम नित करै उचारं।
लघु दीरघ सब ठाम रहे भरपूर पसारं ॥
सदा सदो दत झलहले अवर्ण वर्ण न
जासकै। नमो राम परब्रह्मकूं, रहो दुल्है
उर दासकै ॥२॥ नमो अकल घन रूप,
अरूपं परम दयालम्। नमो भक्त साहिक,
दीनपर करो कृपालम्। गो गोचरके पार,
आप निज इच्छाचारी। नमो राम अद्वैत,
सदा तुम आनंदकारी॥ नित एकै रस
हो सदा, चेतन ब्रह्म अपारजू। वंदन
नित प्रति करत है, दुल्हैराम निरधारजू॥३॥
नमोजी अमापराम पार कूंन लहै तोर,
मोर बुद्धि तुछ उनमान कहा आनहै।
कोऊन लहत पार वेद कहै निराधार,

ह्मा शिव शेष सनकादिकजु बखान है।
केते मुनि ऋषि सिधि साधिक नोनाथ ओर
ंत जन वहु केते तेहू भज जान है ॥
ामो निराधार नाथ अभै अविचल ताते,
ारणागत दुल्हेकूं रावरो पिछान है ॥४॥
ुरुकी गम अगम निगम पार लहै नाहि,
ुखसे क्या कहै गुरु अवगत अवतार है।
ुणातत्व पार निज चेतन है निराधार,
ेज पुंज तन कलि जीवन हितकार है॥
ूरति शोभायमान रोम रोम करै ध्यान,
ह्मादिक देवनकूं दुर्लभ दीदार है।
ऐसे गुरु स्वामी महाराज रामचरणजी है,
दुल्हे कर दर्स धन्य भाग्यही हमार है ॥५॥

॥ इति स्तुतिका कवित संपूर्ण ॥

ाखी ॥ अखंड राम गुरु संत जन,
मंगलमय सुख धाम ।

शीश नाय करजोड़ नित,
कर दुल्है परणाम ॥१॥
रामचरण गुरु रामहै,
मन बच क्रम जीव जान।
दुल्हैराम ताकी शरण,
सुध स्वरूप उर आन ॥२॥
सुध स्वरूप गुरु रामहै,
रेमन रख इक तार।
दुल्हैराम ताकी शरण,
नही काळकी मार ॥३॥
काळ हरण गुरु चरणहै,
हम देख्या कलि माहि।
दुल्हैराम ताकी शरण,
सब भ्रम गये विलाय ॥४॥
वीतराग मंन जीतजू,
निस्प्रेही निःकाम।

दुल्हैराम हम देखिया,
रामचरण गुरु राम ॥५॥
दुल्हैराम निष्काम जन,
कांना सुण्या अनेक।
कलिजुगमें दरसे प्रगट,
रामचरणजी एक ॥६॥
काज कीया बहु जीवका,
कलूमाहि धर देह ।
रामचरण महाराजकी,
दुल्है पद रज लेह ॥७॥
रामचरणका चरणहै,
तेज पुंजका सोय ।
परसत पदरज तन्नजु,
सब अघ दूरा होय ॥८॥
सूरज ज्यूं परकासवत,
सीतल चंद समान ।

अघतम ताप निवारकै,
सुमरावै भगवान ॥९॥
रामचरण कलिजुगमे,
आय लीयो अवतार।
किते जीव पावन भये,
कर दुल्है दीदार ॥१०॥
राम नामकी नावहै,
केंवट सतगुरु जन।
दुल्हैराम भवपार होय,
उर धर रामचरंन ॥११॥
चैनरूप गुरुदेवहै,
तनमन भेट कराय।
दुल्हैराम तब ना रहै,
उरमे एक कषाय ॥१२॥
रसना रस अमृत झरे,
रटतां रामहि राम,

दुल्है राम गुरु महर सूं,

तृप्ति पांचू ठाम ॥१३॥

आरती ॥ आरती राम चिदानंद तेरी।

सचराचरमे व्याप रहेरी ॥टेक॥

रूपन रेख वरणसे न्यारा।

ऐसा स्वामी राम हमारा ॥१॥

पूर्व रसना रटण लगाई ।

भरम करम सब गया विलाई ॥२॥

द्वितीय प्रेम उर उदै कराई।

पी अमृत मन मगन रहाई ॥३॥

गया द्वंद निर्द्वंद घर पाया।

अगम चहन गति शब्द लखाया ॥४॥

भया आनंद गुरु गमसें भाई।

दुल्हैराम यह आरती गाई ॥५॥

❋ राम राम राम राम राम ❋




अथ स्वामीजीश्री चत्रदासजी महाराजका
कवित लिख्यते ॥

नमो अरूपाराम रूप तब दृष्टि न आवे।
परा दृष्टि परब्रह्म अगम ते अगम बतावे॥
नमो गुरु साहृष्ट दृष्टि दृष्टा दिखलावे।
वेदपुराण कहे सन्त दरस विन मनन गहावे॥
कारज कारण एकहै कारणसे कारज फुरै।
ब्रह्म गुरु जन भिन नही,
ताहि चत्रदास वंदन करै ॥१॥
नमो नमो निज कंत संत सर्वज्ञ बतावे।
अजसनकादिक शेष संत शिव पार न आवे।
नमोनमो कहे निगम अगम गमहो घणंनामी

सूखम थूल भरपूर पूर परमातम स्वामी ॥
अष्टादस वरण न कियो सो अगोचर होसही
रमता राम स्वरूप लख ताहि,
चत्रदास वंदन कही ॥२॥
नमो आप करतार करम क्रियासें न्यारा।
महावाक्यकूं सोध नमो वेदान्ती सारा ॥
ध्याता ध्यानरु ध्येय ज्ञेय ज्ञाताज विचारें ।
त्रिपुटी कारण आप जाप जप संत उचारे ॥
माया ब्रह्म विभागद्वय ररो ममो उरधर लियो
निराकार आकारकों,
चत्रदास वंदन कियो ॥३॥

॥ मनहर छंद ॥

नमो नमो राम रमतीतहो अरूप आप,
जाप जप जापकसो आप रूप पायहै ।
नमो अज अविनासी पर पूरण प्रकाशी

अखंड अचल चल रूप न गहायहै ॥
सतचित आनंद अक्रिय ब्रह्म कहतहै,
सहीहै स्वरूप नही ध्यानमें गहायहै।
सोहि निजरूप गुरुदेवजी वताय दियो,
चन्नदास उरमाह वंदन करायहै ॥४॥

॥ कवित ॥

राम शब्द अद्वैत द्वैत भ्रम भंजन स्वामी।
महरवान महाराज राजभव त्यारग नामी ॥
चरणसरण दुखहरण करण पतितनकूं पावन
रहीसपरमहाराज राजमम लाजनिभावन
नही सहारो ओर दोराजिन शरणे जाही।
जीवनं हित वपु साज काज भव पाज बंधाही
षटवरण षटपदासिरै ताहि
नाम लेत कलिमल नसै ।
वो रामचरणजी मोर गुरु
सो चन्नदासके उर बसै ॥५॥

अरेल ॥ सतचित आनंद ब्रह्म राम भरपूरहै
त्रिय अवस्था रहित गुरु सा नूरहै ॥
त्रिगुण पास बंध नाह चत्रदास अन्नूपहै ।
परिहां करवंदन विधदास एक त्रियरूपहै ।१।

---

साखी ॥ अज अकृय आनंद नित,
गुरु संत तदरूप ।
नराणदास वंदन करै,
लख त्रिय एक स्वरूप ॥१॥

---

प्रणपति पूरण ब्रह्मकूं,
गुरु संत सिरमोड़ ।
कर वंदन हरिदास तिन,
शीश नाय करजोड़ ॥१॥
विघन हरण मंगल करण,
गुरु ब्रह्म सिर मोर ।

अनन्त कोटि रक्षा करो,
में शरणागत तोर ॥२॥
गुरुकी निरखी सुरत जब,
हरकी सरखी देख ।
परखी मन परतीत कर,
सरकी कुमति कुरेख ॥३॥
सोहि जिज्ञासी जानिये,
दर्शणको नित नेम ।
सुमरणमे श्रद्धा बधै,
दिन दिन अधिको प्रेम ॥४॥
सतगुरु कहत चितायकै,
गाय रामगुण गीत ।
हाय भाय करतां सदा,
जाय जमारो बीत ॥५॥

※ राम राम राम राम राम ※




॥अथ स्वामीजीश्री हिम्मतरामजी महाराज-
कृत ज्ञानपचीसी सटीक लिख्यते ॥

टीका करताका मंगलाचरण ॥दोहा॥

वंदंच रामगुरु संतको, गणप गौरी हरध्याय
ज्ञानपचीसीको अरथ,कहूं सकल शिरनाय
ममगुरु हिम्मतरामकृत, ज्ञानपचीसी सार
ताको अर्थ यथामति, केशव कहै विचार ॥

। ग्रंथकर्ताका आशिर्वादात्मक मंगलाचरण।

॥ श्लोक ॥

संकरारा दुचा नाहा,रामाराधन तत्परा:
तेषां कृपा प्रसादेन, कुशलं मे भविष्यति*

---

*हिंदी धर्दा जनियें ते–सर्वे चतुर्दशोति च ।
आचार्या ब्रह्मरुपासे–सन्तु जन्मनि जन्मनि ॥१॥

दोहा ॥ नित्य निरंजन रामजी,
सतगुरु संत समाज ।
हिम्मत हिरदै धारिकै,
करो सकल शुभ काज ॥४॥

टीका ॥ जोकी नित्य मायारहित राम है तिनको व सतगुरु ओर संतसमाजकूं हृदयमे धारिकै सकल शुभ काज करो, या प्रकार स्वामीजीश्री हिम्मतरामजी महाराज आज्ञा करते है । सिवाय

तैति २ । १ । १ । ॐ सह नाववतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥५॥

प्रथम मंगलाचरण करिकै फिर श्रद्धासे कोई शुभ काज करो, जल्दी सिद्धि होगा, गीतायाम्—श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्—

सोरठा ॥ हिम्मत किम्मत होय,
बिन हिम्मत किम्मत नही ।
करैं न आदर कोय,
रद कागद जिमि जानिये ॥६॥

दोहा ॥ हिम्मत रखीये हर्ष कर,
राम गुरु धर शीश ।
दास भाव दिलमें दुरस,
सरस मिलै जगदीश ॥७॥

चौपाई ॥ जो इच्छा करिहो मनमांही,
राम कृपा कछु दुर्लभ नांही । ॥८॥

॥ साधु प्रशंसा मनोहर छंद ॥

मू० आगम ज्यूं देत छाया निगम बतावै पंथ
संत उपकारी ब्रतधारी शुद्ध रूपहै ।

टीका ॥ स्वामीजीश्री आज्ञा करते है कि आगम नाम बृक्ष जैसे धूपसे तपे हुये मनुष्यको छाया देकर शान्ति करता है तेसेही सन्त तो बृक्षरूपहै तीन ताप धूपके समानहै, जो कोई मनुष्य सन्तकी संगति करताहै ताकी तीन ताप समन कर देताहै। पुनः निगम नाम वेद–वेदका पंथ यानै मार्ग बताने वालेहै–अैसे परोपकारी बृतधारी ओर शुद्धरूप सन्तहै—

मू० रामके समीप मोह मायासूं प्रतीप सदा
कदाही न बोलै कूट आनंदस्वरूपहै ॥

टीका ॥ स्वामीजीश्री आज्ञा करतेहै कि सन्त रामजीके निकट हजूरी रूपहै मोहो मायासे सदा प्रतीप नाम न्यारेहै, ओर कूट नाम झूठ कभी नही बोलतेहै ओर सन्त आनंदके स्वरूपहै—

मू० कोक नंद योनीके प्रपंचमें न लिपै रंच
जपै राम जाप भयो अचल अनूपहै ॥

टीका ॥ स्वामीजीश्री आज्ञा करतेहै कि कोकनंद योनी नाम ब्रह्माकाहै सो ब्रह्माका प्रपंचमे रंच नाम जराभरभी सन्त लिपै नही, ओर राम नामका जाप जपताहै, अचल नाम चलायमान नही, अनूप नाम उपमारहित भया—

मू० कर्णत्राण पंचसाख गुरुको सदाही रहै
कहै मुख राम नाम ऐसो भक्त भूपहै ॥१॥

टीका ॥ स्वामी० कि कर्णत्राण नाम शिरकाहै पंच-साग्व नाम हाथकाहै सो सन्त अपनै शिरपर गुरूका हस्तकमल रग्वके मुखसें रामनाम लेताहै

सो असो भक्त भक्तोंमे शिरोमणी सन्त भूपके समानहै— ॥१॥

मू० मुदिदिर कादंबिनी ज्यों अधिक अवाज जाकी दलमी ज्यों दारिद्रकूं दूरि करि डास्योहै

टीका॥ स्वामी० कि मुदिदिर कादंबिनी नाम बादलकी घटा ज्यों अधिक गर्जना करताहै ओर दलमी नाम इन्द्र पांनीकी वर्षा करिके दारिद्रकों दूर कर देताहै तैसेही गुरु आमनारूपी बादलकी ओटमें इन्द्रके समान सन्त वेदरूपी गहरी गर्जनाकर ज्ञानरूपी जळकी वर्षा करके अज्ञानरूपी दारिद्रको दूर करि देता एसा सन्तहै—

मू० पंचभद्र अत्याकार सुखको आगार सदा ज्ञानकरि आपनो कुटुम्ब सब तास्योहै ॥

टीका ॥ स्वामी० कि पंचभद्र नाम कुव्यसन ताको अत्याकार नाम त्याग करके सुखका आगार नाम स्थान सदाही होता भया ओर तत्वज्ञान करिकै अपना सकल कुटुम्बको उद्धार करदीयोहै।

मू० रुचीवंत रामको निवास सुखधाम बीच श्रेणपाप पंथसूं सुपंथकूं सुधारयोहै ॥

टीका ॥ स्वामी० कि जिसको सन्त दिलमें देखते है सो वो राम केसेहै कि वो ईश्वर असंगीहै ताके सिपाईरूपा सन्त सूरबीर बडे जंगीहै ओर नाना प्रकारके विकारोंसे वर्जितहै अरु पंचतीरी नाम कामके मान मारनेवालेहै—निर्विकारी जो राम ताको ध्यान करते हुवे सकल विकारोंसे रहित होयके कामको जीतेहै ॥३॥

मू० वीश्वर प्रचंडवेग पंथको चलैवो संग मेरुको हलैवो व्योमपत्री पद पैवोसो ॥

टीका ॥ स्वामी० कि विश्वर नाम गरुड़ ताकी समानभी कोई चाल सक्तेहै, पुनः व्योमपत्री नाम पक्षीकेभी खोज कोई निकाल सक्तेहै परन्तु कामका जीतना वड़ा कठिनहै ॥

मू० जातवेद ज्वालामें बहैवो सुखपैवो सार धारा सहलैवो परावाक भेदहैवोसो ॥

टीका ॥ स्वामी० कि जातवेद नाम अग्निकी ज्वालामेंभी कोई पेठके सुख पाय सक्तेहै ओर सारधारा नाम खड़गधारा यानै रणधारामें जायकरके अपने अंगोपे सस्त्रोके घावभी सह लेतेहै, ओर

परावाक नाम परावांणीकेभी सकल भेद ले सक्के है परन्तु कामका जीतना असम्भवहे–इतनाही नही, जो नही काम होय सके सोभी होय सक्ते है, परन्तु कामकों जीतना बडा दुस्करहै ॥

**मू० अङ्गसे अनङ्गको हटैवो परापार जैबो भार वज्रपातको निघात सहलैवोसो ॥**

टीका ॥ स्वामी० कि अंग नाम सरीरसे अनङ्ग नाम आकासकोंभी कोई दूर कर सक्ते है, परा नाम माय्राकाभी छेह ले सक्ते है, पुनः वज्रपात नाम वज्रके गिरनेके भारको अपने अंगपर सह सक्के है परन्तु कामको जीतना बडा कठिन है—

**मू० खैवो कालकूटको कृतान्तको खिजैवो धरा अवसान जैबो यूं मनोजको जितै वोसो ॥४॥**

टीका ॥ स्वामी० कि कोई पुरुष कालकूट नाम जहरभी खायके जार जातेहै ओर कृतान्त नाम यमराजकोभी कोई खिजाय सक्तेहै, धरा नाम जमीनकाभी कोई अन्त ले सक्तेहै, इत्यादि उपर

लिखा हुवा असम्भव कामकोंभी करले, परन्तु मनोज नाम कामका जीतना बडा दुस्करहै, ऐसा दुस्कर काम कोई विरला महात्मा सन्तजन वस करतेहै ॥४॥

**मू० सांई ज्ञानजलसूं सवाईप्रीति रामजीसूं अंकपाली धर्मसूं निशंक भयो कालसूं।**

टीका ॥ स्वामी० किसांईनाम मीनकाहै ओर ज्ञान नाम निश्चयका–जैसे मीननिश्चय करिके प्रीति जलसे रखतीहै जिनसे सिवाई प्रीति सन्त रामजीसे रखतेहै ओर अँकपाली नाम मिले हुवे धर्मसूं वो कालसूं निसंक होते भये, सिवाय जेसे मीन नीर विना प्राण त्यागै ऐसेही सन्त रामनामसे अंतरपरे प्राण त्याग देतेहै—

**मू० अभ्यादान ध्यानको प्रध्वंस भो व्यवाय जाको थाको मनकूटसूं बिछूटो जगजालसूं**

टीका ॥ स्वामी० कि पुनः सन्त केसेहैकि अभ्यादान नाम आरंभ एक ध्यानकोहै और व्यवाय नाम विघ्नको प्रध्वंस करि कूट नाम मिथ्या मनके वेग हटायके जगत जालसे संत छूट गये अर्थात् मुक्त भयेहै ॥

मू० भयो क्रोधज्यानि अधहानि गुण
जाकी राढाहै महान न्यारो ह्वैगयो कुच

टीका ॥ स्वामी० की ज्यानि नाम लोप
क्रोध जिनोने ओर अघनाम पापकी हानि
गुणकी खान सन्त होते भये, ओर र
सोभाकी संत मानो धांमहै ओर कुचालसे

मू. सत्रागुरुरामसूं उदासी सुनासी
पायो बीर नाम ज्ञानी संतन्हके हाल

टीका ॥ स्वामी० कि संत कैसेहै कि
सत्रानाम मिले हुवेहै ओर सुनासीर ना
की धामसूं उदासी होकर संतनके हाल
योंते अति ज्ञानी बीर नाम पावते भयेहै

मू० कर्णत्राण कटै तो हटै न हरिभ
खेती रामनामकी खुलासा करै

टीका ॥ स्वामी० कि पुन सन्त केसेहै
त्राण नाम शिर अपना कटै तो कटो प
खेती संत पीछे हटै नही, ओर खुलासा

मू०शिघनीकी शंकसूं निशंक पाप पंथ त्याग
दाग धोय दिलका अनाग रहै आवसूं ॥

टीका ॥ स्वामी० कि पुनः सन्त केसेहेकि शिघनी नाम नाककी शंकसू निशंक होय के पापरूपी पंथको त्यागकरके दिलके कपटरूपी दाग धोयके अनाग नाम निस्पाप होते भयेहै—

मू० बर्नीपकरीतेको सदाही परीत्याग कीयो
लियो लाभ सीतक मिटायो निज दावसूं।

टीका ॥ स्वामी० कि वर्नीपकरी नाम याचनाको संत सदाही परित्याग कियेहै ओर नरदेह पायांको लाभ लेकर निजदावसें अपना सीतक नाम आलस्यरूप शत्रुकूं दूर कियेहै, ऐसे सन्त धन्यहै—

मू० सोमसिन्धु बामाको बिलास उपहास
लिख्यो राख्यो निज आतमा उधास्यो
ज्ञान नावसूं ॥६॥

टीका॥ स्वामी० कि पुन सन्त केसेहै कि सोमसिन्धु नाम विष्णु ताकी बामा नाम लक्ष्मीका विलासकूं उपहांसी समान लखतेहै, ओर ज्ञानी-

रूपी नौकासें अपनी आतमाका उद्धार करते भये है ॥६॥

मू० ज्ञानस्वायतेई पूरि शितोदर सखा जैसे आवत न छेह नेह कीयो रामनामसूं ॥

टीका ॥ स्वामी० कि ज्ञानस्वायतेई नाम ज्ञानरूपी धनमें शितोदर सखानाम कुबेरके समान राम-धनमें पूरन है, छेह धनको नहीहै ओर रामनामसे जाके अति स्नेहहै—

मू० परको पवित्र सदा करत कुलीनस ज्यूं भवको कलंक त्यागो अनुकूल श्यामसूं ॥

टीका ॥ स्वामी० कि पुनः सन्त कैसेहै कि पर आतमाको सदा पवित्र करतेहै, ओर कुलीनस नाम जल जैसे मेल काटतेहै अैसे सन्त भवकलंक-रूपी मेल त्यागतेहै ओर इष्टकी तरफ अनूकुल नाम सन्मुख होतेहै ॥

मू० प्रतिघ घटायो सुखपायो अनन्याज त्याग्यो जाग्यो ज्ञानपंथमें हठायो मनदामसूं

टीका ॥ स्वामी० कि प्रतिघ नाम क्रोध ताकों

मिटायकै सन्त गुरूमुखी होते भयेहै ओर अन-न्याज नाम काम ताको त्याग करिके ज्ञानरूपी पंथमे चालतेहै ओर दाम नाम धन ताकी तरफसे मनको रोकेहै ॥

**मू० लोभपति रोधकको कीयोहै निरोध सुधबोध विसवासते उदास भयो भामसूं।७।**

टीका॥ स्वामी० कि लोभपति नाम मन रोधक नाम चोर–मनरूपी चौरको निरोध करकै अरु सुध-बोधकें विसवासले भामते उदास भयेहै अर्थात् त्याग दईहै ऐसे सन्त धन्यहै ॥७॥

**मू० कटी कर्म्मपासी मार्‍यो मोहसो मेवासी भई ऋद्धि सिद्धि दासी शुद्धि ब्रह्म सावकासीहै ॥**

टीका॥ स्वामी० कि देखो सन्तकी महिमा कैसी है कि सन्त कर्मरूपी पासीको काटके मोहोरूपी मेवासी नाम राजाहै ताको मार्‍योहै ऐसे सन्तकी रिद्धि सिद्धि सो दासीहै ओर उस सन्तकै अंतरमें शुद्ध ब्रह्मका सावकाश नाम प्रकास होते भयेहै।

मू० आनंद उपासी अज्ञ निद्राको बिनाशी बीर धीरज धरासी जाकी सांतिता सुधासीहै

टीका ॥ स्वामी० कि आनंद स्वरुप मांनो ब्रह्महै ताकै संत उपासीहै ओर अज्ञानरूपी निद्राको विषेस नास करिकै बडे बीरहै ओर धीरजवान धरा तुल्य है पुनः शान्तिपन केसेहै मांनो सुधासमानहै ॥

मू० असत प्रपंच जासी थिरना रहासी तासूं भयोहै उदासी पायो सुख अविनासीहै ॥

टीका ॥ स्वामी० कि असत् प्रपंच थिर नहीहै जासे सन्त उदासी होयके ओर अविनाशी ब्रह्म थिरहै जामे चित्तकी ब्रती लगायकर सुख पावते भयेहै ॥

मू० दैसिख कृपासी दिव्यज्योतिकी उजासी व्योम सविता प्रभासी जाकी कीरति प्रकाशीहै ॥८॥

टीका ॥ स्वामी० कि उपदेश दाता गुरुकी कृपासे दिव्य जोतिको प्रकास हिरदेमें होता भया वा जोति कैसीहै कि व्यौम विषेस बीता नाम सूर्यकी प्रभा

दमकतीहै तैसे सन्तका हृदयमें ब्रह्मकी महिमाका प्रकास होते भयेहै ॥८॥

मू० अनादिअखंड वेद शास्त्रहू प्रणीत रीत
मेट्यो कालभीत पायो शुद्धरूप श्यामको ॥

टीका ॥ स्वामी० कि वो ब्रह्म अनादी और अखंड है जिनका वेद वा षट् शास्त्र गुण गावैहै ता ब्रह्मका मिलापसे कालका भयकूं सन्त मेटकरके शुद्ध ब्रह्म-रूप ताकूं प्राप्ति होते भयेहै ॥

मू० सन्तमनभायो वयवितायो वयुन बीच
मेट्यो जगकीच गुण गायो रामनामको ॥

टीका ॥ स्वामी० कि पुनः संत ऐसेहेकि सब संताके मन भायेहै क्योंकि वयुन नाम ज्ञानकाहै सो अपनी वय संपूर्ण ज्ञानमे व्यतीत करीहै ओर जगतरूपी कीचको मेटकै अष्टयाम राम नामका गुण गावतेहै ॥

मू०तज्यो धनधाम चित्त भयो उपराम आयो
अधिक आराम गयो मोह वाम दामको ॥

॥ अर्थ स्पष्टम् ॥

मू० जायो जगदीशको सुहायो सब देवसभा
गायो निगमागम बतायो सुखधामको ॥९॥

टीका ॥ स्वामी० कि यो जीव जगदीशको जायो याने अंशहै सो बीचमे अज्ञानरूपी मैल हो गयोहै सो पीछो जीव सीवरूप शुद्ध होतो भयो तब सब देवसभाके मन भावतो भयोहै ओर निगमागम सुखधामरूप सन्तको बतायके गाये है। अर्थात् राम समान संतहै ॥९॥

## ॥ चिन्तावणीको अंग ॥

मू० लब्धवरण लालची लवार भये लोभलीन
जरा भीरु जोरसें जबाब नही देसके ॥

टीका ॥ स्वामी० कि लब्धवरण नाम पण्डितजोहै सो लालची ओर लवार हो गयेहै वो लोभमे लीन होय रहेहै ओर जराभीरु नाम कामके जोरसे अन्धा हो गयेहै ओर कोई पूछे तो जबावभी नही दे सकतेहै ॥

मू० कामनी कटाक्षकै कलाक लंक शंक रंक
भयो तिरयंकना उर्ध्वगामी ह्वैसके ॥

टीका ॥ स्वामी० कि कामनीका लंक नाम वक्र कटाक्षते कलाकनाम घंटाभरभी संकरहित नही होय करिकै सदा रंकनाम दीनताईसे फिरतेहै ओर तिरयंक नाम अधोगामी तो हो सक्तेहै परन्तु उर्धगामी नही हो सक्तेहै ॥

मू. दैसिक दयालुकी दयालुतासे रहै दूर भयो
रजपूर ना समाधि सुख लैसके ॥

टीका ॥ स्वामी० कि दैसक नाम उपदेशक जो गुरु दयालहै ताकी दयालुतासे दूर रहतेहै ओर पापकर्ममे पूरण होयके समाधिमे जो ब्रह्म सुखहै ताको ले नही सक्तेहै ॥

मू० ऐसो मंद मानव मरोड़ मद मोह लीन
त्याग गुण तीनयूं प्रवीण तान पेसके॥१०॥

टीका ॥ स्वामी० कि देखो ऐसो मन्द पण्डित मानव उत्तम जन्म पायकै मरोड़ ओर मोहमे लीन होयकर तीनगुणाको त्यागे विनां यूं प्रवीणता या बुद्धिमता नही पातेहै ॥१०॥

मू० जाके गूढ पंथमें प्रगाढको नवार पार
सालूर ज्यूं वकै शठ करे अति सोरहै

टीका ॥ स्वामी० कि गूढ नाम मनकाहै प्रगाढ नाम दुःखकाहै जो नर मनके मारगमे चलतेहै ताकों दुःख अत्यंत मिलतेहै जाको वारापार नहीहै सालूर नाम मेंडककाहै जैसे दर्दुर बकतेहै तैसे विना विचार अतिसोरते बोलतेहै ॥

मू० अन्यथा व्यापाद करि जीवसूं जनावै जोर
आस्रव अनेक जामें ज्ञान बिन घोरहै ॥

टीका ॥ स्वामी० कि अन्यथा नाम वृथा व्यापाद नाम द्रोह सो वृथाही द्रोह करिके जीवांसे जोर जनातेहै ओर आस्रव नाम दोष सो द्रोहमें अनेक दोषहै विना ज्ञान द्रोह घोर नरकरूपहै ॥

मू० चंडरूप तत्त्वसूं प्रचंड पाप पूर कूर वाम
दाम भावनामें सदा जाकी दोरहै ॥

टीका ॥ स्वामी० कि चंड नाम क्रोध तत्त्वनाम स्वभाव क्रोधरूप स्वभावसे प्रचंड पापोमे पूरणहै ओर कूर नाम झूटा सदा झूठ बोलतेहै वामदामकी भावनामे अति जाकी दोर यानी सदा दोरतेहै ॥

मू० मेचक स्वरुप मूढ मायामें मदोर मत्त
तत्त्वसूं बिमुख होय नाचै जिम मोरहै॥११॥

टीका ॥ स्वामी० कि मेचक नाम स्याम सो स्यामता जाका हिरदैमेहै ओर मायामे मदोर मत हुवै मूढ ज्ञानरूपी तत्वसूं विमुख होयके कामनी आगै जैसे मोर नाचेहै तेसे आप नाचतेहै ॥११॥

मू०नीचनकी आशकरि बुद्धिको विनाशकरि
व्यास करि पाशको निराश भयो नेमसूं ॥

टीका ॥ स्वामि० कि देखो सब आश त्यागकर नीचदेवकी आशा करतेहै ओर आत्मबुद्धिको नाश करकै व्यास नाम विस्तारसों पापोंका विस्तार करते है ओर नेमयाने भागसे निराश होते भयेहै ॥

मू०भयो अपसव्य भव्यरीति जाको रोढ करि
कीट ज्यों कुरीति साधि गयो रस प्रेमसूं ॥

टीका ॥ स्वामी० कि अपसव्य नाम विमुख भव्य नाम मुमुक्षु सो मुमुक्षुकी रीती जोहै, जासूं बिमुख है अर्थात् रीतिकों रोढ नाम उल्लंघन करि कीट ज्यों याने पांवर ज्यूं कुरीति साधकर प्रेमरससे गयो यानै प्रेमभावसे रहित भयेहै ॥

मू० अकड़ अभागी लोभ लाय उर लागी
अति वामा अनुरागी मूढ हेतु कियो हेमसूं ॥

टीका ॥ स्वामी॰ कि अकड़ नाम अधम ओर
ाभागीके लोभरूपी लाय उरमे लग रहीहै ओर
ामा मे जाको अति अनुरागहै, ऐसो मूढ हेमसे
ाति हेत कियेहै ॥

ू॰ ज्ञान अपवारण निवारण निरंजणसूं
अंजनसूं प्रीति रीति चूको पद खेमसूं॥१२॥

टीका ॥ स्वामी॰ कि ज्ञान अपवारण नाम रोकि
र–जो निरंजन रामहै तासूं निवारण याने नेह
ाजके अंजण जो मायाहै जासे प्रीति रीति जोड़कै
ेमपद जो कुशल ब्रह्मपद तासूं चूके यानै सुख-
हित भयेहै ॥१२॥

ू. रोढ भयो रामके गुणानुबाद सुनिवेकूं
ढ भयो सज्जनकी संगति सुरीतिसूं ॥

टीका ॥ स्वामी॰ कि रामके गुणानुवाद सुनवेकूं
न नही लगतेहै, सो श्रवण रोढ नाम बहराहै
ोर सज्जनोकी संगतिसूं ओर रीतिसूं अलग रहते
 यानै टेढा रहतेहै ॥

ू. आमीहै हरामी हरिनामसूं हरामखोर
ोर भयो चाकरीको बुद्धि विपरीतसूं ॥

टीका ॥ स्वामी० कि जो नर आमी नाम रोगी यानै सर्व रोगको स्थानहै ओर हरीनामसूं हरामी नाम विमुख भयेहै–सो नर हरामखोरहै वो चाकरीको चोर है तिनसे वाकी बुद्धिभी विपरीत होती भईहै ॥

मू. कटासत घटा लटा पटा जगजाल बीच छीन भई छटा मूढ मिटा कालभीतसूं ॥

टीका ॥ स्वामी० कि कटा नाम हास्य घटा नाम शोभा सो शोभामें संतांकी हास्य करतेहै। और आप जगजाल राग वीच लटापटा हो रहाहै ओर छीन भईहै छटा नाम सोभा जा नरकी मूढ कालका भयसे मिटा यानै निर्भय हो रहेहै ॥

मू. अक्षदेवी अन्याइ चपलताइ पूरि आइ पाइ हार हूर कूर दूर भयो नीतसूं ॥१३॥

टीका ॥ स्वामी० कि पुनः कैसाहै नरकि अक्षदेवी नाम जुवारी ओर अन्याई चपलताईमें पुरणहै ओर हार हूर नाम मदरा पानकरके झूठा नर नीतसूं दूर बैठेहै ॥१३॥

मू० सापराय भासन प्रकाश ज्ञान क्षीरकंठ चीत मोह मूढ यूं प्रमाद उर छायोहै ॥

टीका ॥ स्वामी० कि महा मतिमंद यानै सावराय नाम परलोक विगरनेका भास याने भान नही है ओर ज्ञानका प्रकाश रहित होयकै क्षीरकंठ नाम बालबुद्धि जीव हो रहेहै ओर चित्तमें मोहोमुढता छाई हुईहै यूंही उरमे प्रमादभी छाय रहेहै ॥

मू० लोकके विहारको विचार जाके उरमाहि नाहि अेसो मान हम सोन जग जायोहै ॥

टीका ॥ स्वामी० कि लोक विव्हार करनेको जाकै उरमे विचारभी नहीहै ओर उरमाहि ऐसो मानहै कि हम समान जगतमे कोई जन्मभी पाये नहीहै ॥

मू० ताते बार बार समवर्ती कै विवसहोय रोय दुःख भोय खोय पुन्य सुभ्र पायोहै ॥

टीका ॥ स्वामी० कि अैसो मान करनेसे बार बार समवर्ती नाम–यमराजके विवस होयकै रोयकर दुःख भोगतेहै–ओर अपना शुभ पुन्यको खोयकर सुभ्रनाम नरकमे जातेहै ॥

मू० यमकठ साखा निज मुख आरुणेय प्रति
ऐसो उपदेश जो दिनेस पूत गायेहै ॥१४॥

टीका ॥ स्वामी० कि यह यमकठ साखा नाम वेद साखामे आरुणेय नाम नचकेता-प्रति निज मुखसें दिनेस पूत नाम यमराज ऐसे उपदेश गायेहै- प्रमाण-यजुर्वेदीय कठ-१-२-६ यमराज वचन-

न साम्परायः प्रतिभाति बालं
प्रमाद्यन्तं वित्त मोहेन मूढम् ।
अयं लोको नास्ति पर इति मानी
पुनः पुनर्वशमा पद्यते मे ॥९॥ ॥१४॥

मू० नासतीन भाती दृढ मिथ्याभी निवेस
जाके क्रोड़ामे कुबासना जगीहै बहु कालकी ।

टीका ॥ स्वामी० कि नास्तीक जीवहै कि-जाकै हृदयमे आस्तीकपणाको भान होवै नहीहै-ओर मिथ्यामे दृढ अभिमान वेशहै सो क्रोड़ा नाम- छातीमे कुबासना बहुकालकी जग रहीहै ॥

मू० कालखंड कंपत कलाप करै क्रोध बश
प्रतिसीरा लागीहै प्रचंड मोह जालकी ॥

टीका ॥ स्वामी० कि कालखंड नाम कालसें खंड खंडके जीव कंप रहेहै परंतू यह जीव क्रोध बस होय करके कल्पना करतेहै ओर प्रतिसीरा नाम कनात मोहोजालकी प्रचंड उरमे लग रहीहै–जिनसे कालका भय नही सूझतेहै ॥

मू० पापको प्रचार पुन्य पंथको लगार नाही माहि लगी ज्वाल कलाकेलिं विकरालकी ॥

टीका ॥ स्वामी० कि हृदयमे पापका प्रचार होय रहेहै ओर पुन्यका पंथको लेश नहीहै ओर काम-केलि माहि बिकराल ज्वाला उरमे जग रहीहै ॥

मू० पंचजन संचर गुमायो मिथ्या जग बीच बनी वात गई अैसें लालची लबारकी ।१५।

टीका ॥ स्वामी० कि पंचजन्य नाम मनुष्यदेहमे संचार करिके मिथ्या जगबीच लाभकों गुमाय दिये है ओर अैसे लालची लबारकी बनी हुई वात गई यानै मनुष्य देहका नफा हार गयेहै ॥१५॥

मू० पंचमो अन्यथा सिद्धि सारमेय समोशठ दासेर ज्यूं बहे भार सार नहीं पायोहै ॥

टीका ॥ स्वामी० कि देखो नरदेह पायकर पंचमो अन्यथा सिद्धि नाम खर–ओर सारयेय नाम कुत्ता खर–कुत्ता समान नरदेह जानकर दासेर नाम ऊंट ज्यों भार वहकर वृथा नरदेह खोय दईहै–कछु सारांशभी पाये नहीहै ॥

मू० छागरथ लागीउर लोभकी कराल जाकै
थाकै नाही धंधमें अज्ञान ऐसो छायोहै ॥

टीका ॥ स्वामी० कि छागरथ नाम–लाय–उर लोभकी लग रहीहै निशवासुर धंधामे जाकी अति दोरहै–ऐसे अज्ञान हियेमे छाय रहेहै ॥

मू० दीसतको दूतयों कपूत कूरापाती भूत
सूत नही स्यामसूं अहेशको सो जायोहै ॥

टीका ॥ स्वामी० कि दीसने मात्र तो दूत नाम सपूत दीसेहै परन्तु कपूत कुरापाती भूतके तुल्य अति चंचलहै ओर श्याम नाम रामसे सूत याने नेह नहीहै ओर अहेश नाम सूर्य–सो सूर्यको पुत्र शनिश्चरके तुल्य अति दुःख दाता वो मन्दहै ॥

मू. बकै मुखआन निजगुणको न भान जाकै
भाखे नहि रामयों कुगीत नित्य गायोहै१६

टीका ॥ स्वामी० कि देखो अपने मुखसे आन वकै याने ओरका अवगुण कहतेहै ओर निज अवगुण गुणको भान नहीहै–जाके–ओर कभी राम नामको गातै नहीहै वो कुगीत नित्य गातेहै ॥१६॥

मू .कुकवि कलंकी कामी कुटिल कुबुद्धि कूर मंद जाकी कविता कलंक हूते छाईहै ॥

टीका ॥ स्वामी० कि जो कविराम गुण नहि गातै है सो वो कवी नहीहै वो कुकविहै--असें कलंकी कामी कुटिलहै ओर कुबुद्धिवालेहै–वो कूर याने झूठे मन्द जाकी कविता कलंक हूते मानो छाय रहीहै ॥

मू० पुन्य सुन्य पातकी प्रलापी सापी दीन दापी कुजापी कुपूत कित कुमति बढाईहै ॥

टीका ॥ स्वामी० कि पुनः केसेहै कवि की पुन्यसे सुन्य पातिकिहै–वृथा कलाप प्रलाप करे सापसे हीन दसा दबे हुये कुजाप करने वाले–कपूत कित् नाम–सुखसें रहित कुल कुमति वढानेवालेहै–ऐसे पंडित ईश्वरको छोडकर राजोंको याचतेहै ॥

मू० बन्ध्यासूनु ससके विषाणके समान भूप होके तद्रूप ताकी कीर्ति लमाईहै ॥

टीका ॥ स्वामी॰ कि ओर कलिकै राजा केसेहै कि वंध्याके पुत्र ससा शृंगके समान दान रहित झूठा भूपहै–ताके तद्रूप कवि होयके जाकी कीर्ती गानेमें बुद्धि लगातेहै ॥

मू॰ जमजेलखानामें बिराना सब लोग वहां जानाहै जरूर ये अज्ञानीकी कुमाईहै ।१७।

टीका ॥ स्वामी॰ कि सो कुकविजन जम जेलखानामे सबलोक जायके विरान होतेहै जहां जरूर वो कुकवि जायगे ये अज्ञानकी कमाईहै–अवस्थ भोगनी पड़ैगी ॥१७॥

मू. सावरके मिलेते कल्याणमें कलंक होय त्यूंही सत संगमें कुसंगके अडावते ॥

टीका ॥ स्वामी॰ कि अव कुसंगकों निषेध वताते है–उपासनामे आन ध्यान करनेसे कलंक दिखाते है कि देखो–सावर–नाम तांबा कल्याण नाम सोना सो सोनामें तांबा मिलनेसे कलंक होतेहै–ऐसेही सतसंगमे कुसंगीके अडावते याने मिलनेसें कलंक होतेहै ॥

मू. आरनाल क्षीरमें मिलेते सबैं फाटिजाति पुण्यको उथापहोय पापके बढावते

टीका॥स्वामी० कि आरनाल नाम कांजी-क्षीरमे मिले ते क्षीर सब फाट जातीहै—अैसेही पाप वढनेसे पुन्यकी निवृती होजातीहै ॥

मू० सम्बरकी पम्मांकूं काइ ज्यों मलीन करै प्राणको प्रध्वंश ब्रह्मपुत्रके चढावते॥

टीका॥ स्वामी० कि सम्बर नाम—जल-पम्मानाम सोभा—ज्यो—जलकी सोभाको काई मलीन करदेती है ओर प्राणको प्रध्वंस नाम—नास ब्रह्मपुत्र नाम विष से होतेहै अैसेही कुसंगसे बुद्धि विगड़ जातीहै।

मू० ऐसेही उपासनामें आनदेव ध्यान किये जात फल खोय जीवअज्ञाता जडावते १८

॥ अर्थ स्पष्टम् ॥ सवैया ॥

आनरु रामबरोबर राखत या नही बात बने कछुभाई
ज्यूंसबखेती रही मिल घासमे यूही गईवहवीजरुवाही
वैश्याकोपूत पिताकहै कोनको जानतहै सबलोग लुगाई
आनतज्या विनराम रीझे नही रज्जब काढीहै रामदुहाई

मू० साधु संग छांडिकै कुसंगमें निवास करै मतभयो मूढ सदा रागके अलापमें॥

टीका ॥ स्वामी० कि अज्ञानतासे जीव साधू संगति छांडके कुसंगतिमे निवास करिके ओर मत्त भयो मूढ वडो–सदा रागके अलापमे मस्त रहतेहै।

मू. अच्छ ज्यों प्रतच्छ अंध राम नाम भूल गयो छगल ज्यों छाक्यो रहै कामके कलापमें

टीका ॥ स्वामी० कि अच्छ नाम रींछ ज्यूं प्रतिच्छ अन्ध होइकै रामनाम भूल गयेहै ओर छगल नाम वकरा ज्यूं मदमे छकि रहेहै कामकलाप कामकेलिमे मगन रहतेहै ॥

मू. आरेका अनेक उतपन्न होय मन बीच राम न जपत नीच बूड रह्यो पापमें ॥

टीका ॥ स्वामी० कि आरेका नाम संदेह मनबीच उतपन्न करके नीच रामनाम जपते नहीहै ओर पापोंमे डूब रहेहै ॥

मू. आदीनव आयकै अनेक भरो अंतरमें भयो न स्वतंत्र चित्त दियो नहिं जापमें १९

टीका ॥ स्वामी० कि आदीनव नाम पाप आयके अनेक अंतरमे भरेहै, या ते स्वतंत्र न भये किन्तु पापोंके आधीन हुये चित्त राम नामके जापमे लगे नही ॥१९॥

मू०माया मोह पंकमें निशंक पड़े रंक बंक
करै कंक मोकली ज्यों मनमें मरोडहै ॥

टीका ॥ स्वामी० कि माया मोहरूपी पंक नाम कीचतामे निशंक जीव परेहै बंक नाम वकृभावसे ओर कंक नाम पुकार करतेहै पुन–केसे जीवहै कि मोकली नाम डोड काक ज्यों मनमे मरोड़ रखतेहै

मू०पालत प्रचंड दंड भरत अखंड मंड करै
अभिलाष लाख जोडत करोडहै ॥

टीका ॥ स्वामी० कि प्रचंड नाम पेट पालतेहै बेटाबेटी स्त्रीका दंड भरने वास्ते अखंड अभिलाषा रखकर लाखो करोड़ों रुपे जोर जोर रखतेहै ॥

मू०संपदा न चलै संग होत भंग अंग
रंग माचै जम जंग तबै मरै शिरफोडहै ॥

टीका ॥ स्वामी० कि देखो जोरी हुई संपदा संग न चलके अंगका रंग भंग होते भये तब जम जंग माचे जब शिर फोरके मरतेहै ॥

मू०कोई नहीं सगा दगाबाज जगजालबन्यो
एक राम बिना सबै डागलाकी दोडहै॥२०॥

टीका ॥ स्वामी० कि उस अंत समय कोई सगा नहीँहै अरु जग जाल दगाबाज रूपसों बन्योहै ओर रामनाम विना सब जगत मानो डागला कीसी दोरहै ॥२०॥

मू०बाजाकूचका नगारा भये संगी सबन्यारा।
प्रीति तजिगये प्यारा कोइरह्यो नाहिं नेरोहै ॥
कोपे जमकिंकर अचानक भयानकसे
आनक बजाय आय दीयो पुर घेरोहै ॥
ठाढे सुत नाती त्रिया संगहू न जाती
सबै स्वारथके साथी यूं सरायको बसेरोहै ॥
अरे कुरापाती वृथा खोयो दिन राती
अब एक हरि नाम बिना कोउ नाहिं
तेरोहै ॥२१॥

॥ अर्थ स्पष्टम् ॥ साखी ॥

रामचरण कुड़ो जगत मीठी देदे खाय।
भीर पड़ै जमदूतकी सब दूरा होय जाय ॥२१॥
बारबार नरतन नही श्रुति पुराण कहै संत ।
तालै सुकृत कीजीये के भजीये भगवंत ॥२१॥

तुलसी या संसारमे पाच रतनहे सार।
संत मिलन अरु हरिभजन दया दान उपकार॥२१॥

मू० पानकर हाला चाला करत कुबाला
संग अंतरमें कालाज्वाला लगी लोभ लायकी

टीका॥ स्वामी० कि देखो मदरापान करिके कुचाला–याने कुस्त्रीके संग चाला करतेहै ओर अंतरमे स्यामता लिये लोभरूपी लायकी ज्वाला उरमें लग रहीहै॥

मू०कपट कराला माला फेरत न मंद कभी
फिरत स्वछंद चिन्ता लगी हाय भायकी॥

टीका॥ स्वामी० कि वे स्वछंद फिरतेहै हिरदैमे कराल कपट भरेहै, पुनः कभी मन्द रामनामकी माला फेरते नहीहै हायभायकी चिंता हृदयमे लग रहीहै॥

मू० भयो तनु श्वेत हेत कियो नाहीं संत-
नसूं पड़ी मुखरेत आइ फौज जमरायकी॥

टीका॥ स्वामी० कि देखो तनके केस सब स्वेत भये पर संतनसूं हेत नहीहै ओर यमराजकी फोज

आयकै मुख पर रेत अर्थात् मुख पर धूल डालते भयेहै ॥

मू० चाले समसान दिशा समीगर्भ संग
लिये देखत कुटुंबी दुरदशा भई कायकी २२

टीका ॥ स्वामी० कि समसान दिसा ले चले वो समीगर्भ नाम अग्निकों संग लिये हुवे कुटुम्बीं लोग सब देख रहेहै ओर काय याने देहकी केसी दुरदसा होती भईहै ॥२२॥

॥ तत्त्वज्ञानको अंग ॥

मू० तत्त्वज्ञान भये मिथ्याज्ञानको प्रध्वंश
होय मिथ्या ज्ञान गये राग द्वेष न रहतहै ॥
राग द्वेष विना पुण्य पुण्यमें प्रवृत्ति नाहीं
प्रवृत्तीके मिटे नाहीं जनम लहतहै ॥
देहके अभावते इक्कीस दुःखनाश होय
अक्षपाद सूत्र ऐसो अरथ कहत है ॥
उतर उतरके अपायते विशेष रहै ताहूके
अपायहूते परम महतहै ॥२३॥

टीका ॥ स्वामी० कि तत्वज्ञान नाम आत्मज्ञान होनेसे मिथ्याज्ञान कहिये विपरीत ज्ञान नास होते है अर्थात्-जेसे रज्जुआदिक सर्पादिक बुद्धि ऐसेही अनित्यादिमे नित्त बुद्धी सोही विपरीत ज्ञानहै तत्वज्ञानसें ता विपरीत रूप मिथ्याज्ञानके दूर होय रागद्वेष कहां-ओर जब रागद्वेषही नहीं तो शुभाशुभ कर्मोंमें प्रवृत्तीकाभी अभाव हुवा ओर जब कर्मोंमे प्रवृतीही नही तो जन्मभी नही-जब तक कर्मोंमे प्रवृत्तीहै तब तक जन्महै, छिन्नेमूले कुते साखा-जब कर्मरूप मूलही नही तो जन्मरूप साखा कहां-जब जन्मरूप देहिकाही अभावहे तब देहकै अभाव होनेसे इक्कीस दुःखोका नास होतेहै सो इक्कीस दुःख यहैकि प्रथम तो सरीर १, पांच ज्ञानेंन्द्रिय ६, ओर मन ७, पांच ज्ञानेंन्द्रियो ओर मन इन छहूका विषय १३, ओर इन छहूकाही देवता १९, तथा सुख ओर दुःख २१, अर्थात् सरीर १, श्रोत्र १, त्वक् २, नेत्र ३, रसना ४, घ्रांण ५, मन ६, य छ इन्द्रियोही ७, ओर शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, संकल्पविकल्प य छही इन इंद्रियोंके विषयहै १३, ओर दिसा, पवन, सूर्य, वरुण, अस्वनीकुमार, चंद्रमा, ये छही इन इन्द्रियो

याके देवनाहै यह सब मिलकर १९, सुख ओर दुःख यूं कर २१ होय इन इक्कीस दुःखोका नास होनाही न्यायमतमे मोक्षहै, इस तरहसे उतरोतर के अपाय नाम नास होनेसे जैसे तत्वज्ञानसे मिथ्याज्ञानका नास ओर मिथ्याज्ञान गये रागद्वेषका नास, रागद्वेषके गये शुभाशुभ कर्मोमे प्रवृत्तीका अभाव, प्रवृत्तीका अभाव ते देहका अभाव, देहका अभावसे इक्कीस दुःखका अभाव इस तरः क्रमसे पूरव पूरवका नास होनेसे उतर उतरकै आपही नास हो जातेहै सबके नास होय जो रही अविद्या उसकाभी नास हो जातेहै सोही मोक्ष है ऐसे अक्षपाद नाम गोतमसूत्र कथन करैहै,प्रमाण–नाय० १ आह्निक १ सूत्र २ दुःखजन्म प्रवृत्ति दोषमिथ्या ज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये तदनन्तरापायादऽप वर्गः ॥२॥ इत्यर्थः

## ॥ नाम महिमाको अंग ॥

मू० विश्वपद वाच्य ताके वाचक अनेकपद
सत्यके सबंध बिना सत्यता न लेशहै ॥

टीका ॥ स्वामी० कि कैसी नामकी बडी महिमाहै सोऽहुनो समष्टी स्थूल प्रपंच सहित चेतन विराट

कहियेहै व्यष्टी स्थूल अभिमानी (विश्व)
कहियेहै। विराटकी और विश्वकी उपाधिस्थू
ते विराटरूपही विश्वहै विराट तेन्यास नही
उपाधिवालेजो विश्वपद सो तो वाच्यहै। अ
अनेक पदहै, सो वाचक कहियेहै तामे सत्यके
विना सत्यता लेशभरनहीहै। अर्थात् चेतन
कोई सत्य नहीहै। सिवाय।

॥ कुंडलिया ॥

किया खिलोना खांडका नाना विधि अने
ज्ञान द्रष्टी कर देखिये तो खांड अेककी ए
तो खांड अेककी एक दोस बुद्धि धरिये न
उंच नीच आकार ब्रह्म व्यापक सबमांही
रामचरण नहि कीजीये कोई न घट विधि
किया खिलोना खांडका नाना विधि अने

॥ श्लोकः ॥

अेकंच मृत्पात्र मनेकरूपं, अेकंच क्षीरं बहुवर्ण
स्वर्णअेकं बहुभूषणानी,अेकः परमात्माहि सर
कठ २। ५-९ अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो-
प्रतिरूपो बभूव। एकस्तथा सर्वभूतान्तरम
रूपं प्रतिरूपो बहिश्च ॥१४॥

सू० रामपद वाचताके वाचक प्रभूत शब्द आधारकी सत्तापाइ सत्यमें प्रवेशहै ॥

टीका ॥ स्वामी० कि तेसेही रामपद तो वाच्यहै अरुताके प्रभूत नाम अनेक शब्द वाचककहै ओर आधारकी सत्ता स्फुर्ति पायके भान होतेहै पुनः सत्यमे पीछा प्रवेश होते है सिवाय ऐसेही राम मन्त्र सर्व मन्त्रोंका वाच्यहै, ओर मन्त्र सब वाचकहै ।

चौपाई ॥ यद्यपि प्रभूके नाम अनेका,
श्रुति कहै अधिक ऐक ते ऐका ।
राम सकल नाम ते अधिका,
होउ नाथ अध खग गण वधिका ॥१॥

दोहा ॥ रामचरण इक बीजमे, ब्रक्षतनो बिसतार।
डाल पात फल फूल सब, जड़ छलका बहु भार ॥२॥
राका रजनी भक्त तब, रामनाम सोई सोम।
अपर नाम उडगण विमल, बसहु भक्त उर व्योम॥
यथाभूमि सब बीजमय, नखत निवास अकास ।
रामनाम सर्व धर्म इमि, जानहु तुलसीदास ॥३॥

श्लोकः ॥ राम रामेति रामेति, रमे रामे मनो रमे ।
सहस्त्र नामत्त तुल्यं, राम नाम वरानने ॥१॥

मू. ऐसो उपचार जाके उरमें विचार करै धरै शुद्ध भाव ताते मिटत कलेशहै ॥

टीका ॥ स्वामी० कि अैसे उपचार याने निश्चय-जोहै ताको उरमें विचार करतेहै और हृदयमें शुद्ध भाव धरके जो राम नाम रटतेहै जाका कलेश मिट जातेहै ॥ सिवाय ॥

चौपाई ॥ सहस्त्र नाम समसुन शिव बानी,
जपे जेई शिव संग भवानी ।
महिमां जासु जानि गणराऊ,
प्रथम पुज्य इत नाम प्रभाऊ ॥१॥

॥ अध्यात्म रामायणे ॥

श्लोकः॥ द्विजो वाराक्षसो वापि,पापिवा धार्म कोपिवा।
तज्ये कलेवरं राम त्वं यान्ति परमं पदम् ॥१॥

मू० भालवेय शाखामें प्रमाण ऐसो कह्यो वेद सोहि राम मंत्र जाको जपत महेशहै २४

टीका ॥ स्वामी० कि भालवेय अेक वेदकी साखामे प्रमाण राम नामका कहाहै सोही राम मंत्रहै जाको महेशभी जपतेहै ॥ २४ ॥ पद्मपुराणे उत्तरखण्डे ६ अध्याय १३२ ॥

श्लोकः॥ भक्ति हीनैश्चतुर्वेदे पठितैः किं प्रयोजनम् ।
श्वपचो भक्ति युक्तस्तु त्रिदशैरपि पूज्यते ॥

मू० राम चिदानन्द घन आनंद स्वरूप
ताको सक्करी प्रमाणही गुणानुवाद गाइबो ॥

टीका ॥ स्वामी० कि ये राम सच्चिदानंद घन आनंद स्वरूपहै ताको सक्करी नाम सक्ती प्रमाण बुद्धिमान गुणानुवाद गातेहै ॥ सिवाय ॥

सवैया ॥ राम स्वरूप अगाध अनूप
विलोचन मीननको जळहै ।
श्रुति राम कथा मुख रामको
नाम हिये पुनि रामही कोथळहै
रति रामहीसूं मति रामहीसूं
गति रामहि रामहिंको बळहै
सबकीन कहूं तुलसीके मते
यतनो जगजीवनको फळहै ॥१॥

दोहा ॥ कहबो सुणबो देखबो, चितकी चितवन जान ।
रामचरण इनके परे, अक्षय ब्रह्म पिछान ॥१॥

मू० आपनी ऋतंभराके अनुभव प्रमाण
कह्यो जैसे अकूपारको अगाध गाध आइबो॥

टीका ॥ स्वामी० कि जो अपनी ऋतंभरा नाम बुद्धिके अनुसार याने प्रमाण रामगुण हमने कहेहै जेसे अंकुपार नाम समुद्र अगाधहै ताको गाध नाम थाह कोन पातेहै तेसेही राम नामकी महिमां अनंतहै ॥ सिवाय ॥

दोहा ॥ सुमरि सुमरि जुग असंख्य बिच,
तिर गये संत अनेक ।
कुछ घट्या न बढिया सन्तदास,
वो नाम एकका एक ॥१॥

सोरटा ॥ महिमा अगम अथाह,राम तुमारा नामकी ।
श्रवण सुनतही ग्राह, नाम लेत गज उधरयो ॥१॥

॥ दोहा ॥

मरां कहत मुनिवर भया, तो राम कहत कहा होय ।
शिव जानेके शिव बधू , ओर न जाने कोय ॥१॥

मू० जैसे उपलक्षण ते लक्षित स्वरूप भूप कुंडली अकुंडलीको भेदसो जिताइबो ॥

टीका ॥ स्वामी० कि जेसे लक्षणाते लक्षित याने जाणतेहै कि ये भूपके चिन्हहै। ये कुंडलीवाले पुरुष सोयेहै ये कुंडलीवाले पुरुष आतेहै ऐसे भेदचिन्ह जतातेहै तेसेही मन्त्रोमे भेद खुलासा मुक्ति देनेमे

राम नाम दिखातेहैं असे वेदके वचनहैं ॥ सिवाय चौपाई ॥ वन्दो राम नाम रघुवरको
हेतुकृशानु भानुहिम करको ॥१॥

दोहा ॥ तुलसी रघुवर नामके, वरण विराजत दोय।
अेक छत्र अेक मुकुटमणी, सब वर्णनपर जोय ॥१॥
ररो वाकी रेफहै, ममो वाकी मेख।
ररा ममाके बीचमे, अजब तमासा देख ॥२॥

मू० भगवंत धर्मधारा वाहक मनीषावृत्ति
भक्तिके स्वरूपते अनूप पद पाइबो ॥२५॥

टीका ॥ स्वामी० कि भगवंत धर्मकी धारामे वाहक नाम निरन्तर मनीषा नाम बुद्धिकी वृति भक्तीमें लगानेसे तद्रुपहोनेपर उपमां रहित परमपद पाते है ॥ सिवाय ॥

मनोहर ॥ नामके निवाजे जीव नीच हूते उंच होत
वालमीक भये देखो आदि कवि राजसों।
नामके निवाजे दासी पुत्र जो नारद भये
जीवनके तारबेकों भये मानो जिहाजसो।
नामके प्रताप कर कबीर रयदास देखो
जगतमे प्रसिद्ध सब साधुन सिर ताजसो।

माणक्क पुराणनमे लोकनमे ठोर ठोर
नामके प्रभावहीकी सुणीहै अवाजसो ॥१॥
चौपाई ॥ कहूं कहां लगि नाम बडाई,
रामन सकहि नामगुण गाई ॥२॥

मू० पूरब महानु ऋषि भयेते बखान गये
पार नहीं पायो ताते और कौन पावैगो ॥
जैसे महासागरते बूंद एक पानकिये
येतोही पिपीलका के उदरमें समावैगो ॥

॥ अर्थ स्पष्टम्–इति द्वौपदौ ॥

मू० प्रौढ अपयोनी ज्वाल मालाते फुलिंग
एक तामेंतेज पुंजको प्रभाव कैसे आवैगो
हीमत बखान कियो ज्ञानको अलप अंश
सकलकह्यो न जाइ ताकूं वेद गावैगो ॥२६॥

टीका ॥ स्वामी० कि स्वामीजी आज्ञा करतेहै कि पूरब बडे महानु ऋषी भये सोभी नामकी महिमांको पार पाये नही तो ओर कोन पाय सकतेहै

जैसे प्रौढ नाम बडी अपयोनी नाम अग्निकी ज्वालमालते निकसी जो एक फुलिंगा तामे सकल अग्नीके तेजके पुंजको प्रभाव कैसे आवतेहै किंतु नही आवतहै अैसे अेक मेरी बुद्धि फुल्लिंगा रूपहै जामे सकल नामको प्रकाश याने ज्ञानको प्रभाव कैसे कहे जातेहै इनसे सकल प्रभाव कह्यो नहि जातेहै जाको वेद गातेहै ताज्ञानको अंश अलप कहेहै ॥ सिवाय ॥

॥ दोहा ॥

कहन कठिन समजन कठिण, साधन कठिन विवेक।
होय घुणाक्षर न्यायजो, पुनि प्रत्युहै अनेक ॥१॥

## ॥ मूल ॥ दोहा ॥

ज्ञानपचीसी यह कही, यामे वरण्यो ध्यान ॥
भेद मात्री सुख ना लहे. पावे संख्यावान॥१॥

टीका ॥ स्वामीजीश्री हिम्मतरामजी महाराज आज्ञा करतेहै कि हमने ज्ञानपचीसी जो कहीहै जामे ध्यानवरणन करेहै. सोयाको सुखभेद मात्री नाम मुर्ख नो लेवे नहीहै और संख्यावान नाम पंडित होगा सो याको सुख लेवैगा ।

## ॥ अथ टीका कर्त्ताको मोतीदाम छन्द ॥

न पाय सकै गुरु वाक्य न पार,
कहै अपना उर भाव निहार ।
बडो उपकार कियो हिमतेस,
कहै सब जीवनको उपदेस।
पचीस कवीत कहे सब सार,
सुकेवल जामहि ज्ञान विचार ।
भलो यह जीव जो ले उर धार,
तरे भव सिन्धु अपार निहार ।
कहैं गुरु ज्ञान पचीसी अमोल,
बडे जिनमे बहु शब्द अतोल ।
हमे मतिमंद करीहै सटीक,
नही हमको कुछ ज्ञानकी ठीक।
बडे बुद्धिवान विचारक आप,
करो सब भूल हमारी सों माफ।
करूं करजोरमे केशवराम,
अनन्त अनन्त गुरुको प्रणाम।

गुरु हरि रूपसु हीमतराम,
अखंड अनादि सदा सुखधाम।
ऐसे गुरुदेव क्रिपा कछु कीन,
यथामति केशवसो लिख दीन ॥१॥

दोहा॥ ज्ञानपचीसीको अरथ, कह्यो सु केसवराम।
एक गुरुके चरणको, है जाके उर धाम ॥२॥

उन्नीस जु तहतरो भाद्रपद शुभमास,
पाचम सोम जुवार दिन टीका करी प्रकास ॥३॥

॥ इति ज्ञानपचीसी सटीक सम्पूर्ण ॥

※ राम राम राम राम राम राम ※
※ राम राम राम राम ※



गुरु संत परमात्मा, तीनू रूप समान ।
दिलसुध दिलमे ध्यानधर, नित्य नवणाता ठान ॥१॥

---

सतचित आनंद रामहै, सतगुरु संत मिलाप ।
धर्मदास वंदन कियां, मिटजै तीनूं ताप ॥१॥

---

राम सबै भरपूरहै, सतगुरुसें गम पाय।
दयाराम करजोड़के, संत चरण चितलाय ॥१॥

---

रामगुरू सर्वज्ञ हो, अधम उधारण राज।
जगरामदासकी राखजो, तुम चरणों महीं लाज ॥१॥

---

सूचना ॥

विद्यमान् वीतराग आचार्य्य स्वामीजीश्री १०८ श्री निर्भयरामजी महाराजके श्रीमुखनिर्मित बचनोमृत थोड़ै दिनां बाद लिखूगा

✻ राम राम राम राम राम राम ✻

श्री
रामो
जयति




## ॥स्वामीजीके सिखांकी अनुभव वाणी॥

राम गुरू निर्वृतजन,
शरणाई साधार ।
बलभराम कर वंदना,
ये भवजल तारणहार ॥१॥

राम अखंडत सतगुरू,
हरिजन त्रिये गुणपार ।
वंदन तिनकूं करत है,
रामसेवग निरधार ॥२॥

॥ अथ स्वामीजीश्री रामप्रतापजी महाराजकी वाणी लिख्यते ॥ साखी ॥

स्तुति ॥ नमों राम रमतीतकों,
सतगुरु सन्त बरीयाम ।
रामप्रताप कर जोड़कै,
करै अनंत परणाम ॥१॥
सतगुरु मेरै शिर तपै,
एक अखंडित आप ।
रामचरण पूरण ब्रह्म,
कहै राम प्रताप ॥२॥
बलिहारी गुरुदेवकी,
गरवा मिल्या गंभीर ।
रामप्रताप हर तापकों,
दीनी मोकूं धीर ॥३॥
सुमरण सबकै उपरे.
संतन काढ्यो सोधि ।

रामप्रताप सुमरण किया,
मनकै लगै प्रमोधि ॥४॥
राम राम रटरे मना,
साखि जनांकी सोधि।
रामप्रताप तज तीनकों,
पांचांकूं परमोधि ॥५॥
पांचाकूं परमोधकै,
सोध आपणो जीव।
रामप्रताप मन पकड़ ले,
ज्यूं पावैगा पीव ॥६॥
पुत्र हेत पावन कीयो,
अजामेल द्विज देख,
रामप्रताप हरि सुमरतां,
मेटी मनकी रेख ॥७॥
गज सुमर्‍यो जुध कष्टमे,
राम शब्द निरधार।

रामप्रताप छिनमें कीयो,
जूंण पलट भव पार ॥८॥
सुवा मुख श्रवणां सुण्यो,
विधक एक निज नाम।
अंतकालकी प्रीतिसूं
पहूच्यो मुक्ति मुकाम ॥९॥
अनंत महात्म अनंत विधि,
प्रवी पुनः अनंत।
रामप्रताप नही नाम सम,
भाखतहै सब संत ॥१०॥
सतसंग विन निपजै नही,
साध सिध सिख भेख।
रामप्रताप सत संगते,
उधर्‌या सन्त अनेक ॥११॥
※ राम राम राम राम ※

॥ अथ स्वामीजीश्री चेतनदासजी महाराजकी वाणी लिख्यते ॥ साखी ॥ स्तुति ॥ राम निरंजन ब्रह्म जु,
पुन सतगुरु सब दास ।
जन चेतन बंदन करै,
कर कर बहोत हूलास ॥१॥
कहै चेतन गुरुदेव सम,
दूजा कोई नाहि ।
नारदजीकी मेटदी,
चोरासी पलमाहि ॥२॥
लख चोरासी भरमता,
चार जुगांके माहि ।
चेतन गुरुप्रतापते,
अब फिर आणा नाहि ॥३॥
देखत सबही मर गया,
कर कर मन्दिर ठाट ।

चेतन जग चेतै नही,
असो अंध निराट ॥४॥
दालभात भोजन करै,
चढ चालै सुखपाल ।
चेतन हरिका भजन विन,
जम काढै गोखाल ॥५॥
महलां माही बैठणा,
करै कलावत राग ।
चेतन भजै न रामकूं,
धृक जनूंदा भाग ॥६॥
चढै पालकी गज तुरी,
लार चलतहै फोज ।
कहे चेतन इक राम विन,
नरक चल्या कर मोज ॥७॥
चेतन भजीये रामकूं,
ज्यूं हलकाराकी चाल ।

जेता चलै उतावला,
तेता होय निहाल ॥८॥
सतगुरु सीत प्रशाद ले,
पीवै चरण जल धोय ।
बुधि निरमल चेतन कहै,
राम भजन रुचि होय ॥९॥
कनक कामणी त्यागकर;
राम भजन रति होय।
चेतन वै त्यारण तिरण,
दूजा ओर न कोय ॥१०॥
काल गरजै रेण दिन,
तीन लोककै माहि ।
सुरनर असुरजू पीसीया,
चेतन छोड्या नाहि ॥११॥

॥ इति साखी सम्पूर्ण ॥

* राम राम राम राम *

अथ स्वामीजीश्री कान्हड़दासजी
महाराजकी वाणी लिख्यते ॥ साखी ॥
स्तुति ॥ अनन्त जनांनै आदिदे,
पुन सतगुरु अरु राम ।
कर जोड़्या कान्हड़ करै,
बार बार परणाम ॥१॥
सतगुरु यह उपदेशीया,
कान्हड़ कहे विचार ।
उतम देहि अबके मिली,
रे सिख राम संभार ॥२॥
उतम देहि सबके सिरै,
नरतन है भाई ।
जाकूं वृथा न खोइये,
सतगुरू बताई ॥३॥
सतगुरुका उपदेश यह,
ऊतम भाग मिलाय ।

तातै कान्हड़ समझ अब,
राम नाम लिव लाय ॥४॥
सतगुरु तोहि बताईया,
यह उतम उपदेश ।
कान्हड़ भजकर रामकूं,
गहीये उतम देश ॥५॥
तीन ताप जाकी टरै,
राम नाम कोई लेह ।
कान्हड़ सतगुरु कहतहै,
फेरन धारै देह ॥६॥
झूठ पसारो उपज्यो,
सारोही संसार ।
कान्हड़ नहचै जावसी,
रहसी नही लगार ॥७॥
रहै नही जासी सबै,
सुखम थूल विसतार ।

कान्हड यह विचारकै.
कीजै राम उचार ॥८॥

पथरीमें पावक बसै,
आठ पहर इक सार।
कान्हड यूं गुरु शब्दमें,
मिलै राम निरधार ॥९॥

नाम बतावै संत सब,
साहब को सरजीव।
कान्हड भज भय मेटीयो,
मिलिये अपने पीव ॥१०॥

अनंत जुगामें नाम यह,
वेद पुरान बखान।
कान्हड कलि शुकदेवसें,
ताको करै प्रमान ॥११॥

॥ इति साखी संपूर्ण ॥

* राम राम राम राम राम राम *

अथ स्वामीजीश्री द्वारकादासजी
महाराजकी बाणी लिख्यते ॥ स्तुति ॥

रेखता ॥ नमो अबंग अरु सर्व व्यापीक,
तूं सर्व आधार यह रहत तेरै।
सर्वमें नूर भरपूर प्रमातमा,
सर्व साक्षी सदा नाहि नेरै।
वार कहूं पार मध नाह जांन्यो परै,
रह रस एक अलेख जोई।
द्वारकादास अवधूत वंदन करै,
नमो निर्बाण पद राम सोई ॥१॥

साखी॥रामचरणकी शरणमे,पूगी मेरी आस।
द्वंद छाड निर्द्वंदभया,यूं कहै द्वारकादास॥२॥

लय लागी तब रामसूं,
भागै भर्म विकार।
कहै द्वारकादास तब,
कर्म भया सब छार ॥३॥

रेखता ॥ वीनती बापजी एक तुम सांम्हलो,
ओर नहि आसरो मोहि दीसै।
तीनही लोक ब्रह्मंड नवखंडमें,
काळ करजोर सब ठोर पीसै ॥
एक न्हकाळ निज शरणहै आपकी,
सोहि कर महर अब मोहि दीजै।
द्वारकादासकूं काढ भवसिंधसें,
रामजी आसरे आप लीजै ॥४॥
आपके आसरे अगम आनंदहै,
आपके आसरे बंध छूटै ॥
आपके आसरे मुक्तिपद पायहै.
भरमका सकल जंजीर तूटै ॥
आपके आसरे आय पूगे सबै.
आपके आसरै ज्ञान पावै।
द्वारकादास है आपके आसरे.
रामहि रामसूं ध्यान लावै ॥५॥

रामसूं खेल मन पांचकूं परहरो,
देख दोजिग्गका मेल एही।
जीव जंजालमें इनूं संग परतैहै,
धरत नही धीर नर मरत केही ॥
स्वर्ग पाताल नरलोकके जीव सब,
पीवको ध्यान कोई न धारै।
द्वारकादास गुरु ज्ञान प्रकास बिन,
अंध संसार ढब ढेक खावै ॥६॥
कर्म अरु काळकी जाळ असराळहै,
होय विकराल संसार खाया।
तीनही लोक आधीन ये काळके,
सकळ ब्रह्मंड सो देख माया ॥
सुखम अरु थूल अस्थूल छोडै नही,
थरहरे त्रिचसे देव देखो।
द्वारकादास रट नाम निर्वाणपद.
बचत वरियाम कोई संत अेको ॥७॥

अथ स्वामीजीश्री भगवानदासजी
महाराजकी वाणी लिख्यते ॥साखी॥

स्तुति॥ रमता राम रु सन्तगुरु,
मोउर शीश निधान।
ताकूं वंदन प्रेमयुत,
करै दास भगवान ॥१॥
राम नाम सतगुरु दीया,
करुणाकर भरपूर।
भगवान ध्यान लागा रहै,
आनमत्त सब दूर ॥२॥
आन वात गुरुदेवजी,
फटके दई उडाय।
भगवानदास भवहरणकूं,
नाम दीया निरताय ॥३॥
नमस्कार नित कीजीये,
गुरुकूं वार हजार।

भगवानदास निरमल हुवा,
वाहीके आधार ॥४॥
सतगुरु मेरा सूरवा,
रामचरण दर्वेश।
भगवानदास पर महर कर,
जन दीयां ज्ञान उपदेश ॥५॥
भगवानदासके शिर सही,
गुरु रामचरणका हाथ।
दर्शन कर दीदारको,
नरतन भयो सनाथ ॥६॥
वंदन वार अनंतहै,
अब धारो गुरुदेव।
भगवानदास करुणा करै,
मोसूं वणीन सेव ॥७॥
सुख पूरण गुरु शरणहै,
मरण मिटावन हार।

भगवानदास गुरुदेवकूं,
वंदन बारं बार ॥८॥
सकल लोक संसारमें,
सतगुरु त्यारे जीव।
काम कलपना मेटके,
भगवान मिलावै सीव ॥९॥
भगवानदास दीरघ गुरु,
देवै दीरघ ज्ञान।
दीरघ ब्रह्म अलेखहै,
ताको धरहै ध्यान ॥१०॥
ध्यान धरतहै रैणदिन,
खट रितुबारा मास।
भगवानदास वा ध्यानको,
कदे न होवै नास ॥११॥

॥इति साखी संपूर्ण॥

* राम राम राम राम *

अथ स्वामीजीश्री देवादासजी
महाराजकी बाणी लिख्यते ॥ साखी ॥
स्तुति ॥ रामगुरु सब सन्तकूं,
देवो नावे शीश ।
बार बार परणामहै,
मेरी विश्वाबीस ॥१॥
देवादासकी बीनती,
करजोड़्यां परणाम ।
सतगुरु कृपा पाईये,
परा मुक्ति विसराम ॥२॥
अचल अभंगी रामजी,
सतगुरु सबही सन्त ।
देवादास बंदन करै,
मे तुम चरणों रत्त ॥३॥
चित चरणों में राखजो,
नेरा सूं नेरो ।

देवादासहै रामजी,
त्रिपविधि विधि चेरो ॥४॥
देवादास में कछु नही,
करणीको कणको ।
पिताराम तुम तारहो,
में इंघरको लड़को ॥५॥
कूड़ कपट अवगुण भर्‍यो,
सो मत देखो आप ।
अपणो विड़द सम्हालजो,
मोमें पूरण पाप ॥६॥
देवादासकूं गेल ल्यो,
करणी दिशान देख ।
शरण आपकी रामजी,
वाह् गह्यांकी रेख ॥७॥
रेख बिड़दकी राखजो,
राम गरीब नवाज ।

देवादासकी बीनती,
तुम चरणा मम लाज ॥८॥
पार उतारो पकड़कै,
अपणो बिड़द सम्हाल।
तुम गरवा गुणही करो,
अवगुण दिशा न न्हाल ॥९॥
पापोंकी संख्या नही,
रोम रोम गुन्हगार।
देवादासकूं रामजी,
तुमही उतारो पार ॥१०॥
शरण तुमारी आईयो,
तुमही बकसो खोट।
देवादास कहे रामजी,
लही शब्दकी वोट ॥११॥
वोट चोट लागै नही,

ये सबलांकी रीत ।
देवादास कहै रामजी.
मेरै यह परतीत ॥१२॥
सतगरुको सत ज्ञानही,
हमदे सुणीयो कान ।
देवादास सो ना सध्यो,
अब करतेहैं गुदरान ॥१३॥
देवा गरीबी गढमें,
रामभजनको सोर ।
अभय किलै आशण कियो,
जहां लगै न काहू जोर ॥१४॥

॥ इति साखी संपूर्ण ॥

* राम राम राम राम राम राम *

:—:राम राम राम राम राम:—:

अथ स्वामीजीश्री मुरलीरामजी महाराजकी
अनुभव बाणी ॥ स्तुतिका कवित ॥

नमो रमईया राम नमो सतगुरु हरिरूपा।
नमो संत परबीण नाम रट भये अनूपा ॥
नमो सिध जोगेस नमो जत सत कै पालक।
नमो नाथ मनजीत राम रत मिल रहै खालक
मुरली साधू रामगुरु,
तीनू कारण एक।
ताकै पद बंदन करत,
पल जाय विघ्न अनेक ॥१॥
साध राम गुरुदेवजी कारण एक पिछाणलै।
साध दया दिलपाक रामहि राम उचारै।
वै समदृष्टी शुद्ध सदा इक रूप विचारै ॥
राम रमै सब माहि नित्य निरधार अजन्मा।
निगमकहत गमनाहि वरण नही आवै मनमा

सतगुरु शिरजणहार इक,
मुरली मन बिच मांनलै।
साध राम गुरुदेवजी,
कारण एक पिछाणलै ॥२॥

नमो राम निरधार नमो निरंजण निरकारा।
नमो अजूणी नाथ सकल तेरै आधारा ॥
नमो त्रियेगुण रहत नमो मनबुधि चितपारं।
नमो अरंग अभंग नाम सुमरत भवतारं॥
अकह अगह अदेह नेह किससूं नहि होता।
नमो अबोल अमोल तोल ताका नही होता

मुरलीराम बंदन करै,
किस बिध जांण्यो जाय।
राम कहत रामहि मिलै,
दूजी नही उपाय ॥३॥

नमो ब्रह्म निजदेव नमो अवगति अबनासी
नमो निरंजणराय सदा संतन सुखरासी॥

नमो गरीबनवाज पतितपावन बिड़द तेरो।
भक्त बिछल भयहरण मरण मेट्यो सब मेरो
नमो वार मध पार वरणवे आवे नाही।
नमो चिदानंदरूप रूपमें लपो न काही ॥
नमो दृष्टि नहि मुष्टि नाम तेरो कहा दीजे।
ताते यह विचार राम रसना रस पीजे॥

ध्रुव शिव नारद शेषसें,
रटै अखंडित धार।
मुरली अक्षर दोय बिच,
पाया सब आचार ॥४॥

नमो परम दयाल नमो आनंद सुख राशी
नमो अखंडानंद सदा स्वयम् प्रकाशी ॥
नमो ज्ञानका रूप नमो वैराग्य स्वरूपा।
नमो शीलके पुंज नमो भक्तनके भूपा ॥
नमो अंजणसूं रहत नमो निरंजण निरकारा
नमो अजुणी नाथ नमो तुम रहत विकारा

नमो ज्ञानकै पार नमो विज्ञान अध्यातम।
नमो दयाके मूल सकलमें जांण अमातम,
जन मुरली बंदन करै,
वार पार दीसै नही।
गुरु रामचरण पद रामकै,
वरत रहै सब घट मही ॥५॥

॥ इति स्तुतिका कवित संपूर्ण ॥

साखी ॥ प्रथम स्तुति गुरु रामकूं,
जासूं सब परकास।
भूत भवष्य वर्तमान संत,
तिनको मुरलीदास ॥१॥
मुरली चेतन होयकै,
कहिये चेतन राम।
झीणा केसां ऊपरै,
मूढ चुणावै धाम ॥२॥
धाम भाम तज जायहो,

लख चौरासी माहि।
यां भोगांकी मारको,
वां लेखो आवै नाहि ॥३॥
चौरासीकी मारको,
वार पार नहीं छेह।
तातै पीजै राम रस,
कर कर अधिक सनेह ॥४॥
मुरली भजीये रामकूं,
तज सब भोग बिलास।
लखचोरासी जूणमें,
जन्म जन्म जम त्रास ॥५॥
चौरासीकी मारको,
मुरली वारन पार।
तातै नरतन पायकै,
भजिये सिरजनहार ॥६॥
मुरली अवसर आईया,

मूरख अबकी वार।
ताकूं ठोर लगाइये,
तज सब विषय बिकार ॥७॥
जंबूदीप रु भरतखंड,
राम राज नरदेह।
मुरली राम निवाजिया,
अब वाहीकूं भज लेह ॥८॥
कीया स मुरली करलीया,
ई अवसर या बार।
सुकृत सत्संग भजन जुग,
मिलै न औसी बार ॥९॥
मुरली पहली चेतकै,
पीजै राम रसाल।
घर लागां कूवो खणै,
सबै हसै दे ताल ॥१०॥
मुरली मरणा आइया,

जीणा गया बिलाय।
तातै कारज कीजीये.
राम रैणदिन गाय ॥११॥
मुरली मरणा आइया,
जीवण जाण असार।
तातै रे नर चेतकै,
रसना राम उचार ॥१२॥
मीठा बोलो नय चलो,
लेहो भलाई अंग।
मुरली कैसा जीवणा,
नदीनावका संग ॥१३॥
राम राम कह लीजीये,
मुरली रसना ठीक।
श्वास उश्वासी भजनकी.
दलै झीका झीक ॥१४॥

॥इति साखी संपूर्ण॥

अथ स्वामीजीश्री तुलछीदासजी
महाराजकी बाणी लिख्यते ॥ साखी ॥
स्तुति ॥ राम निरंजन सतगुरु,
साध सकलही होय ।
तुलछी वारंवार अति,
वंदन करहै सोय ॥१॥
चेत चेत नर चेतजूं,
क्यूं भूल्यो जगमाहि ।
तुलछी कहै इक राम विन,
जम तोहि छोडै नाहि ॥२॥
अवधि जायरे बावरे,
ज्यूं विरखा को नीर ।
तुलछी हाथ पखालिये,
करो रामसूं सीर ॥३॥
मातपिता परिवार सब,
नारी सुत धन धाम ।

तुलछी यह सब लूटडू,
कोई न आवै काम ॥४

कूडाके संग करम ले,
जावे जमके द्वार ।
तुलछी कहै वे नरकमें,
खावे मुदगर मार ॥५

राम कहोरे वावरे,
हलमा कर कर खूब ।
तुलछी कह इक राम बिन,
जाय नरकमें डूब ॥६

भवसागरमें डूबसी,
विना राम आधार ।
तुलछी भजीये रामकूं,
तुरत उतारै पार ॥७

भूल्यो राम अचेत होय,

पीछे दुख अति पावसी,
लखचोरासी माहि ॥८॥
लखचोरासी भुगततां,
रहे नही कछू आब।
तुलछी कहै जुगच्यारमे,
वे होसी बहुत खराब ॥९॥
राम राम कहो बावरे,
गाफिल क्यूं होय जाय।
तुलछी सुन्दर देह या,
पलमें देख विलाय ॥१०॥
धन जोबन अति पायके,
गया रामकूं भूल।
तुलछी कह वै नरकमें,
रहे उर्ध मुख झूल ॥११॥

॥ इति साखी संपूर्ण ॥

राम गुरु सब सन्त जन,
है मेरै शिरमोड़।
करै वंदना रामसुख,
शीशनाय करजोड़ ॥१॥

अथ स्वामीजीश्री कान्हड़दासजी महाराजकी
बाणी ॥ साखी ॥

स्तुति ॥ नमो राम गुरु संत जन,
सब मेरै शिरताज।
कान्हड़की निज बीनती,
त्रिधा राखहु लाज ॥१॥
पार कियो गुरुदेवजी,
भवसागरसूं मोहि।
कान्हड़ जनके वारणे,
तन मन कीजै सोहि ॥२॥

मेहूं शरणे आपकै,
तुमहो आप दयाल ।
कान्हड़कूं सरणे लीयो,
कीनो आप निहाल ॥३॥
ताला खुल्या लिलाटका,
घड़िया ओर सुघाट ।
धन रामचरणजी गुरु मिलै,
जन कान्हड खुलै कपाट ॥४॥
ज्ञान दियो हरि भजि लीयो,
पीयो अधिक आनंद ।
रामचरण सरणो लियो,
कान्हड गये दुःख द्वंद ॥५॥

॥ इति साखी संपूर्ण ॥

* राम राम राम राम राम राम *
* राम राम राम राम *

अथ स्वामीजीश्री सुरतरामजी
महाराजकी वाणी ॥साखी॥

स्तुति॥ प्रथम राम रमतीतजू,
सतगुरु सबही सन्त।
जन सुरतराम बंदन करै,
वारं बार अनंत ॥१॥
मिनषा देही पायकै,
मूरख कर्‍यो अकाज।
जन सुरतराम नरदेहको,
मूढ बिगड़्यो साज ॥२॥
राम कहो रे प्राणीया,
जब लग पींजर श्वास।
जन सुरतराम साची कहै,
कहा देहकी आस ॥३॥
श्वास अविरथा जातहै,
विना भजन बेकाम।

जन सुरतराम साची कहै,
पड़्या विछोवा राम ॥४॥
राम नाम जाण्या नही,
गया पीजरा फूट ।
जन सुरतराम साची कहै,
जम मार्‍या घर लूट ॥५॥
रामभजनकूं पूठ दे,
आनदेव हुसियार ।
जन सुरतराम साची कहै,
पड़ै जमाकी मार ॥६॥
रामभजनसें रूसणो,
गालगीत हुसियार ।
जन सुरतराम साची कहै,
फेर सहैला भार ॥७॥
जन्म गुमायो प्राणिया,
विषय विकारा संग ।

जन सुरतराम साची कहै,
अंत होयगा भंग ॥८॥
जन सुरतराम संसार सुख,
बाग अेरंडको जान।
दिनां च्यार सरसो रहे,
बिनस पड़ै मेदान ॥९॥
पाप ताप दुख पावसी,
जन्म जन्म तूं बीर।
जन सुरतराम साची कहै,
मिटती नाही भीर ॥१०॥
पाप पुन्य भर लेवसी,
अदल हिस्याबी होय।
जन सुरतराम साची कहै,
नही दूसरा कोय ॥११॥

॥इति साखी संपूर्ण॥

:—:राम राम राम राम राम:—:

परा पार परमातमा.
परम गुरु सब सन्त ।
तिनकूं नहचलरामकी,
वंदन वार अनन्त ॥१॥

॥ अथ स्वामीजीश्री रामनिवासजी महाराजकी वाणी ॥ साखी ॥

स्तुति ॥ सतगुरु संत अरु रामकूं.
वार वार परणाम ।
रामनिवास वंदन करै,
आठ पहर निशिजाम ॥१॥
च्यार मोक्षसे मोक्षहै.
भीलाडो ही जाण ।
धन्य देस वा ठामहै.
जाहा रामचरण परमाण ॥२॥

रामचंद्र ज्यूं रामचरण,
है ईश्वर अवतार।
वां त्यारी अजोधिया,
यां त्यारी मेवार ॥३॥
राम रूप ये है सही,
रामचरण भगवान।
एक देसकी कहा कहूं,
बहुत देस परमान ॥४॥
धन धरती मेवाडहै,
धन भीलाडो नाम।
ओर कोई जाणो मतो,
रामचरणजी राम ॥५॥
रामचरण गुरुदेवकै,
जे कोई दरसण आय।
मनवंछत फल पायहै,
रामनिवास ल्यो लाय ॥६॥

चिंतामणि फल ब्रछसें,
रामचरण जीवाह।
मनवंछत फल पायहै,
जाकै जैसी चाह ॥७॥
सतगुरु मेरा है सही,
रामचरणजी आप।
दरसण करतां दुख मिटै,
अरु मिटावै पाप ॥८॥
सतगुरु मेरै सिर तपै,
रामचरण दाता।
सील संतोष पकडायदे,
दरसणही जातां ॥९॥
सतगुरु ब्रह्म सरूपहै,
रामचरण महाराज।
जिनकै सरणै आवतां,
होय जीवको काज ॥१०॥

रामचरण महाराजहै,
सब देवनकै देव ।
अभै घर पहुंचायदे,
करिये तिनकी सेव ॥११॥

राम निवासकी बीनति,
सुणो राम महाराज ।
सरणा की ये लाजहै,
करिहो मेरै काज ॥१२॥

॥ इति साखी संपूर्ण ॥

:—:राम राम राम राम राम:—:

---

शिरपर सतगुरु रामहै,
जन सुखदाई सोय।
रामसेवग नित वंदना,
तिनकूं मेरी होय ॥१॥

अथ स्वामीजीश्री नरायणदासजी
महाराजकी बाणी ॥ साखी ॥

स्तुति ॥ राम गुरु सब सन्त जन,
गुरुगम वारन पार ।
नारायणदास वंदन करै,
पलपल वारंवार ॥१॥
मुज उपर कृपा करी,
रामचरण गुरु आण।
जगत जाल जंजालसे,
न्यारा कीया नराण ॥२॥
गुरुके निज परतापसे,
मिटीज तृष्णाताप,
रामचरण गुरुदेव तुम,
मिले नरायण आप ॥३॥
नरायणदास निरभै भया,
सतगुरु सरणे आय ।

जन्ममरणका भय मिट्या,
और न सके संताय ॥४॥
दरस कीयां गुरुदेवका,
रहे आनंद भरपूर।
नराणदास बिनती करे,
मत राखीजो दूर ॥५॥
गुरु विन गोविंद ना मिले,
केता करो उपाव।
नरायणदास साची कहे,
गुरुकर गोविंद गाव ॥६॥
ज्ञान दीयो गुरुदेवजी,
तिमर मिटायो दूर।
नराणदास हिरदा विचे,
कोटिक ऊगा सूर ॥७॥
भया उजाला सुन्नमे,
सतगुरुके परताप।

नरायणदास जहां होतहै,
सदा अजपा जाप ॥८॥
महावली अरु अवलीया,
अवधूता मनजीत।
नराणदासकी लग रही,
रामचरणसूं प्रीत ॥९॥
रामचरण सिरपर तपे,
और नही अन आस।
नरायणदासकूं राखीयो,
तुम चरणाके पास ॥१०॥
हरि हीरांकी हाटहे,
सतगुरु साहूकार।
नराणदास कीमत बिना,
केते भये खवार ॥११॥
साचे दिल सुमरण करे,

धर हिरदे विश्वास ।
नराणदास रट-रामकूं,
कटे करमकी पास ॥१२॥
रटो रातदिन रामकूं,
विसरो मती लगार ।
नराणदास कर नोकरी,
मिलसी तबे पगार ॥१३॥

॥ इति साखी संपूर्ण ॥

❋ राम राम राम राम राम राम ❋

---

साखी ॥ रमतीत राम गुरु, सन्तजू
कृपाराम शिरमोड़ ।
रामचरण उरमें सदा,
बन्दै भाऊदास करजोड़ ॥१॥

स्तुति ॥अनंत कोटि जिन शिर तपै,
रामचरण उर माह ।
आन भरोसो आंन बल,
नवल राम कै नाह ॥१॥

कवित ॥ नमो निरंजन राम,
सकल कारजके कारण।
नमो आप गरुदेव,
जगत दुस्तर जल तारण।
नमो नमो निज संत,
निर्गुण नित राम उपासी।
उदय अगम आदीत भरम,
रजनी जु विनासी ॥
सादर होय सरणे,
रहूं कहूं कह्यो नही जाय।
नवलराम वंदन करै,
संत साख अवलाय ॥१॥

# रामः
# स्वामीश्रीनिर्भय रामाष्टकम्

॥ दोहा ॥

अबै हस्त शिरपर धरो, दया करो महाराज।
शरणे आये दासकी, तुमही राखो लाज ॥१॥

॥ सवैया ॥

केवल ज्ञानकी खान तपोनिधि, मङ्गलमोदके देवनहारे। उत्तम दे उपदेश विशेषते कर्मज क्लेश कराल निवारे। सन्त समागमका सब सार सुझायके संसृति संकट टारे। श्री निर्भयराम गुरु सुखधाम को बार अनन्त प्रणाम हमारे ॥१॥ भूल चुके भ्रम में भगवन्त को काज कराल बडे कर डारे। वैर विशाद के बास वसे हम सन्त समाज को सङ्ग विसारै। आप विना गुरुदेव दयानिधि या बिगड़ी गति कौन सुधारे। श्री निर्भयराम गुरु सुखधाम को बार अनन्त प्रणाम हमारे ॥२॥ जाइफसे दुख द्वन्दके फन्दमें अन्ध हुए अघ के अंधियारे। धीरज

धर्म सुकर्म समुहको नित्यहि लोभ के हाथ न हारे। यों विषयादिक में वहते हम आप विना कुन लावे किनारे। श्री निर्भयराम गुरु सुखधाम को वार अनन्त प्रणाम हमारे ॥३॥ भूरि भवार्णव के भय भञ्जक भाव अनेकन आप उचारे। लुप्त भय सत ग्रन्थ के सार उन्हें सुविचार के आप उचारे। धन्य महा गुरु देव दयाल दयाकर दासन को भव तारे। श्री निर्भयराम गुरु सुखधाम को वार अनन्त प्रणाम हमारे ॥४॥ घोर महा कलिकाल करालतें हाल विहाल भय जन सारे। धर्म ढका दृढ ढोंग की ढाल तें ज्ञान के भानु पे वद्दल कारे। इस घोर महातम भञ्जन को तुम अञ्जन रूप अनूप पधारे। श्री निर्भयराम गुरु सुख धाम को वार अनन्त प्रणाम हमारे ॥५। ढोंग के ढोल की पोल निखोलि वजाय दिये सत् धर्म नक्कारे। निर्भयसिंह निशंक निरन्तर क्रुर कुकर्म करीन्द्र विदारे। पुन्य प्रथा परिपालन के हित पातक पुञ्ज प्रपञ्च प्रजारे। श्री निर्भयराम गुरु सुखधाम को वार अनन्त प्रणाम हमारे ॥६॥ निर्भयचन्द अमन्द अनेकन

सन्त समाज सतेज सितारे। पद्मिनी ज्यों सब सेवक ससदि हर्षित है तब रूप निहारे। नित्य निरञ्जन ने जग तारन हेतु तुम्हें दृढ सेतु संवारे। श्री निर्भयराम गुरू सुख धामको बार अनन्त प्रणाम हमारे ॥७॥ गुरुदेव महाप्रभु के पद, पंकज के युग अंकुर वारे। सुन्दर स्वच्छ सुडौल सुकोमल विज्ञं विरञ्ची विचार संवारे। सो बसियो उरमें निशिवासर किंचित् मात्र न होइयो न्यारे। श्री निर्भयराम गुरु सुखधामको बार अनन्त प्रणाम हमारे ॥८॥

॥ दोहा ॥

अष्टक पढै जू प्रेमसे, ता घर नित आनंद।
वाकै मन भक्ति बसै, छूट जाय दुख द्वंद ॥१॥

॥ इति अष्टक संपूर्ण ॥

❋ राम राम राम राम ❋

॥ रामः ॥

पद-राग भैरव ॥ पतित उधारन बिडद तुमारो,
अबकै राम पतितकूं त्यारो ॥टेर॥

भक्त विछलकूं भक्ति पियारी,
हम तो पतित पापकी क्यारी ॥१॥
अजामेल गणिकासी त्यारी,
उनसूं मैली नीति हमारी ॥२॥
कामी कपटी मै पणहारी,
लोभी लपटी विकल विकारी ॥३॥
तनमन अशुचि नहीं आचारी,
परपंची अरु परधनहारी ॥४॥
'गुण करतासूं अवगुणकारी,
अपणो अवगुण गुण विसतारी ॥५॥
रामचरण मन येही विचारी,
गुण सागर मै शरण तुमारी ॥६॥

पद ॥ जाग सयाना चार बिलावै,
श्वास गया पाछा नही आवै ॥टेर॥
नदीयां नीर गयो रह्यो रेलो,
आवै नाहि दरब कित पेलो ॥१॥
जरा संदेसो देग्व धहलो,
जाग भाग तज नींद नहेलो ॥२॥

पूंजी पाड होय मत गहलो,
सतगुरु शब्दां राम र
सतगुरु मेर टेर दे हेलो,
राम सुमर न्यारा होय
तज तन मन धन पंच विषय
जब तूं होय सतगुरुको
मुरलीराम शब्द कह छेलो,
यह अवसर यह दाव

राग ललत ॥ जाग जाग जाग जीव
स्वप्नमें संसार सार साच नाहि
काम दाम सुत बाम धाम नेह
याकै संग लाग लाग अनंत जी
बडे बडे राव राजा सुख भोग
जाग न जप्यो है राम माया रस
आलस निवार दूर भरम छांड
राम जन राम ध्याय रामशरण

पद ॥ राम राम राम कहरे मन मे
बेर बेर कहूं तोहि सुणत क्यूं न

जहिं मारग संत गया सोही मारग हेरे,
राम नाम उरमें धार जमकूं धका देरे ॥२॥
जगत बावराकी संग बावरा मत हैरे,
जन्म मरण माधोदास चरण शरण हेरे ॥३॥

पद ॥ राग बिलावल ॥

नरतन बाद न खोईये, सुमरण सुख लीजे,
विषीया रस सब त्यागकै, अमृत रस पीजे ॥टेर॥
खानपान रस भोगसे, बंध्यो संसारा।
इनसे सुरति चुकायकै, भजिये करतारा ॥१॥
मान बड़ाई कुकरी, दीजै दुरकारा।
आपाका गढ तोडके, निरपख रहो न्यारा ॥२॥
धीरज ध्यान संतोषमे, दीसै सुखसारा।
एता दृढ कर राखिये, दूजा छांड पसारा ॥३॥
रामचरण वै साधवा, जिनकी यह धारा।
भवसागरकूं पूठ दे, उतरै जन पारा ॥४॥
पद ॥ नरतन पाया जब भला, रसना रस पीजे।
राम राम कह लीजीये, दूजा तज दीजे ॥टेर॥
सतगुरुकी कर वंदगी, सत मनसा वाचा।
राम मंत्र जयही फुरै, परहर सब काचा ॥१॥
राम नाम निरयाणहै, ले बाण बुझावो।

अनंत जुगांका रूठड़ा, जाकूं बोल मनावो ॥२॥
राम राम मुख भाखिये, तज दीजै आंटा ।
अंतर प्रेम जगाईयां, हरि आवै न्हाठा ॥३॥
साच सील संतोष सत, हिरदयमें जागै ।
मुरली उनकूं राम रस, अति मीठा लागै ॥४॥

पद ॥ राग विहाग

जो नर राम नाम लिव लावै,
जाकूं कोई भय नहि व्यापै ।
विघ्न बिलै होय जावै ॥टेर॥
अगल बगलका छांड पसारा,
मन विश्वास उपावै ।
सर्वग्य सांई एकही जानै,
जो निर्भय गुण गावै ॥१॥
राहू केतु अरु प्रेत शनीश्वर,
मंगल नाहि दुखावै ।
सूर्ज सोम गुरु अरु बुधही,
शुक्र निकट नही आवै ॥२॥
भैरु बीर विजासण डाकण,
नाहर सिंह दूर रहावै ।
दिशा सूल अरु भद्रा जांणू,
सूण कसूण विलावै ॥३॥

मुष्ट दिष्ट अरु मोत अकाली,
जमभी शीश नमावै ।
सबलै शरणै निर्भय वासा,
भगवानदास जन गावै ॥४॥

राग चरच्चरी ॥ धन धन स्वामी रामचरणजी,
आछा पंथ वतायाहै ।
वेद सयुक्त जनाको मारग,
मुक्ति राह चलाया है ॥टेर॥
राम नाम तत्व तारक मंतर,
शेष महेश्वर ध्याया है ।
सनकादिक सुक नारद सुमरै,
सो सतगुरु सुमराया है ॥१॥
उत्तम सोज दई शुभ दायक,
शील संतोष सवाया है ।
धीरज दया वकस सत समता,
कुमता किरत उठाया है ॥२॥
ऋषभदेव दत्त भरथ कपिल ज्यूं,
रामचरण मुनिराया है ।
दे निज लछ करै गछ ध्रुरपद,
जांहांसे फेर न आया है ॥३॥

ऐसे सतगुरु रामचरणजी,
राम दयासे पाया है।
प्होकर दास लह्या शरण सुख,
हर्ष हर्ष गुण गाया है ॥४॥

राग जंजोठी ॥ मन चित रामचरणमे राखो,
रामचरण सुखदानी ॥टेर॥
हमसे पतित किये बहु पावन,
आवागमन मिटानी ॥१॥
होते मूढ गूढ कहा जानत,
तुम कीने तत्वज्ञानी ॥२॥
बायस ज्यूं बकते बहु बायक,
पलटाये मुख बानी ॥३॥
अमृत बैन राम रस भरीया,
राम समंध उचरानी ॥४॥
किसी बातमें कह कह गाऊ,
नही आवै परमानी ॥५॥
ये किरपा निज रामचरणकी,
परगट परहै जानी ॥६॥
रामचरणकी महमा भारी,
गावै वेद पुरानी ॥७॥

रामचरण तिहूं लोक उजागर,
संता जोग बखानी ॥८॥
गुरु परमेश्वर रामचरणजी,
आंन भरमना भानी ॥९॥
रामचरण होय किरपा कीनी,
रामजंन यह मानी ॥१०॥

पद ॥ रामचरण विन कोइ न जगतमें,
कर उन चरणोंकी सेवा ॥टेर॥
राम नाम तुमहीसे पायो,
गायो अति गुह्य भेवा ॥१॥
भवसागरके पार करणकूं,
नाम नाव तुम खेवा ॥२॥
आप अचाही अगम अगोचर,
मायाके नही लेवा ॥३॥
मुरलीराम राम भज भाई,
ये तेरा गुरुदेवा ॥४॥

पद ॥ बलिहारी गुरुदेव तुमारी,
भवसागरसे तारी ॥टेक॥
राम नामकी नावज सारी,
बैठाया नर नारी ॥१॥

पण को बिडदवान इक भारी,
धीर जंजीर जूं डारी ॥२॥
जत मत समता रतन भरयाजी,
किरपा पवन चलारी ॥३॥
सतगुरु आप करणके धारी,
ओघट घाटी टारी ॥४॥
तुल्है राम चरण उपकारी,
शरणै रख्यां उबारी ॥५॥

पद ॥ राम नाम ततसार जगतमे,
भज ले बारं बारा ॥टेर॥
बेर बेर तोहि सीख देतहूं,
समझै क्यूं न गिवारा ॥१॥
लोभ लहरकी नदी बहतहै,
लख चोरासी धारा ॥२॥
हलका हलका पार उतर गये,
पापी सहै शिर भारा ॥३॥
सुख संपत अरु दोलत द्वारे,
इनमे काहा तुमारा ॥४॥
कहै कबीर सुणो भाई साधो,
हरि भज उतरो पारा ॥५॥

।। धमाल ।।राग वसंत

भईया अैसो नगर में छाडूं नाहि,
जाके अनंत कोटि जन वसे है मांहि ।।टेर।।
जहां शिव सनकादिक शेष साध,
मुनि नारद सारद ध्रुव प्रहलाद ।
कमला ऊमा हनूमान,
जहां नेति नेति कहैं निगम ज्ञान ।।१।।
जहां ऋषभदेव जड भरत माहि,
तहां नव जोगेश्वर जनकराय ।
कपिलदेव अरु वालमीक,
जहां ध्यान धरै शुक अम्बरीष ।।२।।
जहां रामानंद नीमानंद नाम,
तहां माधवाचार्य विष्णु श्याम ।
ओर सिग्वा लीया संग साथ,
इन च्यारन पकड्यो सबको हाथ ।।३।।
जहां गोरग्व भरथरि गोपीचंद,
तहां नानक फरिंदा अरु वाजिंद ।
महमद दादू करि निवास,
जहां सहित एकादश हरिदास ।।४।।
अल्प अक्कल गिणती न आय,

या पदकी महिमा कही न जाय ।
अगमपुरी भरपूरि बास,
जहां घर घर आनंद सुख बिलास ॥५॥
जहां सब संतनको पाय शीत,
चरणां जळ रजसूं गयो है भीत ।
मैं संतदासको पनई दास,
राखो रामचरणकूं चरणां पास ॥६॥
धमाल ॥ नही छांडू बाबा राम नाम,
मेरे ओर पढणसे कूंण काम-
जंजाल जकरसूं कूंण काम ॥टेर॥
प्रहलाद पधारे पढण साल,
वाके संग सखा लिये बहोत बाल ।
कहारे पढावे पाडे ओर काम,
मेरी पाटीमे लिख दे राम नाम ॥१॥
कहै पण्डित तुम सुणो राय,
तेरो पुत्र बकतहै अपने भाय ।
मांड़् वो दे भजाण,
वो अजहु न माने गुरुकी कांण ॥२॥
केती बार समझायो जाय,
वो मानत नही मे पच्योहूं ध्याय ।

संगकै बालक दीये बिगार,
सब राम राम कह कह पुकार ॥३॥
सांडा मरका कह्यो जाय,
प्रहलाद बंधाये वेगि ध्याय।
राम कहणकी छांड बांण,
तोहि अबही छुडाऊं मेरो कह्यो मांन ॥४॥
कहारे डरावै पांडे बार बार,
जिन जल थल गिरको कीयो प्रहार।
मार डार भावे देह जार,
मै तो राम छांडू तो मेरा गुरुकूं गार ॥५॥
सब जोधा मिल लीयो लार,
वाकूं गिर परबतसूं दीयो डार।
तब धरती ऊठी ध्याय ध्याय,
प्रभू अपणा जनकी करी सहाय ॥६॥
एक धोस होरी कीयो भंग,
प्रहलाद गळासूं बांध संग।
जलती अग्निमें दीयो धकाय,
वाकूं राखणहारो राम राय ॥७॥
काढ खड्ग कोप्यो रिसाय,
तेरो राखणहारो मोह बताय।

खंभ फाड़ प्रगटे मुरार,
हरणाकुश मारयो नख बधार ॥८॥
आदि पुरुष देवान देव,
जिन भक्त हेत धरयो नृसिंह भेव।
कहै कबीर कोई लहै न पार,
प्रह्लाद उबारयो अनेक वार ॥९॥

॥ राग आसा सिन्धू ॥

राम राम प्रह्लाद उचारै,
होरी जर भई छाराहो।
जै जैकार भयो हरिजनकै,
राम विमुख मुख काराहो ॥टेर॥
साध समागम जहां अति आनंद,
रामभजन भरपूरी हो।
हरणाकुश होरीका संगी,
पड़त असुर मुख धूरी हो ॥१॥
विकल भया होरीकूं हेरै,
डार शीशमें छारा हो।
गाम गळी बाजारां माही,
फिट फिट करत पुकारा हो ॥२॥
भक्ति उथाप दासकै द्रोही,

ये च्रट व
रामचरण जुग च्यार
तोभी म

धमाल ॥ राम राम प्रह्ल
असुरन
हरणाकुसकी हाक
प्रेम मग
राजा सहित सभा
निसबा
राम रसायणका मत
कंवर कै
सांडा मर्का करत थं
राम ना
मेरो कह्यो सत्य कर
कोप वि
को तुमहो भूपाल क
चाद् क
राम स्नेही जीवन मे

मोमै तोमै खड़ग खंभमे,
सकल वियापी नेरो हो ॥४॥
रामचरण नरहर होय प्रगटे,
जनको कारज सारयो हो।
राम बिमुख भक्तनको द्रोही,
राक्षस मार विडारयो हो ॥५॥

पद ॥ राग मेवासो ॥

आज सखी गुरु कीयो चलावो,
यो दुख सह्यो न जावैगा।
छाती फाटै जीव लहकावै,
मन माया नही भावैगा ॥टेर॥
तालावेली लगी जीवमे,
मुरछ मोरछा खावैगा।
रामचरणजी जैसा सतगुरु,
अब कूंण फेर मिलावैगा ॥१॥
ओर दुख तो सब सहलेस्यूं,
यो दुख कहां समावैगा।
हिरदै नाभ कंठकै मांही,
छाती श्वासन मावैगा ॥२॥
सीच्या शीत चरणामृत केरा,
बालक ज्यूं बतलावैगा।

ऐसी हम नही जाणी सतगुरु,
कवर पदो लै जावैगा ॥३॥
नवलरामजी निज घर चाल्या,
सो तो दुख विसरावैगा ।
यो तो दुख आकरो चीतो,
कहवामे नही आवैगा ॥४॥
घर आगण आछो नही लागे,
वाघन ब्रह संतावैगा ।
दास सरूपा ब्रह विलंबी,
बोलत वाचन आवैगा ॥५॥

पद ॥ व्याकुळ जीव नही जक लागे,
गुरु विछडनकी वारीका ॥
किया चलावा सतगुरु स्वामी,
निजपद जाय मुरारीका ॥टेर॥
लाखों लोगनके सुखदाई,
अड़्यां ख्वड़्य हजारीका ।
सो नो सतगुरु धाम सिधाया,
दुख मेटण संसारीका ॥१॥
घर आंगणसे दोड्या करता,
दर्शन सांझ संवारीका ।

वा दर्शणकी पीक लगतहे,
कासूं करूं पुकारीका ॥२॥
गदगद होय उबकै छाती,
लोचन भर जल धारीका ।
समे होय गई जगतर माही,
रामचरण अवतारीका ॥३॥
रामचरणजी थां बिन बिलखत,
बोलुं बचन दुखारीका ।
दास सरुपां भाख सुणावे,
अबला जनम सुधारीका ॥४॥

॥ राग कनड़ी ॥

तूं भला चहै जो अपना,
राम नाम मुख जपना ॥टेर॥
ज्ञान विचार करो हरि सुमरण,
जगसूं लागन खपना ॥१॥
काम जु क्रोध लोभ मोह तृष्णा,
इनको सत्रु तकना ॥२॥
शील संतोष दया अरु समता,
इनकूं घटमे रखना ॥३॥
गगन मंडलमे अम्रृत भरीयो,

ध्यान लगाकर चकना ॥४॥
रामचरण कहै राम स्नेही,
पोहोकर घटमे रखना ॥५॥

पद ॥ तूं सोच अपना मनमें,
तुज चलणा थोडे दिनमे ॥टेर॥
रसनासूं हरि नाम न लीनो,
कथा सुणी नही श्रवणमे ॥१॥
निसद्यासुर ते यूंही खोयो,
लग जाय क्यून भजनमे ॥२॥
यो संसार ओसको मोती,
ढळक जाय पल छिनमे ॥३॥
ना कोई तेरा तूं न किसीका,
समज देख ले दिलमे ॥४॥
सदानंद गति नाहि भजन विन,
क्या घरमे क्या वनमे ॥५॥

लावणी ॥ श्री रामचरण महाराज,
लियो जिन कलिजुगमे अवतार ॥टेर॥

चौपाई ॥ कलिजुग घोर भयानक भारी ।
धर्म हीन हे बहु नर नारी ॥

ला० अरु धर्म धारणा ध्यान नही अधिकाई ।

इक पाप उपरै दृष्टि सबन की छाई॥
चा० यह मात पिताका धर्म, रखै नही कोई,
जगत सब झूठा।
साचै का आदर नाहि रामसें रूठा॥
दो० ऐसी करड़ी बखतमें,
श्री भगवत आज्ञा पाय।
भरतखंड परगट भया,
मेवाड़ देशके माहि॥
झे० रामावत संप्रदा भारी,
गूदड गुणवंत कहाई।
कर रामभजन सुखदाई,
जन संतदास शरणाई॥
॥टेर॥ कृपारामजी नाम, सन्त बरियाम,
जिनूकै शिष्य भये बहु त्यार ॥१॥
चौ० जनम लियो प्रभू सोड़ै आई।
बीजावरगी गोत कहाई॥
ला० यह शुक्लपक्ष कै चंद्र बढन जम लागै।
चोवीस वर्षकै भये पिता देह त्यागै॥
चा० फिर बडे भयहै आप, जपै हरि जाप,
नहि त्रय ताप, सुनो तुम बातै।

इक मात चरणकी सेव लगै मन मातै ॥

दो० एक दिवस स्वपनो भयो,
घहँ धार परवाह ।
स्वामी संत कृपालजी,
खेच लिया गह याह ॥

सो० तय स्वप्ना गया बिलाई,
वहां सन्त नही कोई साई ।
तम मनमें यह उपाई,
वहि सन्त दर्श करुं जाई ॥

॥टेर॥ अस कह चल दीये, दांतडे गये,
शरण आइ लिये, वस किये इंद्री तनमन सार॥२॥

चौ० कठण धृत वैराग्य करारा,
जाण्या सव झूठा संसारा ॥

ला० जिन एका एकी भंवर अजगरी धारी,
तज काम क्रोध अरु लोभ वासना टारी॥

चा० हे बेपरहाई संत, भजे हरि नित्य,
नही हे रत्त, कनक अरु नारी ।
श्री रामचरण महाराज आप सुखकारी ॥

दो० निर अभिमानी है सही,
नही जो त्रयविधि ताप ।

रामस्नेही छाप जो,
दीनी हरिनै आप ॥
झे० है राव रंक सम भाई, नही मेरा तेरा काई,
यह भिक्षा करकै पाई, निरगुण कंथा पहराई ॥
॥टेर॥ नहि किसीसे स्वाल, आपने हाल, तजी जग चाल,
जिनूंने भजन जानियो सार ॥३॥
चौ० भक्तिवान जिन शिष्य हजारा,
द्वादश तनमे मुख्य विचारा।
ला० सिख रामबलभ अरु रामसेवग जन गाई।
है रामप्रताप चेतनदास सुखदाई ॥
चा० कान्हड़ करणीवंत, द्वारका संत ओर भगवंत
रामजन छाई, ये देवादास दिलशुद्ध सदाई रहाई ॥
दो० मुरली तुलसीजन भये,
नवलरामजी जान।
ये द्वादस सिख बरणीया,
ओर हु अनंत बखान ॥
झे० ये परमहंस जन न्यारा, मूनी रु विदेही यारा।
यह ओर संत जन सारा,
गुरु रामचरण शिरदारा ॥

।।टेर।। नरनारी जो हजारा, शीलजन धारा,
गाम भीलाड़ा देशजन साहापुरा मेवाड़ ।।४।।
चौ॰ राम नामकी जहाज चलाई,
सुमरत जीव पार होइ जाई।।
ला॰ अेसे स्वामी आप अचाही जानो,
भये सिख साखा हरि इच्छा माही मानो ।।
चा॰ तहि वक्त में आप, जपै हरी जाप, ग्रस्त अरु
साधू, श्री रामचरण महाराज ब्रह्महै आदू।।
दो॰ इनके परचय जो भये, तिनकूं वरने नाहि,
ग्रथ जथार्थ वोधमें जगन्नाथ कहि गाय ।।
छ॰ स्वामी मेहूं तुमरो दासा,
हो दीन बन्धो सुखरासा ।
मोहि चरण कमलकी आशा,
प्रभु काटो जमकी पासा ।।
।।टेर।। ये सुखीरामका थाट, मेड वैराट, भक्तिका
थाट, आपहो मेरै शिर करतार ।।५।।

॥ राग कवाली ॥

प्रगटै रामचरण महाराज,
हरिकी भक्ति बधानै वालै । ।।टेर।।
सतरासैंरु छहंतर साल,
माहा सुदी चवदस अरु सनीवार ।

सोडा नगर देश ढूंढाड़,
वैश्य कुल दीप कहानैवाले
थै प्रभु जयपुर राज्य दीवान,
इक दिन सुते थे मध्यान।
स्वप्नमे बह नदी दरम्यान,
मिलै गुरु बांह समानै वाले
जागरु मनमे कियो विचार,
यो तो झूठो है संसार।
जिनको निकसत लगी न वार,
सबही त्याग करानै वाले
हेरत गये दांतडा गाम,
पाये सतगुरु कृपाराम।
जिनेके सिख्य भये बरीयाम,
गुरुका हुकम उठानै वाले
इक दिन करत रसोई खास,
कीडी निकसत भये उदास।
गुरुसे कीनी मुक्ति तलास,
बचन कह भरम मिटानै वाले
है शिष्य सब प्रपंचकी बात,

यूं कह दीये शीशपर हाथ,
　　दिशा संन्यास बनाने वालै　　॥६॥
जिनोने मुखसे अनुभव वाणी,
　　सवा छत्तीस हजार बखानी ।
द्वादस शिख भये निरवाणी,
　　राम रट राम समाने वालै　　॥७॥
जाको तन रह्यो वर्ष गुण्यासी,
　　इकती वर्ष रह ग्रहवासी ।
च्यार जुग महा विरक्त निरासी,
　　अनत जीव पार लगाने वालै　　॥८॥
अठारासें पचपन साल,
　　पंचमी वदि वैसाख गुरुवार ।
तन तज भये ब्रह्म निर्कार,
　　आप हरि धाम सधानै वालै　　॥९॥
परथम भीलेडो निज धाम,
　　उत्तम साहापुरा सुभ ग्राम ।
निश्चल खानाजाद गुलाम,
　　आप गुरु लाज निभाने वालै　　॥१०॥

पद ॥ राग लावणी ॥ तुम देखो जरा गम खायके,
　　गम खाना चीज वडी है　　॥टेर॥

गम खाई प्रहलाद पियारे,
असुर जतन बसि कर लिया सारे।
खंभ फाड़ हिरणाकुश मारे।
यजी नरसिंह रूप बणायकै॥
झटपटसे विप्ती हरी है ॥१॥

गम खाकै ध्रुव निकस्या बनमे।
करी तपस्या बालकपनमे।
लिपट रहै हरिके चरणनमे।
यजी रघुबर दर्श दिखायकै
दरवाजे ध्वजा टकी है ॥२॥

गम खाई सुग्रीव पियारे।
ऋषिमुक परवतसे भारे।
एक बाणसे बालि सिहारे।
यजी रघुबर निगा जचायकै।
साबत ना एक तड़ी है ॥३॥

भक्त अभीक्षणने गम खाई।
जब रावणने लात उठाई।
आखर राज दीयो रघुराई।
सबही असुर खपायकै।
गळ फूलन माल पड़ी है ॥४॥

गम ग्वाई पंडवाने
दुर्योधनकी भई
भीमसेन उठे यल
यजी मारी गदा
प्रभू आपही महर
गम वस्तु है वडी
समझेगा कोई सम
कहै सुखिराम गुरु
अजी अमृत प्याला
गम मोटी अमर

आरती ॥ इस विधि आरत
राम राम कहै सव
राम नाम जुग जुगमे
कलिजुग जगत तिरण
ओर धर्म कलिमे थक
राम नाम दिन दिन
राम कहत आये सव
माया ब्रह्म सकलको

॥ रामः ॥

श्री रामचंद्र कृपालु भजमन,
हरन भव भय दारुणम् ।
नवकंज लोचन कंज मुख कर,
कंज पद कंजारुणम् ॥
कंदर्प अगणित अमित छबि,
नवनील नीरद सुंदरम् ।
पटपीत मानहु तड़ित रुचिशुचि,
नौमि जनक सुतावरम् ॥
शिर मुकुट कुंडल तिलक चारु,
उदार अंग विभूषणम् ।
आजान भुज शर चापधर,
संग्रामजीत खर दूषणम् ॥
भज दीनबन्धु दिनेश दानव,
दलन दुष्ठ निकंदनम् ।
रघुनंद आनंद कंद कौशल,
चंद दशरथ नंदनम् ॥
इति वदित तुलसीदास शंकर,
शेष मुनि मन रंजनम् ।
मम हृदय कंज निवास कुरु,
कामादि खल दल गंजनम् ॥

## स्वामीजीश्री १०८ श्री रामचरणजी महाराजके
## * शिष्योंके नामकी यादी *

स्वा.बालकरामजी
,, उद्धवदासजी
*,, रामदासजी

---

महाराज भक्तरामजी
,, वृछभरामजी
,, फतैरामजी
,, रामसेवगजी
,, रामप्रतापजी
,, चैतनदासजी
,, कान्हड़दासजी
,, द्वारकादासजी
,, भगवानदासजी
,, रामजंनजी
,, नरोत्तमदासजी
,, देवादासजी
,, मुरलीरामजी
,, तुलछीदासजी
,, मुकन्ददासजी
,, उद्धवरामजी
,, दुल्हरामजी
,, हरिभक्तजी

म० गंगादासजी
,, रामसुखजी
,, अलखरामजी
,, रामरूपजी ३
,, शिवरामदासजी
,, उम्मेदरामजी २
,, श्यामदासजी
,, कृष्णदासजी
,, रामदासजी
,, कान्हड़दासजी
,, मनसारामजी
,, सेवादासजी
,, रामरूपजी २
,, सूरतरामजी
,, चत्रदासजी[३] ४
,, किसोरदासजी
,, बालकरामजी
,, नहचलरामजी
,, रामकिसोरजी
,, अचलदासजी २
,, जीवणदासजी

म० रत्नदासजी
,, कासीरामजी
,, मयारामजी ३
,, खेमदासजी
,, वैरागीरामजी
,, रामधनजी २
,, रामनिवासजी
,, इच्छारामजी
,, गोविंदरामजी४
,, रामसेवगजी
,, माधवदासजी
,, नराणदासजी
,, रामदासजी ३
,, शिवरामदासजी
,, छीतमदासजी
,, बिहारीदासजी
,, किशोरदासजी
,, रामप्रसादजी
,, जगरामदासजी३
,, रामसुखजी
,, उदयरामजी

'इनको काकाजी पदद,१गादीपति भये, २गादीपतिभये,३ ४मेसे१ गादीपतिभये

म०कुसालीरामजी३
,, नंदरामजी ३
,, दयारामजी ५
,, तोलारामजी
,, समरथरामजी
,, आतमारामजी४
,, जगन्नाथजी
,, मालुमदासजी
,, निरमलदासजी
,, मोहनदासजी
,, रामानंदजी
,, मनोरथदासजी
,, खम्यारामजी
,, मुक्तरामजी २
,, रामस्वरूपजी
,, रामकिर्तिजी
,, ब्रह्मदासजी
,, मंगलदासजी
,, मगनीरामजी
,, रमतारामजी
,, विश्वासीरामजी
,, चोकसरामजी
,, विनोदीरामजी

म०त्यागीरामजी
,, जेतरामजी २
,, जसरामजी २
,, रामलालजी २
,, रतीरामजी
,, रामकुस्यालजी
,, सुखदेवजी
,, सुखरामजी २
,,कल्याणदासजी४
,, अगरदासजी
,, करुणारामजी
,, गंगारामजी २
,, चरणदासजी २
,, मनोहरदासजी२
,, टीकमदासजी
,, गुलाबदासजी २
,, कीरतरामजी
,, निरगुणदासजी
,, भीषमदासजी
,, गंभीरदासजी
,, परतीतरामजी
,, रामविनोदजी
,, वकसीरामजी

म० हेमदासजी
,, हीरादासजी
,, नरहरीदासजी
,, फकीरदासजी
,, भाऊदासजी
,, हरिजनदासजी
,, राममालुमजी
,, ममोखीरामजी
,, सरूपरामजी
,, विजैरामजी
,, साधुरामजी
,, गरीबदासजी
,, रामरूपजी
,, गुलाबदासजी
,, जुगतरामजी
,, रामदासजी
,, रामकिशोरजी
,, रामगुमानजी
,, रूपरामजी

---

,, पोहोकरदासजी
नवलरामजी

प्रार्थना है कि लिखनेमे गळती होतो सर्व क्षमा करे, श्री म०के शिष्य तो हजारों हे मे मंद बुद्धिवाला केसे सर्व नाम लिख शकुं.

## प्रकाशितकी प्रार्थना

सो० नग्र साहपुरा जान, राम सनेही भेखहै।
मेवाड देश लेहु मान, रामनिवास जु धामहै ॥१॥
दो० प्रसिद्ध भये भूमंडपर, स्वामी रामचरण।
यह्रोन सिग्व साखा भये, जगमे त्यारण तिरण ॥२॥
विद्यमान आचार्य्य स्वामी निरभयराम।
प्रेम सहित जय बोलके, करों अनंत परणाम ॥३॥
अरेल ॥ स्वामीजी महाराज है निर्भयरामजी।
मन जीता महाराज आप निष्कामजी ॥
उनकी आज्ञा माहि दास यह रहत है।
परिहां जुग जुग जीवो सदा दास यह चहतहै ॥४॥
सवैया ॥ श्री निर्भयरामजी मो गुरुदेवके,
चर्णनकी हम हे शरणाई।
यहु तेज प्रकाशक मे रवि ज्यूं,
शशिके सम सीतलता उरमाही॥
गरवापण मे गिरी मेरु जिसे रु,
समुद्र जथा सो यथा गुण गाही।
मनवछत के फळ को प्रद अंदर,
देव नरु जिम शोभ सवाई ॥१॥
भवसागर सो दुख आगर है,
मधिनीर अपार भरयो चहुं च्याई।

ऊठत लहर गंभीर भरे गहरे,
भ्रम केर भंवर अथाही।
उत्तंग सु तृष्ण तरंगके संग बह्यो,
अब जात मे बूडत माही श्री निर्भय०॥२॥
त्रिये तापकी दाप तपै तनमे,
सोखन कीये जु अनंत उपाई।
कोई कहा बतावत कोई काहा गावत,
सो भ्रम मो मन भावत नाही।
ताहीते आप दया करकै,
अबतो निजदासको लहो बचाई श्रीनि०॥३॥
शेष समान बखानत ज्ञान,
कृतार्थ रूप सु जीवन काही।
सागरसे रतनागर ज्ञानके,
परम गुणागर है सुखदाई॥
प्रभंजन ज्यूं जळके मळ गंजन,
त्यो जिनकै भ्रम भंजनमाही श्री नि०॥४॥
दत्त समान महा अवधूत,
विदेह ज्यूं देह दिशा विसराई।
वेद पुरान बखान कहै,
परभेद लहेन रहे सकुचाई॥

शास्त्र विचित्र उचारतहै,
कहो कूंण कथै महिमा अधिकाई श्रीनि०॥५॥
बलमे बुद्धिमे गुण ज्ञानहू मे,
निज आनंदमे गलतान सदाई ।
कलिके अघघोर लखे चहू ओर,
तबै अवतार लियो हे तहांही ॥
बहूते जढ जंत अह अघवंतजे ।
तासकूं पार दीयेहै लगाई श्रीनि०॥६॥
बहु योनिनमे भ्रमते भ्रमते सु,
यह नरदेहकूं दुर्लभ पाई ।
च्यारूही खान महान लख्यो,
दुख कहा कहु सो कह्यो नही जाई ॥
अब तो प्रभू आय पदाम्बुजमे,
अलि ज्यूं मन मोर रहो ललचाई श्रीनि०॥७॥
अम्बुज नैन सो बाहु बिसालजु,
कंचन ज्यूं तन रूप सुहाई ।
दन्तन पांति सोहै बहु भात,
बिम्बा फल अधरनकी अरुणाई ॥
वाक्य प्रकास हरो भवत्रासजु,
माधूरता मुखकी मधुराई श्रीनि०॥८॥

छंद पद्धरी॥ महाराज पूरण ब्रह्म रूप,
मन बुद्धि पार अनभो स्वरूप ।
अति सान्ति दांत निष्काम आप,
अरू नही जिनूके त्रिविध ताप ॥
अति मधुर वचन सुन होय प्रीत,
गुरु त्रिगुणपार अरु मनोजीत ।
बहु देश पावन किये आप,
दे ज्ञान जिनों की हरीताप ॥
पुर साह्पुरा मेवाड़ मध्य,
महाराज विराजै हे प्रसिद्ध ।
श्री निर्भयराम महाराज नाम,
जग विदित यश गुण ज्ञान धाम ॥
इक राम नामकी लीयां टेक,
वैराग्यवान पूरण विवेक ।
द्रुढ आसण संयम लियां नित,
नहि कनक कामणी चित्तरत्त ॥
दातार आप दीनन दयाल,
अरु शरण जीव करहै निहाल ।
राजा प्रजा बहु झूकै जाय,
परवाह नही कछु लेस ताय ॥
भूपाल भूप अति पुज्यदेव,
रिध सिध सब जाकी करत सेव ।
सुण कथा मनोहर गंगधार,

यह जीव होत है निर्विकार ॥
महिमा अपार नही पार होय,
नही तोल माप आवै न कोय ।
श्री मुखसे स्वामी हुकम दीन,
मोह दास जानकर कृपा कीन ॥
दासानुदास दोऊ नैनूराम,
यह हाथ जोड करिहै प्रणाम ।
महाराज आपका हुकम पाय,
यह पंच ग्रंथ दीना छपाय ॥
यहुदास आपके सकल श्रेष्ट,
हम परम लघु अरु अति कनिष्ट ।
यह सक्ति हमारी नही नाथ,
कर कृपा आपही गहो हाथ ॥
यह नाम यथागुण आप दीन,
भय मेट मोह निर्भय जू कीन ।
गुरु निर्भय निर्भय रूप जान,
जाको जु कहा करहूं बखान ॥
अरु भूलचूक जो होय मोर,
सो क्षमा करो यह दास तोर ।
कटै अक्षर अरु मातहीन,
सो आप सुधारो प्रभू प्रवीन ॥
सब संतनसे जोडूं हाथ,
सब क्षमा करो मेहूं अनाथ ॥ ॥१३॥

सोरठा ॥चहू दिशि सदा आवाद,सहर बंबई जानजू।
समुद्र करतहै नाद, परम रम्य सब देशमे ॥१४॥
साधु नैनूराम, तहां सदा आनंद करै,
रामद्वारो धाम, नलबजारके पासहै ॥१५॥
मुरधर देश जु है सही, अति शुध भोमि विसाल।
स्वामीका परतापसे, रहतहुं सदा खुस्याल ॥१६॥
दोहा॥ संतचरण मति है सदा, दास जु नैनूराम।
गाम समदडी जानीये, रामद्वारो धाम ॥१७॥
परोपकारी जानिये, साधू ध्यानी राम
प्रश्नोत्तर प्रकाशके शब्द जू लिखे तमाम ॥१८॥
सब लिखता या ग्रंथमे तो होता बहु विस्तार।
समय देख फिर छापसूं, मेहू दास तुमार ॥१९॥
बडे विचक्षण वुद्धि वर, सदा स्नेह सुख नूर।
ललितरामजी मित्र मम, सब गुण है भरपूर ॥२०॥
उन्निसे बाणु सुगस, संवत फाल्गुण मास।
तिथि पाचम गुरुवार दिन,पूर्ण कियो सुखरास॥२१॥

